वर्ष 28 | चैत्र-वैशाख | अप्रैल-2023 | अंक 4 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2021-2023

मूल्य 10/- रुपये

मासिक प्रकाशन

आगमोद्धारक

प्रकाशन हर माह की 6 तारीख को

एक जन्मयो राज दुलारो दुनियानो तारणहारो
वर्धमान नुं नाम धरी ने प्रगट्यो तेज सितारो

आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नमः

श्री अभ्युदय फ ाउण्डेशन
उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक

डॉ.सुभाष जैन, उज्जैन

सम्पादकीय कार्यालय

डॉ.सुभाष जैन

46, सखीपुरा, उज्जैन-456001 (म.प्र.)

मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897

1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in

2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com

इन्दौर कार्यालय

प्रफुल्लकुमार जैन "पप्पू"

1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़

इन्दौर-452009 (म.प्र.)

5057087, 5057067

मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O. से श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, उज्जैन के नाम से सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी। - **डॉ.सुभाष जैन**

जयंतियां हमारे चित्त के दीए की बाती को बुहारती है और तन-मन से नई रोशनी को जन्म देती है। वे मन, चित्त और चेतना को निर्मल बनाती है, उन्हें नई शक्ति और ऊर्जा प्रदान करती है। महापुरुषों के पुण्य-स्मरण से व्यक्ति और समाज दोनों की चित्त-शुद्धि होती है।

दिव्य आर्शीवाददाता

प.पू.मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

मार्गदर्शक एवं प्रेरक

परम पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन

अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

जस्सत्थि मच्चुणा सक्खं, जस्स प्ऽत्थि पलायणं।
जो जाणइ न मरिस्सामि, सो हु कंखो सुए सिया॥

जिस मनुष्य की मृत्यु से मैत्री हो, जो उसके पंजे से भाग निकलने का सामर्थ्य रखता हो, जो नहीं मरुंगा, यह निश्चित रुप से जानता हो, वह आगामी कल का भरोसा कर सकता है। **- उत्तरा. सूत्र, 14.27**

पाथेय *सम्पूर्ण देह भौतिक सत्ता एक असीम आराधना में मेरी समस्त स्थूल सत्ता पसन्द करेगी घुल जाना एक असीम आराधना में और फिर उसमें से हो जाना पुनर्गठित, हे प्रभु-तुम इस जड़तत्व को स्पर्श करने आए हो, एक सर्वोच्च शक्ति एवं आनन्द के दूत बनकर हुए हो प्रकट इन धारणाओं का इसमें कर रहे हो सृजन, जिनसे सर्वागीण सिद्धि के स्वरुप का हो सकेगा हमें ज्ञान और फिर उसकी उपलब्धि के लिए किये जायेंगे सबल प्रयत्न। प्रभु अब जब की मेरी सत्ता को हो गया यह विश्वास कि मैंने हासिल कर लिया है तुम्हारा महान आज्ञा पत्र, तो तुम सहसा हो गए अन्तर्धान। यह समझाने हेतु कि यह सिर्फ एक आश्वासन था, एक संकेत था उस भावी महान उपलब्धि का जो हो सकती है, हस्तगत किन्तु यह हमारी कितनी बड़ी अक्षमता है कि हम तुम्हें पकड़नहीं रह सकते हे स्वामि, अपनी सर्व सामर्थ्य शक्ति का करो प्रयोग हम चाहे विजयी हो या ध्वस्त केवल चाहते हैं परम रुपान्तर की जय।*

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रुपये
आजीवन	1000/- रुपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रुपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रुपये
एक प्रति	10/- रुपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-28 चैत्र-वैशाख अप्रेल 2023 अंक-4

विषय सूची

1- शाश्वत संदेश, पाथेय	3
2- विषय सूची	4
3- श्री महावीर : एक सम्पूर्ण जीवनदर्शन (सम्पादकीय)- डॉ. सुभाष जैन, सच्ची साधना	5-6
4- पाप की सजा भारी-प. पू. आचार्य श्रीअरुणविजयजी म.सा. चिंतन, सच्ची विजय	7-9
5- चरम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामीजी	10
6- जीवन स्पर्शी प्रकाश : श्री भगवान महावीर स्वामीजी , सुख के लिये नुस्खा	11-14
7- चैत्र सुदी-13 (द्वि.) जन्म दिवस पर विशेषः- यह विश्वरत्नसागर है.... - डॉ. सुभाष जैन	15
8- अविनीत शिष्य दिव्य लक्ष्मी को भगाता है- शान्तिलाल सगरावत, धैर्य	16
9- सोच में आ रहा आध्यात्मिक परिवर्तन, ज्येष्ठ और श्रेष्ठ, धारणा	17-18
10-श्री सीमंधर स्वामी भगवान, श्री मोक्षिता श्रीजी म.सा.(कमला बहन)	19
11-24 वें तीर्थंकर भगवान 24 नामों से सुशोभित- श्रीमती प्रभा जैन	20
12-शुद्ध आहार हो तो बुद्धि निर्मल हो	21-22
13-उपासना और अध्यात्म के सागर वचन सिद्ध पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी महाराजा, संदेश, उपयोगो लक्षणम्	23-25
14-श्री महावीर भगवान-जीवन परिचय, विनय नम्रता है, निर्बलता नहीं....	26
15-अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ, शिवपुर तीर्थ न्यायालय-विवाद ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में सत्यावलोकन- ललित नाहटा	27-29
16-वर्गपहेली- 335 - जयंतीलाल जैन,रतलाम	30
17-ज्ञान गंगोत्री- 335-आ.प्रवर श्री मृदुरत्नसागरसूरीजी म.सा.	31
18-शासन-समाचार	32-41
19-हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण, सारे देश में आगमोद्धारक	42

संपादकीय

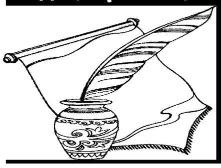

श्रीमहावीर: एक सम्पूर्ण जीवनदर्शन

आर्यावर्त की सभ्यता के क्षितिज पर अनेक धर्मो, संस्कृतियों तथा दार्शनिक अवधारणाओं के बहुआयामी बिम्ब उदित हुए हैं, जिन्होंने सम्पूर्ण मानवीय चेतना को समय-समय पर प्रबोधित किया है। इस परम्परा के एक उदार और उदात्त स्वरुप भगवान श्रीमहावीर है, जिन्होंने अपने अनूठे और मौलिक चिंतन से उद्भूत दिशाबोध द्वारा मानवीय सद्भाव की सूक्ष्म संवेदनाओं को स्फूरित किया। वे मानवीय सभ्यता और संस्कृति की विशाल परम्परा के विस्तृत क्षितिज पर उद्भूत, एक अद्भूत अद्वितीय और ज्योतिर्धर महापुरुष है, जो अनंत-असीम व्योमंडल से भी विराट, अगाध-अपार महासागर से भी विशाल और जिनसे विस्तीर्ण हो रही है। प्रेरणा की सहस्र-सहस्र, लक्ष-लक्ष, कोटि-कोटि प्रकाश की किरणें और कर रही हैं अभिषेक, पूरी मानवता का। भगवान श्रीमहावीर ने मानवतावादी की उस संस्कृति को प्रवृत्त किया, जो वर्धिष्णु है, सहिष्णु है और है जयिष्णु भी, जो पतितपावनी गंगा के प्रवाह की तरह निर्मल और शुचितापूर्ण होकर, कर्मनिष्ठता की सकल प्रतिष्ठापना से प्राप्त होने वाली संस्कार सम्पन्नता को प्राप्त करती है।

जनकेंद्रित संज्ञा संवेदना- भगवान श्रीमहावीर की संज्ञा-संवेदना जनकेंद्रित, जनोन्मुख, संप्रदायातीत, उदार और पृथक-पृथक विचारों का सम्मान करती है, रुचि और चिंतन की स्वतंत्रता को परिपोषित करती है तथा समता, स्वतंत्रता और अहिंसा के त्रिकोण की साधना से अद्भूत अन्तश्चैतन्य का भी सम्मान करती है। समन्वय, सहिष्णुता, परम्परा प्रीति और उपग्रह (सहयोग), वस्तु स्वातंत्र्य, अनेकान्तिक दृष्टिकोण, आत्मावलम्बन के ताने-बाने से उन्होंने उस अहिंसामूलक जनसंस्कृति के अभ्युदय का मार्ग प्रशस्त किया, जो इलहोक-परलोक के चिंतन से परे, जड़ता की इति कर, गति का उन्मेष करता है सहजता, स्वाभाविकता और निरंतरता के माध्यम से। प्रभु के दार्शनिक अवबोध ने यह स्पष्ट किया कि आध्यात्म, निष्क्रिय, जड़ एवं एकांगी नहीं है वह चैतन्य है, प्राणवन्त है, जीवन्त है, जो देश, काल एवं व्यक्तियों का उनकी विभिन्न भूमिकाओं में यथार्थ के धरातल पर संस्पर्श करता है। प्रभु ने अपने चिंतन में पहली बार आध्यात्मिक गरिमा के उत्कर्ष की प्रतिष्ठापना में सर्वागीण उदारता को पुष्पित-पल्लवित किया, जिससे अनेक संभावनाओं के सत्य-शास्त्र, वस्तु के एक आयामी/एक मुखी होने के स्थान पर बहुमुखी और नाना-आयामी स्वरुप के चिंतन ने, सार्थक और सर्जक संवाद की नई वर्णमाला रच कर मनुष्य की मनीषा की गौरगाथा रचने का साहस भी किया।

समत्व की नींव पर खालिस प्रेम की ऊंची इमारत- श्रीमहावीर-दिक्काल के विजेता तीर्थकर महावीर है, जो किसी एक क्षण/सिरे पर समाप्त नहीं हैं। वे अनुपम है, निर्बाध गति से प्रवाहमान हैं। श्रीमहावीर का जीवन, समता, स्वतंत्राता, अहिंसा के स्पंदनों को समेटे हुए एक सम्पूर्ण तथा प्राणवन्त आचार शास्त्र है। वे एक साथ प्रतिपादक भी बने और उदाहरण भी। श्रीमहावीर समत्व की नींव पर खड़ी प्रेम की मजबूत और ऊंची इमारत, जो लोकार्पित थी आम आदमी को। प्रभु एक परिपूर्ण जीवन-शास्त्र है प्रभु परिपक्व संपूर्ण और समेकित जीवनदर्शन है। वे आत्मा के शिल्पी हैं और युगपत चिंतनके प्रस्तोता बन सम्यक्त्व की साधना के सत्यान्वेषी चिंतक के रुप में एक अभूतपूर्व प्रकाशस्तम्भ के रुप में अविर्भूत हुए हैं। प्रभु ने लोकभाषा में, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य की साधना से, जीवन में व्याप्त समस्त कोणात्मकताओं को स्निग्धताओं में तब्दील किया, अणुव्रतों और महाव्रतों की साधना से, चेतना पर छाए अंधेरे को चीरकर सबको प्रकाश की नई जागीर दी। ज्ञान और कैवल्य के कुबेर श्रीमहावीर ने पंक्ति में खड़े अंतिम आदमी की स्वतंत्रता संप्राप्ति को अपना अभीष्ट बनाया। प्रभु एक सफल आत्मविज्ञानी थे, जिसने आत्मा के गूढ़ रहस्यों का वस्तुनिष्ठ परिज्ञान कर लिया था। प्रभु एक ऐसे सजग प्रयोगधर्मा थे जिसके जीवन की खुली वेधशाला से आत्मा के सूर्य और चन्द्रग्रहण तथा ताप-शीत का भली-भांति संधान होता था और आत्म नभ की पूरी खोजबीन की जा सकती है। जीवन स्वयं संदेश बना- जो भी उन्होंने कहा, उसे पहले जीवन में फलित देखा और जो कुछ भी किया,उसे तपश्चर्या और स्वाचरण की दिव्यध्वनि से विस्तीर्ण किया चहुं और सबके मंगल के निमित्त सारे अमंगलों को दूर कर दिया।

श्रीमहावीर ने अपनी देशना द्वारा इस बात पर बल दिया कि आवश्यक है तन का संवर्तन, मन का संयमन और धन का संनिधान। तन को श्रीमहावीर ने चाकर माना और चित्त की अदम्य शक्तियों के द्वारा मन की प्रतिकूलताओं के शोधन को, संयमन को प्रशस्त किया। आध्यात्मिक निर्मलता के इन आयामों को प्रभु ने मजबुत किया, अपनी कृतित्व की बोधगम्य भाषा से जियो और जीने दो की पारस्परिकता के साथ। प्रभु ने मनुज की मूर्च्छा तोड़ी और संकटग्रस्त मनुज को एक ही बीजमंत्र दिया कि मनुष्य स्वयं ही अपने भाग्य का निर्माता है, कोई बाहरी शक्ति उसकी नियामक नहीं। वर्द्धमान का चिंतन बड़ा साफ था-विश्व में सिर्फ दो ही सत्ताएं हैं, एक जड़, दूसरी चेतन। चेतन, यानी आत्मा की सत्ता, जो अनात्म (जड़) के अनावृत्त होने पर प्रकट होती है।

लोकशाही और अन्त्योदय के प्रतीक- जन-जन की पीड़ा का बोध करने वाले तथा संपूर्ण मानवता को अनन्त अन्तर्विरोधों के बीच अपने अहिंसक संस्पर्श से करुणा का अभय प्रदान करने वाले श्रीमहावीर संभवतः इतिहास के पहले लोकनायक हैं, जिन्होंने वीरत्व बोध से स्पंदित हो, निर्बाध निरापद और शान्ति से जीवन जीने की कला ही नहीं सिखाई प्रत्युत् प्राणीमात्र को आखिरी साँस तक स्वाधीन बने रहने की, बोलने की, काम करने की, जीने की और सोचने की स्वाधीनता का सम्यक् मार्ग सुझाया। मानवीय आस्था एवं नैतिक मूल्यों को सही गन्तव्य तक पहुंचाने के साथ-साथ लोकमन और लोक मानव का सम्पूर्णता में परिष्कार किया जिससे क्रूरता के स्थान पर करुणा, वैर के स्थान पर क्षमा और प्रतिकार के स्थान पर सहकार प्रतिष्ठित हो सकें।

भारतीय सांस्कृतिक चेतना के विशाल पटल पर, विभेदों और द्वित्वों से परे, सामरस्यमय, स्वातंत्र्यमय, प्रेममय जीवन जीने की कला के प्रस्तोता, भगवान श्रीमहावीर के उपदेशों की सत्यनिष्ठा गूंज, अनुगूंज बन कर प्राणी-मात्र भी अन्तर-अनुभूतियों को आज भी, अनेकांतिक स्वरों से स्पंदित कर रही है।***आईये! हम सब मिलकर इस पर जरा सोचें। परमात्मा का पुर्नजन्म कराने के लिये हम अपने आपको तैयार करें। प्रभु के सिद्धांतों को बैनर पर लिखवाने के साथ अगर हम हमारे जीवन में महावीर को पैदा कर सके तो जैन होना, महावीर को मानना सार्थक होगा।***

-डॉ.सुभाष जैन

सच्ची साधना

आज साधु तो बहुत है, पर साधना नहीं है। साधना के बिना साधुता कागज के फूलों की तरह है जिनमें बहुरंगी आकर्षण तो भरपूर है, लेकिन सुगंध का एकदम अभाव है। सब तरफ आज ऐसे कागज के फूल दिखाई देते हैं। इसी वजह से धर्म की प्रखरता-तेजस्विता मंद पड़गई है। साधना के अभाव में धर्म असंभव है।

धर्म की जड़ें साधना में हैं। साधना के अभाव में साधु का जीवन या तो मात्र अभिनय हो सकता है या फिर दमन हो सकता है। ये दोनों ही बातें शुभ नहीं है। तप-साधना का मिथ्या अभिनय पाखंड है, जबकि कोरा दमन और भी महाघातक है। उसमें संघर्ष की यातना तो है, पर उपलब्धि कुछ भी नहीं। जिसे दबाया जाता है, वह मरता नहीं, बल्कि और गहरी परतों में सरक जाता है। साधनाविहीन साधु को एक ओर वासना की पीड़ाएं सताती है, उनकी ज्वालाओं में उसका जीवन तपता-झुलसता रहता है, तृष्णा की दुष्पूर दौड़ उसे हर पल दुःख देती रहती है दूसरी ओर उसे दमन और आत्मा-उत्पीड़न की अग्निशिखाएं जलाती है। एक ओर कुआ है तो दूसरी ओर खाई। सच्ची साधना के बिना इन दोनों में से किसी एक में गिरना ही पड़ता है।

सच्ची साधना न तो भोग में है और न दमन में। यह तो आत्मजागरण में है। इन दोनों अतियों के द्वंद्व में से उबरने और परमेश्वर में स्वयं को विसर्जित करने में है। साधना वेश-विन्यास की विविधता या कौतुक भरे प्रदर्शन का नाम नहीं है। यह नर से नारायण बनने की अंतर्यात्रा है, जो पशु-भाव का दमन करके नहीं, उसे सर्वथा छोड़कर परमात्म-भाव में प्रतिष्ठित होने में ही सम्पन्न होती है।

सच्ची साधना का अर्थ किसी को पकड़ना नहीं है, वरन सारी पकड़ को एक साथ छोड़ना है। सारी अतियों से, सभी द्वंद्वों से ऊपर उठना-उबरना है। इस सच्ची साधना से जो अपनी चेतना की लौ को द्वंद्वों की आँधियों से मुक्त कर लेते हैं, वे उस कुंजी को पा लेते हैं, जिससे सत्य का द्वार खुलता है और तभी वह साधुता प्रकट होती है, जिसकी अलौकिक सुगंध से अनेकों दूसरी सुप्त और मुरझाई आत्माएं भी जाग्रत होकर मुस्कराने लगती हैं।

❊ सत्पुरुष के हर एक वाक्य में, हर एक शब्द में, अनंत आगम रहे हैं, यह बात कैसे होगी ?

पाप की सजा भारी...!

*प.पू.आचार्यश्री अरूणविजयजी म.सा.

गतांक से आगे...!

कर्मसत्ता का स्वरुप:-

कर्मसत्ता किसी मनुष्य या ईश्वर के आकार स्वरुप में नहीं है। यह तो कोई ईश्वर का दूसरा पर्यायवाची नाम है और न ही जगन्यिन्ता का दूसरा वैकल्पिक नाम है ? नहीं। यह न कोई ऊपर वैकुण्ठ में रहनेवाली या नरक में रहने वाली और न ही परमाधामी के रुप में रहनेवाली कोई सत्ता का भी नाम नहीं है। अतः कर्म सत्ता को परमाधामी भी न मानें। और न ही पुलिस रुप या जेलर या मनुष्य के रुप में, आकार विशेष वाली भी न मानें। ऐसी मानने पर बड़ी भारी भूल होगी। अब जबकि ईश्वरादि रुप में कर्म सत्ता नहीं है तो फिर कर्मसत्ता के पास माफी मांगना, मुझे माफ करो, मुझे क्षमा करो, यह भी उचित नहीं है। और कर्म सत्ता को कोई पाप लगने की कोई संभावना भी नहीं है। न ही यह नरक में रहती है या कर्म करने वाली आत्मा के साथ ही रहती है और वह भी यदि आत्मा कर्म प्रवृत्ति करता हो तो। नहीं तो नहीं। मोक्ष में स्थित सिद्धात्मा मुक्तात्मा कोई पुण्य पाप की प्रवृत्ति करती ही नहीं है अतः उन्हें कर्म लगने का कोई प्रश्न ही नहीं है। अतः कर्म सत्ता ऐसी कोई सर्वोपरि सत्ता नहीं है जो अपनी मनमानी कर सकें ? नहीं। मुक्तात्मा की बात तो छोड़ीए आज हम भी यदि कोई पाप न करें तो हमें भी कर्म नहीं लगेंगे और यदि कोई साधु-संत-महात्मा भी यदि इस प्रकार का पाप कर्म करेंगे तो निश्चित रुप में उन्हें भी पाप कर्म लगेगा अतः हमने जो भी पाप किए है, शुभ या अशुभ अच्छे या बुरे जो जो पुण्य या पाप की प्रवृत्ति की है उसके अनुसार कर्मबंध होगा ही। अतः कर्म सत्ता का जन्म कहां से हुआ है ? पाप प्रवृत्ति में से हुआ है। अतः जीव पाप करके इस कर्म सत्ता को जन्म देता है और पाप के प्रकार तो ये 18 ही है जिनका वर्णन गत विवेचनों में बहुत किया है।

अतः यहां पर स्पष्ट कार्य कारण भाव संबंध है। जन्म जनक भाव संबंध है। मिट्टी कारण है और घड़ा कार्य है। अग्नि जनक है और धूंआ जन्य है उसी तरह पाप प्रवृत्ति कारण है और कर्म जन्य है। पाप प्रवृत्ति कारण का मुख्य कर्त्ता जनक जीव स्वयं है अतः जीव जन्य कर्म है। अब मेरे द्वारा किये हुए पापों से उत्पन्न कर्म मेरा कर्म कहलाएगा। यह दूसरे को नहीं लगेगा। वह दूसरे का नहीं बनेगा और दूसरों के निमित्त भी यदि पाप किया हो और कर्म लगा हो तो वह भी जीव को खुद को तो भुगतना ही पड़ता है। ठीक ही कहा है कि:-

पुरुषः कुरुते पापं बन्धु निमित्तं वपुर्निमित्तं वा।
वेदयते तत्सर्व नरकादी पुनरसावेकः ।।

सगे-संबंधी बंधु वर्गादि के निमित्त या अपने ही शरीर के निमित्त कारण से जिस किसी भी जीव ने जिनके निमित्त पापकर्म बांधे हो, लेकिन उन सभी कर्मों की सजा भोगने के समय वह अकेला ही फल भोगता है, दुःख पाता है। अतः हमारे सुख-दुःख का कर्त्ता हम स्वयं ही है। कहा है किः-

जानामि पापं न च मे निवृत्तिर्जानामि पुण्यं नच में प्रवृत्ति।
केनापि भूतेन हृदि स्थितेन, व्यादिश्यते यत्तदहं करोमि।।

दुर्योधन महाभारत में उपरोक्त श्लोक बोलते हुए कह रहा है कि- मैं पाप को जानता हूं फिर भी पाप से मेरी निवृत्ति नहीं होती है और पुण्य कार्य भी मैं जानता हूं फिर भी उसमें मेरी प्रवृत्ति नहीं होती है। ऐसा लगता है कि हृदय में अर्थात् शरीर में रहे हुए किसी के द्वारा जब जो कराया जाता है वह मैं करता हूं। महाभारत में उन्मत पात्र दुर्योधन सिर्फ आत्मतुष्टि प्रमाण मानने वाला अन्य किसी आत्मा आदि तत्व को नहीं मानता है। वहां ''देव'' शब्द का प्रयोग किया गया है। ''केनापि देवेन'' पाठ है। मैं ही देव हूं अर्थात् पुण्य में प्रवृत्ति और पाप में निवृत्ति नहीं कर सकता हूं। यहां पर चार्वाक नास्तिकों का मत ले तो देहात्मवादी चार्वाक नास्तिकों का कहना है कि- पुण्य-पाप की प्रवृत्ति निवृत्ति नहीं होती है उसमें शरीर यही आत्मा है। पंचभूतात्मक आत्मा को मानने वाले चार्वाक कहेंगे कि अंदर रहे हुए किसी भूत की आज्ञानुसार वह जो कराता है वह मैं करता हूं लेकिन यह पक्ष भी तो सही नहीं बैठेगा। चूंकि जब शरीर को ही आत्मा मान लिया और वही पंचभूतात्मक है तो फिर शरीरातिरिक्त अर्थात् आत्मातिरिक्त अन्य कौन हुआ जो अंदर रहकर कुछ कराता है ? नहीं कोई अलग अदृष्ट सत्ता तो चार्वाक वैसे भी मानते ही नहीं है फिर प्रश्न ही कहां रहा ?

अतः कर्मसत्ता का अर्थ बैठाकर कहें तो स्पष्टऔर स्वच्छ अर्थ बैठेगा कि- पुण्यतत्व मैं जानता हूं फिर भी प्रवृत्ति नहीं होती और पापतत्व भी मैं जानता हूं फिर भी पाप से मैं निवृत्त नहीं हो रहा हूं चूंकि अंदर रहा हुआ कोई तत्व (कर्म तत्व)

कर्मसत्ता जो कराती है जैसा कराती है, तदनुसार मैं करता हूं। अतः कर्म सत्ता प्रबल तत्व है।

किये हुए पाप कर्म की सजा देने का काम-कर्मसत्ता का:-

कर्मसत्ता का संचालक और नियन्ता कोई ऊपर ईश्वर नहीं बैठा है। एकमात्र जीव स्वयं अपनी राग-द्वेष की वृत्ति अनुसार पुण्य-पाप की वृत्ति के अनुसार पुण्य-पाप की प्रवृत्ति करता है तदनुसार उसे कम लगते हैं। जैसे लोह चुंबक में चुंबकीय शक्ति है और वह बाहरी लोहकणों को खिंचकर अपने साथ जोड़देता है। उसी तरह आत्मा में पड़ी हुई राग-द्वेष की वृत्ति के कारण जब भी आंदोलन प्रारंभ होते है तब जीवात्मा बाहरी आकाश क्षेत्र से कार्मण वर्गणा के जड़ पुद्‌गल परमाणुओं का जत्था खिंचती है और अपने हेतु अनुसार उसे आत्मा के साथ एक रस करके बांधती है। जैसे दूध-पानी मिलकर एक मय हो जाते हैं, या अग्नि और लोहा मिलकर एकमय हो जाते है उसी तरह आत्मा और कर्म एकरस हो जाते हैं। तब वे कम की संज्ञा पाते हैं। अतः इसमें यह स्पष्ट हो गया कि कर्म जड़ तत्व है। सचेतन तत्व है और आत्मा ने ही खिंचकर कर्म बनाए हैं। अब उनमें-आर्त-रौद्र-ध्यान के, कषाय के और मन-वचन-काया के के शुभाशुभ योग और लेश्यानुसार अध्यवसाय के प्रमाण में जैसी जिसकी मात्रा होगी वैसा कर्म बंध होगा और जैसी तथा जितनी कषाय की मात्रा होगी वैसी-कर्म बंध की कम-ज्यादा स्थिति (Time Limite) होगी। जैसे आर.सी.सी. का मकान बांधते समय सीमेंट कितने प्रतिशत है ? कितने प्रमाण में है ? उसके आधार पर उस खंभे का (आयुष्य) अवधिकाल भी रहेगा अर्थात् वहां तक वह टिकेगा। और फिर अन्त में वह बिखर जायेगा, नष्ट हो जायेगा। उसी तरह सीमेंट अर्थात कार्मणा वर्गणा के जड़पुद्‌गल परमाणुओं का जत्था और पानी की जगह-अध्यावसायों-लेश्याओं की, कषायादि की तातमता अनुसार रस, इससे आत्मा के साथ एक रस बनकर बंधे हुए कर्म (जो कि जड़है) अपनी काल-अवधि (Time Limit) स्थिति बनाकर आत्मा केसाथ चिपके रहेंगे। बंधे रहेंगे और शराब पीने के बाद जैसे थोड़ी देर में नशा चढ़ने लगता है वैसे ही कर्म के बंध होने के बाद कुछ निर्धारित काल मर्यादा के अनुसार स्थितिबंध में पड़े हुए कर्म अपने-अपने समय पर उदय मेंआकर असर करेंगे अपना प्रभाव बतायेंगे अर्थात् अच्छी-बूरी असर करेंगे।

आप यह भी नहीं कह सकते है कि- जड़पदार्थ जीव पर कोई असर नहीं करता है ? ऐसा भी नहीं होता है। ब्राह्मों के सेवन से बुद्धि-स्मृति की क्षमता बढ़ती है और मदिरा (शराब) पान से नशा चढ़ता है और शराबी अट-संट बोलता है। तो क्या ये जड़द्रव्य की चेतन आत्मा पर असर-प्रभाव नहीं है ? जरुर है। वैसे ही जैसे कर्म बांधे है वैसे ही वे कर्म अपने समय पर उदय में आकर सुखी-दुःखी करते है। जैसे वीडीयो में एक कैसेट घूम रही है और उसके कारण जो दृश्य स्क्रीन पर आ रहा है तथा जो ध्वनि भी आ रही है, सुनने वाले ने सुना, और दृष्टि से देखा, तो कोई असर हुई कि नहीं ? आप एक दृश्य देखकर हंसे और एक दृश्य देखकर रोए। एक दृश्य में चिल्लाए। तो ये असर आप पर क्यों हुई ? जबकि आप भी जानते ही है कि-वीडियो तो जड़ ही है। ध्वनि-दृश्य सब जड़ है। अब आपको सहना-रोना क्यों आता है ? अतः यह स्वीकारना ही पड़ेगा कि जब पदार्थ की, जड़ निमित्त की असर आत्मा पर अवश्य होती ही है। जिस तरह से कैसेट घूमती जाती है-फिरती जाती है और एक-एक दृश्य अच्छे-बुरे के सामने आते जाते है और उसे देखने-सुनने वाले के ऊपर अच्छा-बूरा, सुख-दुःख, हंसने-रोने का प्रभाव डालती है। व्यक्ति पर कुछ असर करती है। उसी तरह कर्म जड़ होते हुए भी अपने समय पर उदय में आकर अच्छी-बुरी, सुख-दुःख की असर दिखाते है। हंसाने-मजा कराने आनन्द कराने-अर्थात् सुखी कराने का काम पुण्य कर्म के आभारी है और पाप कर्म के विभाग में दुःखी कराने का, रुलाने का काम है। अतः आप कर्म को ही उदय से उस प्रकार की स्थिति निर्माण होती है। यही सजा है। सजा को ही फल कहते है। अच्छे का फल अच्छा और बुरे का फल बुरा ही मिलता है। यह निर्विवाद-निःसंदेह सत्य ही है। परीक्षा के समय उत्तर-पेपर सही लिखा है, बिल्कुल बरोबर ही लिखा है तो दुनिया मेंआपको फैल करने को किसी की ताकत नहीं है। आप जरुर पास होंगे इसमें शंका ही नहीं है परन्तु यदि आपने उटपटांग कुछ-का कुछ ही लिखा है, उल्टा विपरीत ही लिखा है तो आप जरुर फैल होंगे। अतः आपका पास-होना या फेल होना किसी अन्य के हाथ में नहीं है परन्तु आपके हाथ में है। उसी तरह आपका दुःखी होना सा सुखी होना किसी अन्य के हाथ में नहीं है। आपके खुद के ही हाथ में है। जैसा पेपर लिखा है वैसा ही रिजल्ट आया है उसी तरह जैसे कर्म बांधे है वैसा ही सुख-दुःख का फल मिला है। सुख प्राप्ति का फल पुण्य कर्म के

कारण था, जो कि शुभ अच्छे कर्म थे और दुःख का फल पाप कर्म के ऊपर आधारित है। चूंकि पाप कर्म अशुभ है। अशुभ रीत से, पाप प्रवृत्ति से बंधे हुए कर्म थे इसलिए अशुभ थे और वह पाप प्रवृत्ति 18 की ही थी। उन 18 प्रकार की प्राणातिपात-हिंसा-झूठ-चोरी-मैथुन सेवन व्यभिचार-दुराचार, महापरिग्रह आदि जो अब तक आगे वर्णन किया गया है वे 18 प्रकार ही पाप की मुख्य जातियां थी और उनके ही सेवन से जीवों ने जो पाप कर्म उपार्जन किया है उसके उदय में आने से तो अशुभ फल-दुःख ही मिलेगा। यह तो कैसे हो सकता है कि जीव पाप करें और सुखी बने ? नहीं संभव ही नहीं है।

अच्छे-बुरे मानसिक परिणाम (विचार) को अध्याव साय कहते हैं, क्रोधादि-4 कषाय, मन-वचन-काया ये 3 योग और कृष्ण-नील आदि 6 लेश्याएं और आर्त-रौद्र-धर्मादि 4 ध्यान। अतः कर्म की वृत्ति और प्रवृत्ति ये कर्मबंध में कारण है। अध्यवसाय अच्छे होंगे तो शुभकर्म का बंध होगा और अशुभ खराब होंगे तो कर्मबंध खराब-अशुभ पापकर्म का बंध होगा।

यदि अध्यवसाय-परिणाम धारा अशुभ-खराब हो, क्रोधादि चारों कषाय अप्रशस्त भाव के खराब हो, मन-वचन-काया के योग की प्रवृत्ति भी पापाश्रव से भरी हुई अशुभ हो और विचारों की तरतमता में यदि लेश्या कृष्ण-नील-कापोत की खराब हो, हल्की विचारधारा हो और आर्त-रौद्र ध्यान के परिणाम हो, अर्थात् आर्त-ध्यान में चिंताजनक विचार हो, और रौद्र ध्यान में और भी खराब हिंसाजनक क्रूर विचार हो तो समझिए ये सभी पापकर्म बंधाने में सहायक कर्म है। इसी तरह यदि सभी निमित्त शुभ हो तो शुभ-पुण्य कर्म का उदय जीवों को सुखदायी-आनन्ददायी होता है अतः पुण्य का फल तो सभी को पसंद है, प्रिय है परन्तु आश्चर्य इस बात का है कि पुण्य करना बहुत कम पसंद करते है। पाप करके सुखी बनना चाहते है यह कैसे संभव हो सकता है ? मैं भले ही किसी का भला न करुं परन्तु दूसरा तो मुझे सुखी ही करें। यह उल्टी गंगा क्या कभी चल सकती है ? नहीं संभव ही नहीं है व ऐसी मान्यता ही गलत है। अतः पाप प्रवृत्ति करने पर पापकर्म के बंध होने से उसके उदय होने पर उन उन (कर्मो की) पापों की सजा जीव को मिलेगी। **(आगे और भी है...!)**

-: चिंतन :-

✻ वस्तु गुम हो गई है इसका अफ्सोस है मगर समय खो गया उसका अफ्सोस नहीं है।

✻ हाल के बाहर रखी चप्पल की चिंता बहुत की अब मन के अंदर मौजूद चंचलता को करने की चिंता करें।

✻ गाड़ी को छाया में रखने वाले लोग अपने बच्चों को देव-गुरु की छत्रछाया में नहीं रखते....है ना आश्चर्य ?

✻ फोटो खींचने में तो सिर्फ 1 मिनिट लगता है मगर इमेज बनाने में पूरी जिन्दगी बीत जाती है।

✻ अंधेरे चारों तरफ सायं-सायं करने लगे। चराग, हाथ उठाकर दुआं करने लगे।

सलीका जिन को सीखाया था चलने का हमने।

आज वो लोग हमें दाएं-बाएं करने लगे।

✻ वो आता करें तो शुक्र उसका न दे तो मलाल नहीं।

मेरे प्रभु के फैसले कमाल है उन फैसलों पर सवाल नहीं है।

सच्ची विजय:- *अनन्तकाल से संसार के योद्धाओं की तलवारें विजय के पथ पर खनखना रही है परन्तु विजय कहां ? वह आज भी स्वप्न है। विजय किस पर ? शरीर पर, या आत्मा पर ? विजय किस से ? तलवार के जोर से या प्रेम के बल पर ? जिस विजय और वीरता की पृष्ठभूमि में हृदय न हो, प्रेम न हो, आत्मा न हो, विजित का भी हित न हो, वह विजय नहीं, वीरता नहीं, बर्बरता है। सच्ची विजय वहीं है, जिसमें रक्त की एक भी बून्द न बहे, जिसमें विजेता के हृदय में अहंकार की और विजित के हृदय में पराजय एवं घृणा की भावना उत्पन्न न हो, जिसमें विजेता की आकांक्षा विजित की अधिक से अधिक सेवा में हो और विजित की आकांक्षा विजेता को अपने हृदय के सिंहासन पर विराजमान कर देने में हो। यह विजय विजेता और विजित- दोनों का ` ऊंचा उठाती है और दोनों को महान बनाती है।*

चरम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी जी

च्यवन कल्याणकः- आषाढ़ सुदी-6

विमानः- प्राणत देवलोक से आए

माता एवं पिताः- वैशाली नृप ''सिद्धार्थ'' महारानी ''त्रिशला''

लांछनः- केशरीसिंह

जन्म स्थानः- बिहार प्रांत में स्थित श्री क्षत्रियकुण्ड (लछवाड़ा)

जन्म कल्याणकः- चैत्र शुक्ला-13 ईसा मसीह के 599 वर्ष पूर्व

देह वर्णः- कंचनमय

इन्द्र द्वाराः- राजकुमार ''महावीर'' नाम से अलंकृत

भाई-बहनः- राजकुमार ''नंदीवर्धन'' एवं बहन ''सुदर्शना''

विवाहः- नृप समरवीर की राजकुमारी ''यशोदा'' के साथ

पुत्री का नामः- ''प्रियदर्शना'' (अनवज्ञा) एवं जमाता जमाली

वर्षीदानः- प्रतिदिन एक करोड़ आठ लाख स्वर्ण मुद्रा। कुल 388 करोड़ 80 लाख स्वर्ण मुद्रा

दीक्षा कल्याणकः- मृगसर वदी-10, तीस वर्ष की तरुणाई में समस्त राज्य के वैभव में समस्त राज्य का वैभव परित्याग करके अकिंचन भिक्षु बने।

तपाराधनाः- साढ़े बारह वर्षो में केवल 11 माह और 19 दिन आहार ग्रहण किया।

कैवल्योपति :- (कल्याणक) ऋजुबालका सरिता के किनारे छट्टम तप के अंतर्गत गोदाहासन में स्थित वैशाख सुदी-10

प्रथम धर्मोपदेशः- पावापुरी के प्रथम शिष्य एवं पवित्र प्रांगण में

शिष्य :- इन्द्रभूति (गौतम स्वामी) और राजकन्या चंदनबाला

विशेषोपलब्धिः- एक ही दिन में पावापुरी नगरी के प्रांगण में 4400 मुमुक्षुओं को आर्हता धर्म में दीक्षित करना।

शिष्य परिवारः- गौतम (इन्द्रभूति) प्रमुख 14000 जिनमें चारों वर्षा के मुमुक्षु शिष्य के रुप में सम्मिलित

शिष्या परिवारः- आर्या, चन्दनबाला आदि 36000 जिनमें सभी वर्ग की विदुषी सन्नारियां एवं बालिकाएं थी।

संघ के संचालकः- इन्द्रभूति, अग्निभूति, वायुभूति, व्यक्तिभूति

गणधर प्रमुखः- सुधर्मास्वामी, मंडित पुत्र, मौर्य पुत्र, अकंपित, अचल भ्रात, मेतार्य पुत्र, प्रभास स्वामी

श्राविका समाजः- जयंती, सुलसा, रेवती आदि तीन लाख

आयुष्यः- बहत्तर (72) वर्ष

सिद्धांतः- अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य अपरिगृह एवं अनेकांत सिद्धांत

धर्म का विस्तारः- बंगाल, बिहार, आसाम, उत्तरप्रदेश मध्यप्रदेश, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, महाराष्ट्र, दक्षिण भारत काश्मीर, गुजरात, आदि प्रांतों में।

निर्वाण स्थलः- हस्तिपाल नरेश की राजधानी पावापुरी में ईस्वी सन् से 527 वर्ष पूर्व तथा विक्रम संवत् से 470 वर्ष पूर्व कार्तिक वदी अमावस्या की अर्द्धरात्रि में प्रभु महावीर पार्थिव देह का त्याग कर निर्वाण को प्राप्त हुए।

✲ भगवान को समर्पण किये बिना इस काल में जीव का देहाभिमान टलना संभवित नहीं है।

जीवन स्पर्शी प्रकाश :श्री भगवान महावीर स्वामी जी

श्री महावीर जन्म कल्याण आने वाला है । जयंतियां हमारे चित्त के दीए बाती को बुहारती है और तन-मन में नई रोशनी को जन्म देती है । वे मन, चित्त और चेतना को निर्मल बनाती है, उन्हें नई शक्ति और ऊर्जा प्रदान करती हैं। महापुरुषों के पुण्य-स्मरण से व्यक्ति और समाज दोनों की चित्त-शुद्धि होती है।

भगवान श्रीमहावीर का जन्म आज से 2600 सौ वर्ष पूर्व बिहार में राजा सिद्धार्थ के घर रानी त्रिशला की भाग्य शालिनी कोख से हुआ था । बाल्यावस्था से ही वे विरक्त थे । उनके मन में कोई आसक्ति न थी । वे किसी पार्थिव राज्य की अपेक्षा आत्मा की स्वाधीन सत्ता की खोज में लग गये। उन्होंने तृष्णाओं को जीता, धार्मिक अंधविश्वासों की चुनौती दी और धर्म को एक स्वस्थ/तर्कसंगत पृष्ठभूमि देने का प्रयत्न किया। उन्होंने चाहा कि प्राणी मात्र का कल्याण हो। सब एक स्वाधीन, स्वाभाविक जीवन जीएं। कोई किसी के जीवन में हस्तक्षेप न करें। सब एक दूसरे को समझें। एक दूसरे की अस्मिता का सम्मान करें। सबमें लोक के जीवमात्र के प्रति सम्मान और समत्व की भावना का नवान्मेष हो। उन्होंने रेवरेंस फ ॉर लाइफ पर बल दिया । उनकी वाणी में करुणा और सहअस्तित्व का महाराव गूंजा। उन्होंने कहा- सब साथ रहो, सुख से रहो और चरम सत्य को खोजो।

उन्होंने अपने युग को सोचने का एक विशिष्ट तेवर दिया। कहा- मत मानो कि तुम जो कह रहे हो अंतिम है। शब्द की सीमा है। शब्द एक समय में सारे अर्थ प्रकट करने में असमर्थ है । उसकी विवशता को समझो । लड़ो मत । जूझो मत । जानो । खोजो । अर्थ की गहराईयों में उतरो। लोक के तमाम अस्तित्व बहु आयामी हैं। शब्द एक समय में सिर्फ एक आयाम को प्रकट कर सकता है। जानो कि सत्य की खोज का काम सरल नहीं है। सत्य की खोज के अनेक पहलू है। किसी भी वस्तु के बहुमुखीन व्यक्तित्व तक सही, अचूक पहुंच बनाने के लिये स्याद्वाद और अनेकान्त का आश्रय लेना जरुरी है, अतः वस्तु को उत्तरोत्तर खोजो । दूसरों की सुनो। अपनी कहो। अड़ो मत। गलत होने पर मानो कि तुम गलत हो। रुको मत। चलते रहो। प्रमाद मत करो। प्रमादी की मुट्ठियां सदैव खाली रहती हैं। सत्य उसकी हथैली पर से हर बार फिसल जाता है। सत्य की खोज यात्रा में प्रमाद के लिए कोई स्थान नहीं है।

भगवान श्रीमहावीर ने कहा- जैसा बीज, वैसा वृक्ष। यह प्रकृति का अकाट्य-अटल नियम है, इसे जानो, जानो कि हिंसा और नफरत बोकर हम अहिंसा ओर प्रीति की फसल नहीं काट सकते। अहिंसा और मैत्री की हरी-भरी फसलों के लिए हमें सहअस्तित्व के रहस्य को जानना होगा, जानना होगा कि जहां भी कोई धड़कन इस विश्व में है, वह प्रणम्य और पूज्य है। हम उसका आदर करें। उसे धड़कने का मौका दें। खून बहाकर हम दूध की नदियां नहीं बह सकते। खून में से जब भी आएगा, खून आएगा। नफरत में से नफरत ही आएगी, प्यार नहीं आ सकता। महावीर के इस मंत्र-सूत्र को यदि हम आज भारत और विश्व में प्रवर्तित करें तो सर्वत्र शांति और भाईचारे का शंखघोष हो सकता है।

श्रीमहावीर ने भगवान की परम्परा को आगे बढ़ाया। वे जैनों के चौबीसवें तीर्थकर हैं। भगवान श्रीआदिनाथ प्रथम तीर्थकर है। उन्होंने कृषित्व और ऋषित्व अर्थात बीज और विचार को प्रवर्तित किया। वस्तुतः कृषि हिंसा से अहिंसा की ओर आने का सर्वप्रथम मानवीय चरण है। बीज का मर्म है- **एकोऽहम् बहुस्याम**-मैं एक हूं, अनेक हो जाऊं। बीज में लहलहाती फसल की अनुभूति एक बहुत बड़ी सांस्कृतिक/आर्थिक उपलब्धि थी। भगवान श्रीआदिनाथ ने अंक-अक्षर/कला-शिल्प भी मनुष्य को दिए। कुल मिलाकर उन्होंने मानव-संस्कृति को प्रगति की डगर पर संपूर्ण वेग और वैभव में ला खड़ा किया। भगवान श्रीमहावीर ने उनकी सरणि को अटूट रखा और अहिंसा को नव गौरव प्रदान किया।

भगवान श्रीऋषभदेव के पुत्र बाहुबली ने जिस अयुद्ध-दर्शन का सूत्रपाठ किया, भगवान श्रीमहावीर ने उसे पूरे बल से, मनुष्य के भीतर मोड़ दिया। अयुद्ध-दर्शन अहिंसा सर्वोत्तम व्यावहारिक रुप है। अधिकांश युद्ध व्यक्तिगत रागद्वेष के

परिणाम होते हैं। भगवान बाहुबली ने कहा कि- व्यक्तिगत राग-द्वेष का समाजीकरण मत करो। युद्ध की लपटों में मत झोंको। व्यक्तियों को निबटने दो। समूह को सिर्फ साक्षी बनाओ। उनका अयुद्ध-दर्शन अहिंसामूलक था, अतः उसमें से मानव-मंगल का अभ्युदय हुआ।

भगवान श्रीमहावीर ने कहा- जैसा बीज, वैसा वृक्ष। यह प्रकृति का अकाट्य-अटल नियम है, इसे जानो। जानो कि हिंसा और नफरत बोकर हम अहिंसा और प्रीति की फसल नहीं काट सकते। अहिंसा और मैत्री की हरी-भरी फसलों के लिए हमें सहअस्तित्व के रहस्य का जानना होगा, जानना होगा कि जहां भी कोई धड़कन इस विश्व में है, वह प्रणम्य और पूज्य है। हम उसका आदर करें। उसे धड़कने का मौका दें। खून बहाकर हम दूध की नदियां नहीं बहा सकते। खून में से जब भी आएगा, खून ही आएगा। नफरत में से नफरत ही आएगी, प्यार नहीं आ सकता। श्रीमहावीर के इस मंत्र-सूत्र को यदि हम आज भारत और विश्व में प्रवर्तित करें तो सर्वत्र शांति और भाईचारे का शंखघोष हो सकता है।

श्रीमहावीर ने कहा कि -इस संसार में कमल की पंखूड़ी पर पड़े जलबिन्दु की तरह निर्लिप्त रहो। तृष्णाओं में स्वयं को मत बांधो। जो लिप्त है, उसे कभी कुछ नहीं मिलता और निर्लिप्त को कोई कमी नहीं होती, संसार की धन-दौलत और प्राकृतिक सुख-संपदाओं के ट्रस्टी बनो। अमानत में खयानत मत करो। अमानत को अमानत मानो अर्थात् उन्होंने वही कहा जो आगे चलकर संत कबीर की वाणी में अनुगुंजित हुआ। कबीर ने कहा कि अपनी चादर को ज्यों की त्यों रख दो, उसे मैली मत होने दो। शरीर को अमानत मानो।

भगवान श्रीमहावीर ने व्यक्ति को गुणवत्ता को उभारने का उपदेश दिया। उन्होंने कहा- सही देखो, सही जानो, सही करो। पारिभाषिक शब्दों में सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चरित्र को उन्होंने व्यक्ति और समाज की रचना का प्रमुख आधार बनाया। उनकी शिक्षा थी- सम्यक् में अविचल बनो। सही देखना अर्थात संयत, संतुलित और तर्कसंगत देखना है, सही जानना यानी अन-तिरंतजित जानना है और सही करना यानी अहिंसा का हर कदम पर ध्यान रखकर अपने जीवन में सत्य को उसके संपूर्ण वैभव में प्रकट करना है।

धर्म की इबारत करते हुए उन्होंने कहा- धर्म और कुछ नहीं है, वह वस्तु का स्वभाव है। उन्होंने साफ कहा कि आकृतियों में मत भटको, आकृत की खोज करो। आकृतियां अर्थात फार्म्स तो कई होंगे, किन्तु वस्तुत्व एक ही होगा। सोने के गहने कई हो सकते है, किन्तु स्वर्णत्व सदैव एक ही होगा। परमाणु-समुह कई शक्लें ग्रहण कर सकता है, किन्तु वह अपने मूल स्वरुप में कभी भ्रष्ट नहीं होता, इसलिए उन्होंने कहाकि दीवेऽव धम्मं-धर्म दीपक की तरह है। उसे हथेली पर रखो और जगत के सार-सारांश को समझो। उन्होंने कहा कि अंधे की हथेली पर रखे दीपक का कोई फल भला कैसे निकल सकता है ?

आज धर्म अंधों की हथेली पर आ गया है। राजनीति की हथेली पर धर्म के दीए का होना निरर्थक है। इसे तो किसी निर्लिप्त संत की हथेली पर होना चाहिए, ताकि प्राणिमात्र का मंगल हो। धर्म आत्मकल्याणकारी और परोपकारी दोनों है। धर्म के इस मर्म को जब तक हम नहीं जानेंगे, उसका राष्ट्रहित में उपयोग नहीं कर सकेंगे।

भगवान श्रीमहावीर ने कहा कि प्राणं चारित्त हीणं अर्थात् चरित्र के बगैर ज्ञान व्यर्थ है। वह नक्शे के उस पहाड़की भांति है, जिसमें ऊंचाई नहीं होती। यह चित्र तरंग है, जो कभी सरपट नहीं दौड़सकता। क्या तस्वीर का घोड़ा कभी दौड़ता है ? क्या उस पर सवारी संभव है ? आज ज्ञान तो विज्ञान भी है, किन्तु आचरण नहीं है। चरित्र की समस्या सबसे बड़ी समस्या है, अतः जब तक इसका कोई स्पष्ट हल सामने नहीं आएगा, तब तक हम आगे कोई कदम नहीं उठा पाएंगे।

भगवान श्रीमहावीर ने करनी पर बल दिया। उन्होंने कहा कि- धर्म के चार द्वार है- क्षमा, निर्मलता, सरलता, अहिंसा। ये तीर्थधाम है। इनके बगैर धर्म के मर्म तक पहुंच बनाना असंभव है। किसी एक द्वार पर भी यदि हम ठीक से पहुंचते हैं तो मानिए कि हम धर्म की अंतरात्मा में उतर सके हैं।

आज क्षमा का स्थान असहनशीलता और उत्तेजना ने ले लिया है, निर्मलता मात्र शब्द रह गई है, जटिलताओं ने जीवन को चारों ओर से अपनी गिरफ्त में कस लिया है, अहिंसा का तो कोई प्रश्न ही नहीं है। क्रूरताओं और दुष्टताओं ने हमें अपने पंजों में कस लिया है। इस तरह धर्म के चारों द्वार बंद है और भारत बाहर खड़ा गुहार भर रहा है। क्या भगवान ने जिन चार द्वारों का उल्लेख किया है उनमें से एक को भी हम खोल पाएंगे ?

भगवान ने भीड़ पर कभी ध्यान नहीं दिया। उन्होंने व्यक्ति-शुद्धि को महत्व दिया। उन्होंने कहा- धर्म समूह के लिए नहीं है। उसका आचरण व्यक्ति को करना चाहिए। एगे चरेज्ज धम्मं-धर्म का पालन अकेले करना चाहिए। भीड़ आडम्बर, ध्वंस और अंधविश्वास में भटक सकती है, व्यक्ति इनसे बच सकता है, इसलिए उन्होंने कहा- **अप्प दीवो भव**- तू अपना चिराग खुद बन। दूसरों के चिराग से तुझे भरपूर रोशनी मिलने वाली नहीं है। तेरे अंदर बैठे अंधेरे तेरे अपने दीए के बगैर दूर नहीं होंगे। तू अकेला आगे आ, साहस कर, पुरुषार्थ कर।

इस तरह उन्होंने व्यक्ति के बल-पुरुषार्थ को जगाया, उसे नई दिशा दी, उसे रचना की धरती पर उतारा। भारतीय संस्कृति के मुख-मंडल को दीप्तिमंत करने में यह उनका सर्वोपरि योगदान है।

भगवान ने स्वाधीनता और स्वाभाविकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि इस लोक में एक परमाणु भी ऐसा नहीं, जो स्वाधीन न हो। वे बोले- लोक में सर्वत्र/सर्वदा/ सबकुछ स्वाधीन है। सत का सार है। कहीं कोई रस-भंग नहीं है। सब कुछ समरस है। संपूर्ण जगत का यातायात स्वाधीन है। सब एक ताल में निबद्ध है। कहीं कोई लयभंग नहीं है। स्वरुपाचरण के इस रहस्य को समझना चाहिए और उसे हमें अपने जीवन में लौटाना चाहिए।

उन्होंने कहा कि अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह ही जीवन को सुख-शांति, अन्ततः मुक्ति की ओर ले जा सकते हैं। अहिंसा को उन्होंने परम धर्म कहा। हिंसा को परिभाषित करते हुए उन्होंने कहा कि हिंसा विरइ अहिंसा- हिंसा से विरक्ति अहिंसा है। **सव्वेसिं जीवियं प्रियं**-जीवन सबको प्रिय है। समय मत गंवाओ। क्षण-भर भी प्रमाद मत करो। प्रतिपल यात्राचित रही। जीवन चक्र को स्निग्ध रखो। संयम में गति रखो। असंयत जीवन रुद्ध ही पड़ता है। संयत जीवन निरन्तर परिष्कार की ओर कदम उठाए रहता है, अतः तू चल, रुक मत।

व्रत पालन में उन्होंने भावना पर बल दिया। **''हिंसा''**- उन्होंने कहा मात्र किसी को मार डालना ही नहीं है। किसी जीव की हत्या न करने, किन्तु उसे मारने या उसे पीड़ा पहुंचाने की मंशा या इच्छा भी हिंसा है। एक बहेलिया जाल बिछाए सुबह से शाम तक बैठा रहता है और उसके जाल में एक भी पक्षी नहीं फंसता, किन्तु वह हिंसा का पात्र बन जाता है। हिंसा के बाहर घटित होने से पहले, उसकी शक्ल आदमी के भीतर जन्म लेती है। जो हिंसा भीतर जनमती है, वही बीज होती है। भगवान श्रीमहावीर का संकेत उस बीज की ओर है, इसीलिए उन्होंने कहा कि- अहिंसा परमधर्म है। उसकी छवि यदि सर्वत्र होती तो निश्चिय ही वह फलदायी होगी।

उन्होंने कहा कि- सत्य जीवन का सार है। आत्मा से सत्य को खोजो। इंद्रियां उसे नहीं खोज पाएगी। इंद्रियों की हदें है। आत्मा असीम है। सत्य असीम है। उसे आत्मा ही तलाश सकती है। वे बोली- **तं सच्चं खु भगवं**-सत्य ही निश्चय से भगवान है। सत्य और भगवान दो नहीं है। असल में वस्तु के स्वरुप को जानना सत्य है। सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं है।

अस्तेव- उन्होंने कहाकि- बहुत सूक्ष्म अस्तित्व है। उन्होंने कहा कि **अदिन्न मन्नेसु य णो गहेज्जा**- बिना दी हुई किसी भी वस्तु को ग्रहण नहीं करना चाहिए। ऐसा करना चोरी है। यहां अदत्त आदान (ग्रहण) को स्तेय कहा गया है। यह स्थूल इबारत है। विस्तारक है- **जो बहुमुल्लं वत्थु अप्पय मुल्लेण णव गिण्हेदि** आदि- जो बहुमूल्य वस्तु को अल्प मूल्य में नहीं खरीदता, दूसरे की भूली हूई वस्तु को नहीं उठाता, अल्प लाभ से ही संतुष्ट रहता है तथा कपट, क्रोध, मान से द्रव्य का हरण नहीं करता, वह शुद्ध हृदय दृढ़संकल्पी अस्तेय व्रत का पालन करता है। यह इबारत इतनी गहरी है कि इसमें दमन-दोहन, शोषण, धोखाधड़ी, चार सौ बीसी इत्यादि सब कुछ आ गए है। क्या आज कोई इतनी सूक्ष्मता और गहराई से अस्तेय व्रत का पालन कर रहा है।

ब्रह्मचर्य चौथा व्रत है। भगवान श्रीमहावीर ने ब्रह्मचर्य को अलग से महत्व दिया है। ऐसे संकट पत्र क्षणों में जबकि देश में दहेज-हत्याओं और एड्स, भ्रूण-हत्या और गर्भपात का भीषण दौर दौरा है। भगवान श्रीमहावीर द्वारा प्रतिपादित ब्रह्मचर्य व्रत न सिर्फ उपयोगी है, वरन मानव-मात्र के लिए मंगलकारी है। उन्होंने इस सूत्र को उन क्षणों में प्रवर्तित किया जब नारी को परिग्रह माना जाता था अर्थात् जब नारी का अपना कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं रह गया था। उन्होंने अपरिग्रह में से ब्रह्मचर्य को पृथक किया और उसे एक स्वाधीन व्रत की अस्मिता प्रदान की। उन्होंने स्पष्ट कहा कि नारी की अपनी निजता है। वह कोई बेजान वस्तु नहीं है। वह परिग्रह भी नहीं है। वह धन-दौलत, जमीन-जायदाद की तरह खरीद- फरोक्त की वस्तु नहीं है।

उन्होंने चतुःसंघ में नारी-अस्तित्व को पचास प्रतिशत स्थान दिया। उसे नर के बराबर का दर्जा दिया। उनका नारी-मुक्ति का यह अभिमान आज से लगभग 2600 साल पूर्व अस्तित्व में आ गया था।

उन्होंने नारी-मुक्ति को लेकर कहाकि- संयम का अधिकार केवल नर को नहीं है नारी को भी है। श्राविका और साध्वी जैसे शब्दों को पुनरुज्जीवन मिला। नारी के पग में पड़ी दासता की बेड़ियां चरमरा गई। वह पुरुष-तुल्य सामाजिक/धार्मिक धरातल पर आ खड़ी हुई। ब्रह्मचर्य इस तरह सिर्फ यौन संयम से संबंधित शब्द नहीं है, बल्कि वह सामाजिक समता की सशक्त आधार भूमि भी है। भगवान महावीर ने इसीलिए ब्रह्मचर्य को तपों में सर्वश्रेष्ठ कहा है। उन्होंने कहा-**तवेसु वा उत्तमं बंभचेरं**।उनके द्वारा दिया गया पांचवां उपदेश है अपरिग्रह। अपरिग्रह को परिभाषित करते हुए उन्होंने कहा- **अब्भंतर बाहिरए सव्वे गंथे तुमं विवज्जेहि**-भीतर और बाहर की तमाम गांठों-गठरियों को भी खोल फेंकना अपरिग्रह है। अपरिग्रह सिर्फ भौतिक समाधान ही नहीं है, वह मानसिक उलझनों का भी अचूक हल है। प्राणों में सिर्फ बाहर ही ग्रंथियां नहीं होती, भीतर भी होती है। भीतर की गांठें व्यक्ति को नितान्त खोखला व्यर्थ और पेचीदा बना डालती है।आसक्ति या मोह सबमें बड़ी गांठ है। श्रीमहावीर ने कहा कि इसे खोलोगे तो दूसरी गांठें अपने आप खुल जाएंगी। उन्होंने कहा कि जानो कि तुम शरीर नहीं हो, शरीर में हो। शरीर एक पड़ाव है, वह स्वरुप नहीं है। उन्होंने शरीर और उसकी वृत्तियों को भी परिग्रह निरुपित किया, इसीलिए उन्होंने कहा कि **वणीय तण्हो विहरे**-तृष्णा से मुक्त होकर विचरण करो। इस तरह श्रीमहावीर ने कहा कि हिंसा मत करो, सच बोलो, चोरी मत करो, संयमपूर्वक जीवन जीयो, तृष्णा से मुक्त बनो। उन्होंने मानव-संस्कृति के भव्य प्रासाद पर जो कलशारोहण किया थ, वह आज भी उतनी ही गरिमा के लिए है। किन्तु हमारी दृष्टि में वह समता और प्यास नहीं है जो कलश की उस ज्ञान-ज्योति को झेलकर जन-जीवन में छिटकर आज के इस हिंसक वातावरण को ललकार सकें।

✲ किसको किस घड़ी से क्या मिला है, उस समय का उसको खुद ही ज्ञान नहीं रहता जो विवेकहीन है। ऐसे खुद बेवक्त हो जाते है।

सुख के लिए नुस्खा

एक अखबारवाले ने मुझसे पूछा था- **''सुख के लिए आपका नुस्खा क्या है ?''** मैं चकित-सा सोचता रहा- **'सुख के लिए मेरा नुस्खा क्या है ?''**

फिर अपने-आप ही उत्तर मिल गया- मैं **उस समय अपने को सुखी और प्रसन्न अनुभव करता हूं, जब मैं अपने लिए नहीं, बल्कि अपने प्रियजनों के लिए, अपने काम के लिए जी रहा हूं। हाँ, सुख के लिए मेरा यह नुस्खा है- अपने बाहर जिओ, अपने बारे में जितना कम हो सके, उतना कम सोचा।**

सुख के लिए मेरा नुस्खा ?.... जो चीज आपके पास नहीं है और न कभी हो सकेगी, उसके बारे में दिवास्वप्न देखने के बजाय, जो कुछ आपको उपलब्ध है उसका आनन्द लीजिये। काम करना, प्रेम करना, अपने अस्तित्व को बिसरा देना- यह है सच्चा सुख। अपने प्रियजनों के जीवन को आनन्द-भरा और आसान बनाने का प्रयत्न करने वाले नर-नारियों का सुख यही तो होता है।

आगमोद्धारक की सदस्यता एवं श्रुतभक्ति में दान देने के लिये ऑन लाईन बैंक की जानकारी

महोदय,

आगमोद्धारक की सदस्यता प्राप्त करने के लिये सदस्यता शुल्क एवं श्रुतभक्ति दान आप ऑन लाईन जमा कर सकते है। आपकी धनराशि भेजने के लिये:-

बैंक का नामः- इण्डियन ओवरसीज बैंक, शाखा नईसड़क उज्जैन (म.प्र.)

खाताः- श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, 46, सखीपुरा, उज्जैन (म.प्र.)

खाता क्रं.:- 068002000001425 IFSC Code:- IOBA0000680

चैत्र सुदी-13 (द्वि.) जन्म दिवस पर विशेष -डॉ.सुभाष जैन

यह विश्वरत्नसागर है....

अक्सर लोग मेरे बारे में अधुरी जानकरी पाकर अलग अलग राय व्यक्त करने लगते पर वे वास्तविकता से अनभिज्ञ होते हैं वे अन्य लोगों के बीच अपनी राय प्रकट करने लगते है जो सुनी सुनाई बातों पर आधारित होती है और सच्चाई से कोसों दूर होती है। एक सज्जन आए उन्होंने कहा - आपका व्यक्तित्व पढ़कर मेरे अंदर आपसे मिलने की आस जागी आपके बारे में जो सुनता हुं वह तो अलग है और आपसे मिलने पर अलग देखता हुं ,मैं हैरान हूं आप मुनिधर्म का पालन कैसे करते हैं ? आप कभी हताश होते हैं ? आपको अपनी जिंदगी से कोई शिकायत है ?

मुझे बड़ा दुःख होता है जब कोई मेरे बारे में बगैर जाने समझे प्रश्नवाचक दृष्टि से देखता है। यह मेरा संस्मरण किसी का कृपापात्र बनने के लिए नहीं मत लिखाना। कई बार हम दूसरों के बारे या किसी के बारे में जब कोई धारण बना लेते है तो वह धारण उस व्यक्ति से मिलने पर बदल जाती है मेरे साथ भी अक्सर यही होता है जिसके बारे में हमने जो सुना वह उससे मिलने पर गलत पाते है तो उसके प्रति हमारे देखने का अदांज बदल जाता है और दिल में उसके प्रति सम्मान पैदा हो जाता है जब मेरे बारे कुछ निकट के लोग आकर बतलाते है कि साहेबजी -आपके बारे में ऐसी चर्चा सुनने में आ रही है उसमें से कुछ अच्छी भी होती है और कुछ गलत भी होती है। जब आप पूछ ही रहे हैं तो मैं बता देता हूं मेरे बारे में गलत बातें सुनकर तनावपूर्ण, निराशावादी परिस्थितियां कभी-कभी आकर मुझे छूती है पर उनमें मैं ताल मेल बैठा लेता हूं और तालमेल बैठाने का मेरे पास आध्यात्मिक सोच है। विपरित परिस्थितियों में संतुलन बनाएं रखने के लिए आध्यात्मिक केन्द्र का होना बहुत जरुरी है। जो नहीं है उसकी अपेक्षा, जो है उस पर सोचता हूं और जब यह सोच रखता हूं तो मुझे लगता है मुझे जरुरत से ज्यादा मिला। जो काम में संसारी जीवन में नही कर सकता था वह मैंने संत जीवन में कर अपने जीवन को धर्म और लोगों के लिये उपयोगी ही बनाया है इसका मुझे बहुत संतोष हैं। एक संत को जीवन में जिन शासन की प्रभावना और लोगों को धर्म से जोडने के लिये जो करना चाहिये वह सब मैं करने का प्रयास कर रहा हुं और इसमें ईश्वर मेरा भरपूर साथ दे रहा है। मुझे जिंदगी ने काबलियत से ज्यादा दिया है। विचारों में संतुलन बनाए रखने की यह साधना एक दिन में नहीं हो पाती सतत अभ्यास करना पड़ता है दैहिक स्तर पर साधु बनना एक दिन का काम हो सकता है पर वैचारिक संन्यास के लिए सालों अभ्यास करना पड़ता है। समय लगता है। विपरीत परिस्थिति के अनुभव संघर्षो के क्षण प्रेरणादयी ही नहीं होते अपितु मजबूती भी प्रदान करते हैं और यहीं मजबूत साधना की सफलता मुझे कभी भी अपने ईश्वर के प्रति कोई शिकायत पैदा नहीं होने देती है जो भी परिस्थिति आती है ईश्वर की इच्छा मानकर स्वीकार कर लेता हूं या नियती के हवाले सौंप देता हूं जिससे मुझे बड़ा सुकून मिलता है। पर यह बात भी सच है कि- अनागत का अनजान भय आदमी को झकझोरता है फिर भी यदि ईश्वर के हवाले छोड़ दिया जाये तो संबल मिलता है।

मैं मानता हूं कि- जैन दर्शन ईश्वरवादी नहीं है वह ईश्वर को कर्ता नहीं मानता पर थोड़ी देर को कंथचित ईश्वरवादी बनने में जीवन के प्रति उत्साह, सुकून और फायदा मिलता है तो इसे जैन दर्शन अस्वीकार भी नहीं करता है। किसी भी कर्म का उदय हमेशा एक जैसा नहीं रहता स्थिति अनुभाग में तीव्रता मंदता आती रहती है। फिर जगत परिवर्तनशील है सब कुछ बदलते रहता है इस बदलाव के नियम में यह भी ध्यान रखना चाहिए कि- जब तक विपरीत परिस्थिति है तब तक मैं जो कुछ भी करुं सही करुं यदि सही करुंगा तो सावधानी रखूंगा तो समय के साथ-साथ उस बिंदू पर पहुंच जाऊंगा जहां से मुश्किलें दूर हो जाती है।

जीने की कोई वजह तो होनी चाहिए। बिन मकसद के जिंदगी को किस दिशा में ले जाए। मकसद ही जीवन में आत्मविश्वास भरते हैं मैं सच कहता हूं मेरा आत्मविश्वास ही मेरी संतुष्टि, खुशी साधना व स्थायित्व है। कभी-कभी परम्पराओं से समझौता भी करना पड़ता है। बदलाव भी लाना पड़ता है और बदलाव लाने से पहले मैं आत्मविश्लेषण भी करता हूं आत्मविश्लेषण के बाद हर अनुभूतियों के परिणाम बेहतर होते हैं।

मैं धार्मिक परम्पराओं व क्रिया अनुष्ठानों को बराबर महत्व देता हुं जिनेन्द्र और जिन भक्ति पर मेरी पूर्ण आस्था है मैं सौभाग्यशाली मानता हूं अपने आपको की मुझे कम मेहनत में अधिक सफलता मिलती है। संन्यास लेने के बाद बहुत परिस्थितियां मेरे सामने आयी जिनका मैंने वडिलों के मार्गदर्शन में हल निकाला। मैं धर्म मार्ग के अनुसार आगे बडा फिर भी मैं कह सकता हूं कि- वडिलों से सीख कर आगे चलता रहा मुझे पश्चाताप की गहन पीड़ा से आज तक नहीं गुजरना पड़ा। मेरा आत्मविश्वास है कि मेरे गुरुदेव मेरे भगवान मेरे साथ है। मेरे गुरुदेव आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा की कृपा ही मुझ पर हमेशा ही रही आज भी है।

महावीर जन्म कल्याणक महोत्सवः-

अविनीत शिष्य दिव्य लक्ष्मी को भगाता है

✻ शान्तिलाल सगरावत, मंदसौर

विणयम्मि जो उवाएणं, चोइओ कुप्पई णरो।
दिव्वं सो सिरिमिज्झंति, दण्डेव पडिसेहट ॥

जो शिष्य विनय से प्रेरित किये जाने पर कुपित होता है वह आती हुई दिव्य लक्ष्मी को दण्डे से मारकर दूर भागता है। जिन लक्षणों से अविनीत शिष्य की अयोग्यता समझी जा सकती है वे अविनीत के चौदह लक्षण इस प्रकार है। इनके रहते अविनीत आत्मा गुरु के द्वारा प्रदत्त शिक्षा ग्रहण नहीं कर सकता।

1- बार-बार क्रोध करना, 2- विकथा करना, 3- मैत्री भाव को नकारना, 4- श्रुत लाभ कर अभिमान करना, 5- रत्नाधिकादि दोषों को निकालना, 6- मित्रों पर कोप करना, 7- मित्र की पीठ पीछे बुराई करना, 8-असम्बद्ध बातें करना, 9- द्रोह करना, 10- अकड़ते रहना, 11- इन्द्रियों पर नियंत्रण नहीं रखना, 12- रसों में आसक्त रहना, 13- संविभाग नहीं करना और अप्रीति रखना।

- उत्तराध्ययन सूत्र 11/7,8,9

अविनीत की दुर्दशा का उत्तदायित्व गुरु पर नहीं। **किं करेइ गुरु हन्त, सीसो विणय वज्जिओ**। वस्तुतः गुरु तो निमित्त है। शिष्य का आत्मा ही उपादान है। शिष्य का आत्मा अयोग्य है, अशुद्ध है तो गुरु क्या कर सकता है ? शिष्य गुरु चरणों की उपासना करते हुए योग्यता उत्पन्न करें तो ही उसका आत्मा योग्य उपादान रुप में परिणत हो सकता है।

श्रमणश्री महावीरस्वामी के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर गोशालक उनकी शरण में आया। उसने शिष्य बनने की प्रार्थना की। भगवान महावीर स्वामी ने प्रार्थना स्वीकार नहीं करके अन्यत्र विहार कर दिया। गोशालक भगवान को ढूढ़ते-ढूढ़ते उनके पास आ गया और उनका शिष्य बनकर रहने लगा। वह भगवान के पास लगभग छह वर्ष रहा। लेकिन गोशालक का मन इधर-उधर भटकता रहा। उसने भगवान से तेजो लेश्या प्राप्ति की विधि जानी और फिर भगवान से प्रथक होकर तपस्या करके तेजोलेश्या प्राप्त कर ली। पार्श्वनाथ भगवान की परम्परा के कुछ साधुओं को अपना अनुयायी बना लिया। इसके बाद अपने आपको जिन रुप में प्रतिष्ठिापित किया। भगवान का विरोधी बनकर अपने लाखों उपासक बनाकर आखिर में भगवान श्री महावीर स्वामी पर कुपित होकर उन पर तेजोलेश्या का प्रयोग किया। इस प्रकार योग्य गुरु का सानिध्य प्राप्त करने के बाद भी सन्मार्गगामी न होकर उन्मार्गगामी बनकर भव परम्परा में वृद्धि की।

उत्तम निमित्त अयोग्य आत्मा के लिये अहितकर ही होता है। इसमें निमित्त दोषी नहीं होकर पात्र ही दोषी होता है। जब शिष्य अविनीत होता है तो गुरु के लाख उपाय भी शिष्य को गुण सम्पन्न नहीं बना सकता है। आत्मा की अयोग्यता की पहचान अविनय से होती है। अविनीत आत्मा के शिक्षा देने योग्य कदापि नहीं होती है।

धैर्यः- *धैर्य खो देने का अर्थ है, अपनी बुद्धि को खो देना। क्योंकि अटूट धैर्य मानव की बुद्धिमता का परिचय देता है। धैर्य मानवी शक्ति का वह बांध है, जिसके टूट जाने से शक्ति बह जाती है और उस बांध को सुरक्षित रखने से शक्ति संचित रहती है। शक्ति की सुरक्षा, सदुपयोग के लिए धैर्य की रक्षा करना परम आवश्यक है। धैर्यवान मनुष्य संतोषी, गंभीर तथा दूरदर्शी होता है और संतोष गंभीरता तथा दूरदर्शिता के द्वारा सदा धैर्य को स्थिर रखता है। स्थिर धैर्य से ही दृढ़ विश्वास, अटूट श्रद्धा, प्रखर विवेक को सिद्धि मिलती है। प्रारब्ध पत्र में चलते हुए जीवन के सम्मुख जब कभी भयानक आपत्ति-विपत्ति जनित कष्ट आते हैं, वह धैर्य के द्वारा ही सहे जाते हैं। बड़े-बड़े दुःखों की सीमा को पार करने के लिए सुदृढ़ बलवान शरीर की आवश्यकता नहीं है जितनी की दुर्बल शरीर से सुदृढ़ धैर्य की आवश्यकता है।*

✻ सत्य जीवन का सार है। आत्मा से सत्य को खोजो। इंद्रियां उसे नहीं खोज पाएंगी। इंद्रियों की हदें हैं। आत्मा असीम है। सत्य असीम है। उसे आत्मा ही तलाश सकती है। वे बोले- तं सच्चं खु भगवं- सत्य ही निश्चय से भगवान है। सत्य और भगवान दो नहीं है। असल में वस्तु के स्वरुप को जानना सत्य है। सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं है।

◎ सोच में आ रहा आध्यात्मिक परिवर्तन ◎

युवा प्रतिभाएं स्वार्थी न बनें, वे यह सोचें कि धन के अलावा जीवन में और भी कुछ पारिवारिक सौहार्द एवं संस्कार, राष्ट्रीय-सामाजिक सरोकार, स्वयं की आंतरिक-आध्यात्मिक संतुष्टि यह भी जिंदगी की अहम बातें हैं। धन कुछ है, बहुत कुछ है, पर इसे सब कुछ नहीं समझा जाना चाहिये। देखा यह जाता है कि -आज के दौर में युवा प्रतिभाएं धन के पीछे तेजी से भाग रही हैं, फिर भले ही इसके लिए उन्हें स्वास्थ्य एवं मानसिक सुकून से क्यों न वंचित रहना पड़े। विश्लेषकों का मानना है कि- आज प्रतिभाशाली युवा अपने लिए सूचना प्रौद्योगिकी एवं प्रबंधन का क्षेत्र चुनते हैं। मेडिकल एवं इंजीनियरिंग अब उनके लिए दोयमदरजे की बातें हैं। प्रशासनिक सेवाओं में जाने के लिए उनका जज्बा घटा है। बदलाव तो यहां तक आया है कि जो प्रशासनिक सेवाओं के लिए चयनित हो भी जाते हैं, वे भी कुछ सालों बाद किसी बहुराष्ट्रीय कंपनी में नौकरी करना ज्यादा पसंद करते हैं। सेना की नौकरियां भी उनके लिए अनाकर्षक हो रही है।

''नौकरी वहीं जहां धन हो, फिर यह देश में मिले या विदेश में।'' ज्यादातर युवा इसी सूत्र में अपने जीवन को गूंथे हुए हैं। अधिक धन से अधिकतम धन की प्राप्ति उनकी जिंदगी का मकसद बना हुआ है। इसके लिए वे कुछ भी करने को उतारु हैं। कुछ दशक पहले धन की ख्वाहिश से ज्यादातर प्रतिभाएं विदेशों में पलायन कर जाती थी। अमेरिका उनके लिये स्वर्गलोक था। उन दिनों प्रत्येक युवा का सपना होता था कि जिस किसी तरह से अमेरिका का ग्रीन कार्ड हासिल करें और हरे रंग वाले डालरों की रिमझिम बरसात से नहाए, पर इधर के सालों में युवा प्रतिभाओं के मन में अमेरिका की आभा कम हुई है। जार्ज टाउन यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर डी.सी. स्टेनली की रिपोर्ट के मुताबिक स्थिति पहले से उलट हो रही हैं। अब अमेरिकन वी-स्कूल विद्यार्थियों द्वारा गुड़गांव एवं बैंगलूर पसंद किए जा रहे हैं। आज उनकी नजर में भारत का अर्थ है विश्व की सर्वश्रेष्ठ सॉफ्टवेयर सर्विस और इस ओर युवाओं का रुझान बढ़ा है।

युवाओं का प्रतिभा पलायन आज उतनी गंभीर समस्या नहीं रही। युवा विद्यार्थियों द्वारा अब अध्ययन के लिए लंदन शिकांगो या फिर वाशिंगटन के सपने नहीं देखे जाते हैं। हालाकि, विदेशी विश्वविद्यालय भारतीय युवा विद्यार्थियों को लुभाने के लिए कई हथकंडे अपना रहे हैं। इसमें अमेरिका के अलावा आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, जर्मनी, कनाड़ा एवं आयरलैंड शामिल है।

यहां तक कि गैर अंगरेजी भाषी देश भी जो अंगरेजी में कोर्स चलाते है, वे भी भारतीय छात्रों को लुभाने की कोशिश में है। स्विट्जरलैंड के शीर्ष मैनेजमेंट स्कूल, फ्रांस, हालैंड और जापान के शीर्ष व्यवसाय स्कूल, चीन, रुस एवं पूर्वी यूरोप के मेडिकल कॉलेज इनमें शुमार है। इंडोहोरिजन एजुकेशन सर्विस के कुलदीपसिंह गुजराल के अनुसार स्वीडन कोरिया, साइप्रस, दक्षिण अफ्रीका और मलेशिया जैसे देश भी इस दौड़ में शामिल हो गए हैं। ये विश्वविद्यालय क्षेत्रीय छात्रों की तुलना में विदेशी छात्रों से 2-3 गुना ज्यादा फीस लेते हैं। अतः उनके लिए यह बड़ा ही लाभप्रद व्यवसाय है।

प्रतिभा पलायन अब इतनी बड़ी समस्या न हो तो भी युवा प्रतिभाओं में राष्ट्रीय व सामाजिक सरोकार की कमी से तो देश जूझ रहा है। युवाओं के अनुसार इस उत्साह की कमी का कारण सरकारी नीतियां और राजनीतिक दल हैं, जो जात-पाँत की विभाजनकारी रेखाएं खींचकर देश और समाज को बांटने का काम कर रहे हैं, परन्तु युवाओं को यह भी सोचना होगा कि आने-जाने वाली सरकारें या फिर अपनी ही टूटन से परेशान राजनीतिक दल इस देश और धरती का पर्याय नहीं हैं। भारतमाता हम सबकी माँ है। उस पर किसी राजनीतिक दल विशेष का एकाधिकार नहीं है। राष्ट्रीय गौरव की रक्षा के लिए, सामाजिक समरसता के लिए युवा प्रतिभाओं को ही आगे आना है।

इसके लिए उन्हें यह सोचना होगा कि धन कमाने के अलावा भी जिंदगी के कुछ मकसद है। इसके लिए उन्हें स्वार्थ की संकीर्ण सीमाएं तोड़नी होगी। हालांकि, देश के कुछ युवा ऐसा कर भी रहे हैं। उन्हें अपनी प्रतिभा के राष्ट्रीय संपति होने का एहसास हो रहा है। यह सुखद परिवर्तन 2006 ई. की बात है। इस पलटती बाजी का आलम यह है कि देश के शीर्ष मैनेजमेंट स्कूल इंडियन इन्स्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट अहमदाबाद के छात्रों द्वारा विदेश के बेहतरीन ऑफर ठुकराए

जाने के मामले में इस वर्ष बढ़कर 18 पहुंच गए। छह छात्रों ने तो इस प्रक्रिया में ही भाग नहीं लिया, क्योंकि उनकी नजर में धन कमाना ही सब कुछ नहीं है बल्कि देश व समाज की सेवा भी एक मकसद है। बरसों तक पास होनेवाले छात्रों को विदेश की दौड़ लगाते देखने वाले नेशनल स्कूल ऑफ डिजाइन (एन.एस.आई.डी.) से निकले डिजाईनर्स भी अब भारतीय कंपनियों में काम तलाश रहे हैं। डेवलपमेंट सेक्टर में भी ऐसा ही माहौल देखने को मिल रहा है।

प्रभाजीत सिंह, निखिल वासवानी, विनीत लाड़िया और श्रद्धा वैद्य जैसे विदेशी ऑफर ठुकराने वाले छात्रों को यकीन है कि भारत की ताजा तरक्की किसी बुलबुले की तरह अस्थायी नहीं है। इन युवा प्रतिभाओं की यही धारणा है कि भारत तरक्की की इस लंबी दौड़में अमेरिका और यूरोप तक को परेशानी में डाल देगा। हो सकता है कि इस वक्त हमें विदेश में बेहतर पैकेज मिले, लेकिन दो वर्ष के भीतर आप पूरी दुनिया को बेहतर रोजगार की तलाश में भारत की ओर कूच करते देखेंगे।

देश के प्रति जज्बा रखने वाली इन युवा प्रतिभाओं का अपने पर विश्वास ही कहा जाएगा कि इन्होंने यहां मिल रहे वेतन से पांच गुना वेतन के विदेशी ऑफर को ठुकरा दिया है। ऐसा लगता है कि **मा गृधः कस्य स्विद् धनम्** की ईशावास्य श्रुति वाली अपनी भारतीय संस्कृति को इन्होंने समझ लिया है। उनकी इस बदली सोच से उनके विदेशी रोजगारदाताओं को करारा झटका लगा है। इनमें डॉश्च बैंक गोल्डमैन-लेहमैन ब्रदर्स, मेरिल लिंच, मोगी स्टेनले जैसे विश्व के बड़े माने-जाने वाले व्यावसायिक प्रतिष्ठान हैं। इसमें जो देश की अन्य युवा प्रतिभाओं को सीख देने वाली चौंकाऊ बात है, वह यह है कि इनके विदेश जाने में इनकी देशभक्ति की भावना भी रोड़ा बन रही हैं। यह युवा पीढ़ी देश के प्रति अपने कर्त्तव्य को समझ रही है। उन्हें न केवल इस बात का एहसास है कि वे यहां तरक्की कर सकते हैं, बल्कि उनमें यह सोच भी पनप रही है कि उन्होंने इस देश से लिया काफी कुछ है, अब उन्हें अपने देश की माटी का कर्ज चुकाना है।

आई.आई.एम. अहमदाबाद के 2006 बैच के दो छात्रों का कहना है कि हम जैसे पढ़े-लिखे लोग इस वक्त देश को चाहिए, क्योंकि यह तरक्की की जोरदार छलांग लगाने जा रहा है। इन दोनों ने एक नहीं दो-दो काफी अच्छे विदेशी ऑफर ठुकराए हैं। उनका कहना है कि वे अपने देश में रहकर यहां की अन्य युवा प्रतिभाओं को तरक्की की जोरदार छलांग के लिये तैयार करना चाहते हैं। एक सवाल यह भी उठ रहा है कि भारत तो कई सालों से तरक्की की राह पर है, फिर अचानक क्या हुआ। युवा प्रतिभाओं की सोच अचानक कैसे बदली ? इसके उत्तर में निशीथ का कहना है कि यह युवाओं की सोच में आने वाला एक आध्यात्मिक परिवर्तन है, जो कि उन्हें न केवल व्यावसायिक प्रबंधन में कुशल बना रहा है, बल्कि जीवन के आध्यात्मिक प्रबंधन की ओर प्रेरित कर रहा है। इस प्रेरणा से अन्य युवा प्रतिभाओं को भी प्रेरित होना चाहिए और उन्हें स्वार्थ के अंधेरों को भेदते हुए सार्थक जीवन लक्ष्य की खोज में आगे बढ़ना चाहिए।

ज्येष्ठ और श्रेष्ठ

ज्येष्ठ और श्रेष्ठ में कौन महत्वपूर्ण है ? ज्येष्ठ का अर्थ बड़ा होता है और श्रेष्ठ का अर्थ अच्छा। कुछ लोग कहते हैं कि हम धन में बड़े हैं। कहना होगा कि धन में बड़े तो हो, परन्तु धन में श्रेष्ठ भी या नहीं ? जब धन का उपयोग परोपकार के लिए होता है, तब उसमें श्रेष्ठत्व आता है। कुछ लोग कहते हैं- हम बुद्धि में बड़े है। कहना होगा कि बुद्धि में बड़े तो हो पर बुद्धि में श्रेष्ठ भी हो या नहीं ? जब बुद्धि का उपयोग मानव-समाज के कल्याण के लिये होता है, तभी उसमें श्रेष्ठत्व आता है।

एक-दो क्या, दुनिया भर के ज्येष्ठत्व से श्रेष्ठत्व महान है। अत: ज्येष्ठत्व के लिए नहीं, श्रेष्ठत्व के लिए प्रयत्न करो। वस्तुत: श्रेष्ठत्व में ही ज्येष्ठत्व की प्राण-प्रतिष्ठा है।

धारणा:- *प्रेमचन्द शान्त स्वभाव के व्यक्ति थे, उन्हें कभी क्रोध नहीं आता था, लेकिन एक बार उन्हें किसी व्यक्ति पर गुस्सा आ गया और गुस्से में बोलें- ''क्या कहूं, मैं आपको एक शरीफ आदमी समझता था परन्तु आप तो..!'' वह व्यक्ति बीच में बोल उठा- ''जो मेरी धारणा भी आपके प्रति ऐसी ही थी।'' प्रेमचन्दजी ने तत्काल व्यंग्य भरे शब्दों में कहा- ''आपकी धारणा तो सच निकली, मैं ही धोखे में था।''*

श्री सीमंधर स्वामी भगवान

भगवान श्रीसीमंधर स्वामी कौन है ?

भगवान श्रीसीमंधर स्वामी वर्तमान तीर्थंकर भगवान है, जो हमारी जैसी ही दूसरी पृथ्वी पर विराजमान है। उनकी पूजा का महत्व यह है कि -उनकी पूजा करने से,उनके सामने झुकने से वे हमें शाश्वत सुख का मार्ग दिखाएंगे और शाश्वत सुख प्राप्त करने का और मोक्ष प्राप्ति का मार्ग दिखाएंगे।

भगवान श्रीसीमंधर स्वामी कहां पर है ?

महाविदेह क्षेत्र में कुल 32 देश है, जिसमें से भगवान श्री सीमंधर स्वामी पुष्प कलावती देश की राजधानी पुंडरिकगिरी में है। महाविदेह क्षेत्र हमारी पृथ्वी के उत्तर पूर्व दिशा से लाखों मील की दूरी पर है।

श्री सीमंधर स्वामी का अधिक परिचय....

भगवान श्रीसीमंधर स्वामी का जन्म हमारी पृथ्वी के सत्राहवें तीर्थंकर श्रीकुंथुनाथ स्वामी और अट्ठारहवें तीर्थंकर श्री अरनाथ स्वामी के जीवनकाल के बीच में हुआ था। भगवान श्री सीमंधर स्वामी के पिताजी श्री श्रेयंस पुंडरिकगिरी के राजा थे। उनकी माता का नाम सात्यकी था। अत्यंत शुभ घड़ी में माता सात्यकी ने एक सुंदर और भव्य रुपवाले पुत्र को जन्म दिया। जन्म से ही बालक में मतिज्ञान, श्रुतज्ञान और अवधिज्ञान थे। उनका शरीर लगभग 3000 फुट ऊंचा है। राज कुमारी रुकमणी को उनकी पत्नी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जब भगवान राम के पिता राजा दशरथ का राज्य हमारी पृथ्वी पर था, उस समय महाविदेह क्षेत्र में भगवान श्रीसीमंधर स्वामी ने दीक्षा अंगीकार करके संसार का त्याग किया था। यह वही समय था, जब हमारी पृथ्वी पर बीसवें तीर्थंकर श्री मुनीसुव्रत स्वामी और इक्कीसवें तीर्थंकर श्री नेमीनाथ की उपस्थिति के बीच का समय था। दीक्षा के समय उन्हें चौथा ज्ञान उद्गव हुआ, जिसे मनः पर्याय ज्ञान कहते हैं। एक हजार वर्ष तक के साधु जीवन, जिसके दौरान उनके सभी ज्ञानावरणीय कर्मो का नाश हुआ, उसके बाद भगवान को केवलज्ञान हुआ।

भगवान के जगत कल्याण के इस कार्य में सहायता के लिए उनके साथ 84 गणधर, 10 लाख केवळी (केवल ज्ञान सहित), 10 करोड़ साधु, 10 करोड़ साध्वियां, 900 करोड़ पुरुष और 900 करोड़ विवाहित स्त्री-पुरुष (श्रावक-श्राविकाएं) हैं। उनके रक्षक देव-देवी श्री चांद्रायण यक्ष देव और श्री पांचांगुली यक्षिणी देवी हैं।

श्री सीमंधर स्वामी मेरे लिए किस प्रकार हितकारी हो सकते हैं ?

तीर्थंकर का अर्थ है, पूर्ण चंद्र! (जिन्हें आत्मा का संपूर्ण ज्ञान हो चुका है-केवलज्ञान) तीर्थंकर भगवान श्री सीमंधर स्वामी महाविदेह क्षेत्र में हाजिर हैं। हमारी इस पृथ्वी (भरतक्षेत्र) पर पिछले 2600 साल से तीर्थंकरों का जन्म होना बंद हो चुका है। वर्तमान काल के सभी तीर्थंकरों में से श्रीसीमंधर स्वामी भगवान हमारी पृथ्वी के सबसे नजदीक है और उनका भरत क्षेत्र के जीवों के साथ ऋणानुबंध है।

श्रीसीमंधर स्वामी भगवान की उम्र अभी 1,75,000 साल है और वे अभी अगले 1,25,000 सालों तक जीवित रहेंगे, अतः उनके प्रति भक्ति और समर्पण से हमारा अगला जन्म महाविदेह क्षेत्र में हो सकता है और भगवान श्रीसीमंधर स्वामी के दर्शन प्राप्त करके हम आत्यंतिक मोक्ष की प्राप्ति कर सकते हैं।

श्रीमोक्षिता श्रीजी म.सा.(कमला बहन)

जन्म- संवत् 2004 खरगोन
पिता- श्री विट्ठलदासजी
माता- श्रीमती सरस्वतीबाई
नाम- कमलाबाई
पति का नाम- पन्नालालजी
20 साल में - वैधव्य
70 साल में -दीक्षा सन् 4-3-2018
दीक्षा दाता- दौलतसागर सूरीजी सहित 7 आचार्य
तपस्या- 3 उपधान, 3 वर्षीतप, मासक्षमण, 16 उपवास, 500 आयंबिल, आजीवन ओलीजी, प्रत्येक पर्युषण में 64 प्रहरी पौषध अट्ठाई के साथ और भी अनेक छोटी बड़ी तपस्या

24 वें तीर्थंकर भगवान 24 नामों से सुशोभित

आत्म धर्म प्रणेता, असीम, आस्था के केंद्र, अहिंसा के अवतार, क्षमा के महासागर, युगपुरुष, तप प्रधान, संस्कृत के उज्जवल प्रतीक श्रमण, भगवान श्रीमहावीर स्वामी का जीवन बचपन से ही जितना ओजस्वी था उतना ही यौवन भी आग में तप कूंदन जैसा तपस्वी था। ओजस्विता और तपस्विता के गुणों से वैराग्य की लौ प्रदीप्त थी। श्रीवीर प्रभु का संपूर्ण जीवन विशेषतों से ओतप्रोत है।

चरम तीर्थंकर भगवान श्रीमहावीर स्वामी 24 नामों से सुशोभित है वे इस प्रकार हैः-

1- वर्धमान 2- महावीर 3- वीर 4- अतिवीर 5- स्नमति 6-काश्यप 7- ज्ञातपुत्र 8- विदेह 9- वैशालिक 10- त्रिशलानंदन 11- सिद्धार्थनंदन 12- अंतिम तीर्थंकर 13-चरम तीर्थंकर 14- गौतम गुरु 15- वैशाली के राजकुमार 16- अहिंसा के अवतार 17- अनुत्तर योगी 18- देवाधिदेव 19- वर्तमान शासन पति 20- अनंत ज्ञानी 21- महामुनि 22- अनंतदर्शी 23-महाश्रमण 24- जिनेश्वर।

सर्वज्ञ सर्वदर्शी श्रमण भगवान श्रीमहावीर स्वामीजी की विशेषताएं भी अनेक है, जिनमें से प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैः-

1- महानतत्व वेत्ताः- वीर प्रभु ने नवतत्वों का विशद विवेचन किया। श्री उत्तराध्ययन सूत्र में प्रभु ने अपनी मुखारविंद से आत्मा, कर्म, पुण्य, पाप, बंध, निर्जरा और मोक्ष जैसे तत्वों को समझाया। जीव विकास में सम्यक्त्व सुलभ बोधिता भव्यता आदि का स्वरुप समझाया। गुणस्थान के माध्यम से जीव के जीवन विकास का स्वरुप बताया।

2- उच्च कोटि के गणितज्ञः- श्रीवीर प्रभु ने संख्यात-असंख्यात एवं अनंत संख्याओं का निरुपण अनुयोगद्धार सूत्र में किया। इतना ही नहीं संख्या 2 से लेकर 194 तक की संख्याओं के नाम बताए। विनीत महावीर ने 194 वीं संख्या का नाम शीर्ष पहेलिका बनाया।

3- महान दार्शनिकः- श्रीवीर प्रभु के समय अनेक पाखण्ड मत मौजूद थे, उनको निरस्त किया। उन्होंने 363 पाखाण्ड मतों का स्वरुप क्रियावादी अक्रियावादी, विनयवादी, अज्ञानवादी के रुप में विभिन्न कर मिथ्यात्व का निकंदन किया। षट् दर्शनों का स्वरुप बताकर जैन धर्म की अनुत्तरता समझाई।

4- महान वैज्ञानिकः- आशु प्रज्ञ श्रीमहावीर ने

✻ श्रीमती प्रभा जैन, देवास

जीवों के वर्गीकरण गति, जाति, शरीर, संहनन, संस्थान स्थिति आदि का विस्तार से जीवाभिगम सूत्र में किया है। संसार के छोटे से छोटे प्राणी की चेतना का अहसास कराया। पानी, हवा, अग्नि, वनस्पति, पृथ्वी आदि में भी जीव है, इसे वैज्ञानिक रुप में विश्लेषित किया।

5- महान भौतिक शास्त्रीः- प्रभु श्रीमहावीर महान भौतिक शास्त्री भी थे, उन्होंने अजीव द्रव्य का भी विस्तृत वर्णन किया। अजीव के स्कन्ध, देश, प्रदेश, परमाणु इन चारों के वर्ण, ग्रंथ, रस, स्पर्श आदि भेद और वर्णणाएं भगवती सूत्र और पन्त्रवणा शास्त्रों में बताई।

6- प्रभु स्वास्थ्य रक्षकः-श्री वीर प्रभु ने मानव के लिए, स्वास्थ्य की रक्षा के लिए जैन धर्म में आयंबिल, एकासना, उपवास को महत्व दिया। आयंबिल द्वारा बी.पी. कंट्रोल, घी, मीठे विगय के त्याग से केलोस्ट्रोल नियंत्रण हो सकता। भूख से कम खाना के नियम से उवोदरी तप हो जाता है।

7- उच्चकोटि के भूगोल वेत्ता :- लोक, अलोक, जंबुद्वीप, एरावत क्षेत्र, भरत क्षेत्र, महाविदेह सभी का वर्णन किया। प्रभु ने ऋतु, तिथि, पर्व, संवत्सर आदि का भी ज्ञान दिया।

8- महान डॉक्टर, अन्वेषक, वैज्ञानिक :- प्रभु के स्वयं के जीवनकाल में हरिणममेषी देव द्वारा गर्भ स्थानान्तरण प्रक्रिया आज टेस्ट टयूब बेबी आदि पूर्णत सिद्ध होती है। रेड़ियो, ट्रांजिस्टर, टेलीफोन के अविष्कार ने भाषा वर्गणा के पुद्गलों की ताकत को सिद्ध कर दिया है।

9- महान कालदर्शीः- आत्मदर्शी श्रीवीर प्रभु ने काल की गणना, काल का मापदण्ड, काल का अविभाज्य अंश ''समय'' इकाई का निरुपण किया। आज के वैज्ञानिक भी वीर प्रभु के बताए काल, मापदण्ड को मानने को तैयार है।

10-ज्ञान के पूंजः- क्षमा के सागर प्रभु श्रीमहावीर द्रव्य क्षेत्र, काल, भाव को जाननेवाले संसार के समस्त जीवों के भूत, भविष्य, वर्तमान के जानकार, समस्त लोक के छह द्रव्यों के जानकार लोक, अलोक के प्रभाव को बताने वाले ज्ञान के पूंज थे।

ऐसे त्रिलोकीनाथ भगवान श्रीमहावीर के चरणों में मेरा कोटि-कोटि वंदन, नमन, अभिनंदन।

शुद्ध आहार हो तो बुद्धि निर्मल हो

आहार का प्रभाव व्यापक है। शरीर-स्वास्थ्य हो या फिर मानसिक स्थिति, दोनों में ही आहार के अनुरुप उतार-चढ़ाव आता है। यह ऐसी सच्चाई है, जिसका अनुभव हमारे ऋषियों, शरीर शास्त्रियों के साथ हम सबने जीवन में अनेक बार किया है और आज भी करते रहे हैं। इसी अनुभव के आधार पर कहा जा सकता है कि- आहार में न केवल रस-रक्त-निर्माण करने की क्षमता है, बल्कि यह चिंतन के स्तर को भी प्रभावित करता है। शुद्ध, सात्विक एवं प्राकृतिक आहार केवल शरीर को स्वस्थ नहीं रखता, मन को शांत एवं स्थिर बनाता है तथा अंतःकरण को पवित्र बनाता है।

ग्रंथों में शुद्ध एवं सात्विक आहार के व्यापक प्रभाव का उल्लेख किया गया हैः-

आहारशुद्धौ सत्वशुद्धिः सत्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः।
स्मृतिलम्भे सर्वग्रंथीनां विप्रमोक्षः॥

''आहार के शुद्ध होने से अंतःकरण की शुद्धि होती है, अंतःकरण के शुद्ध हो जाने पर बुद्धि निर्मल होती है। बुद्धि निर्मल होने से सब संशय और भ्रम मिट जाते हैं और तभी मुक्ति का दिव्य आस्वाद प्राप्त किया जा सकता है।

इसी तत्व को दृष्टिगोचर करके भारतीय मनीषियों, आयुर्वेदाचार्यो ने आहार को परिभाषित एवं इसकी महत्ता को प्रतिपादित किया है। आयुर्वेद संहिताओं के अनुसार आहार शब्द का सामान्य अर्थ है जो द्रव्य निगला जाए। विभिन्न प्रकार के भोजन द्रव्यों में निगलने की क्रिया समान होने के कारण इन सबका समावेश आहार शब्द में हो जाता है। चरक सूत्र (25/35) के मतानुसार कोई भी पदार्थ जब ग्रहण किये जाने पर जीवनीशक्ति उत्पन्न करें, धातुओं का पोषण करें, उनकी रक्षा करें, तथा क्षतिपूर्ति करें, जीवन की प्रक्रिया को संयमित करें तथा शरीर के महत्वपूर्ण अंशांशों की उत्पत्ति में सहायक हो, उसे आहार कहते हैं। ऐसा आहार शरीर को पोषण एवं शक्ति प्रदान करता है। इसके साथ ही यह मन को शांत बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। इसी कारण आचार्य सुश्रुत (24/60) ने स्पष्ट किया है कि आहार से शरीर का पोषण होता है तथा बल, वीर्य, वर्ण, आयु, ओजस और उत्साह की उपलब्धि होती है। अतः आहार का मुख्य उद्देश्य शरीर क्षीणता की पूर्ति करना और उसकी वृद्धि करना तथा मानसिक विचारतंत्र को पुष्ट करना है।

आचार्य सुश्रुत ने आहार के गुण-धर्म की विशद विवेचना की है। उनके अनुसार आहार के 12 गुण है। चरक के मतानुसार आहार के 20 गुण हैंः-

गुरुलघुशीतोष्णस्निग्धरुक्षमंदतीक्ष्णस्थिरसरमृदुकठिन-विशदपिच्छिलश्लक्ष्णसूक्ष्मस्थूलसांद्रद्रवानुगमनात्॥

- चरक, 25/35

अर्थात् आहार के गुण हैं- गुरु-लघु, शीत-उष्ण, स्निग्ध-रुक्ष, मंद-तीक्ष्ण, स्थिर-सर, मृदु-कठिन, विशद-पिच्छल, श्लक्षण-खर, सूक्ष्म-स्थूल और सांद्र-द्रव।

इनके अतिरिक्त मानसिक गुणों के आधार पर गीताकार भगवान कृष्ण ने आहार को सात्विक, राजसिक और तामसिक तीन वर्गो में बांटा है-

आयुः सत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः।
रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्त्विकप्रियाः॥

आयु, बुद्धि, बल, आरोग्य, सुख और प्रीति को बढ़ाने वाले एवं रसयुक्त, चिकने और स्थिर रहनेवाले और स्वभाव से ही मन को प्रिय लगें, ऐसे भोज्य पदार्थ सात्त्विक आहार कहलाते हैं। ऐसे आहार का सेवन करने से मनुष्य का स्वास्थ्य उत्तम बना रहता है और उसका मन भी सद्विचारों एवं सद्चिंतनों से ओत-प्रोत रहता है। इसके विपरीत गरिष्ठ, तीखा, तला-भुना, डब्बाबंद बासी आहार राजसिक और तामसिक श्रेणी में आते हैं। गीताकार कहते हैं-

कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरुक्षाविदाहिनः।
आहार राजसस्येष्टा दुःखशोकामयप्रदाः॥
यातयामं गतरसं पूति पर्युषितं च यत्।
उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम्॥

अर्थात् कडुए खट्टे, अधिक नमकीन, अति गरम, तीक्ष्ण, रुखे, दाहकारक एवं दुःख, चिंता और रोगों को उत्पन्न करने वाले आहार राजसिक कहलाते हैं। बासी, रसरहित, दुर्गधयुक्त, अधपके, उच्छिष्ट (जूठे) और अपवित्र भोजन तामासिक आहार के अंतर्गत आते हैं। नशीली चीजें, मादक वस्तुएं, पान-तंबाकू,जरदा-गुटका आदि अगणित चीजों को आज मुख्य आहार मान लिया गया है। बड़ी ही आसानी से लोग खाने के आगे-पीछे इनका उपयोग करते दिखाई पड़ते हैं। यह आहार आज के तथाकथित उंची सोसायटी के लोगों के जीवन का मुख्य अंग बन गया है। ये आहार भले ही जीभ को स्वाद प्रदान करते हों, परन्तु शरीर में अगणित रोगों को जन्म देते हैं। इनमें पर्याप्त पोषक तत्वों का प्रभाव होता है। इस कारण इसमें से अधिकांश को समय से पूर्व जरा-जीर्णता के साथ ही अनेकानेक बीमारियों का शिकार बनना पड़ रहा है।

इनके निदान एवं निराकरण का एक मात्र अवलंबन है- प्राकृतिक एवं सात्विक आहार का सेवन। प्रख्यात आहारविद् हेंस एंडरसन के अनुसार वर्तमान फास्ट फूड, जंक फूड के धीमे विषपान से बचकर प्राकृतिक आहार की ओर लौटा जा सके तो कोई कारण नहीं कि स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन का लाभ न उठाया जा सके। एंडरमेन ने अपनी अनुसंधानपूर्ण कृति **''दि न्यू फूड थेरेपी''** में इस तथ्य को स्पष्ट करते हुए कहा है कि- प्राकृतिक आहार, जैसे अन्न, फल, सब्जियों में आवश्यक पोषक तत्व होता है, जो शरीर को स्वस्थ रखता है। हरी शाक-सब्जियों एवं फलों के क्लोरोफिल युक्त रस को **''ग्रीन ब्लड''** के नाम से संबोधित किया जाता है। इसमें पोषण प्रदान करने एवं स्वास्थ्यवर्द्धन करने वाले सभी प्रकार के तत्वों का समावेश होता है। आहारविदों के अनुसार प्राकृतिक खाद्य पदार्थ, मौसमी फल एवं हरी शाक-सब्जियां शरीर एवं मस्तिष्क को पोषण देती है। अतः उपर्युक्त खाद्य पदार्थों को उनके प्राकृतिक रुप में लेना चाहिए। इनमें प्रमुख हैं- पालक, पपीता, केला, आलू, सेब, टमाटर, गाजर, आँवला आदि।

पालक क्लोरोफिल का उत्तम स्रोत है। इसमें मैग्नीशियम भी प्रचुर मात्रा में मिलता है। यह रक्त को शुद्ध करता है और सूजन एवं जलन को कम करता है। पपीता विटामिन ''सी'' का अच्छा स्रोत है। यह अमीना एसिड नियंत्रित करता है। तनाव की स्थिति में विटामिन ''बी'' नष्ट हो जाता है। इस कमी को पूरा करने के लिए संतरा, नींबू, टमाटर, मूली, गाजर आदि का सेवन करना चाहिए। नींबू में कैल्सियम, मैग्नीशियम तथा फास्फोरस काफी मात्रा में पाए जाते हैं। ''स्कर्वी'' रोग की सर्वोत्तम दवा नींबू है। गठिया और तीव्र ज्वर में भी नींबू के नियमित रुप से सेवन करने से लाभ मिलता है। नींबू को विधिकारक प्रयोग किया जाए तो इससे पचासों रोग दूर हो सकते हैं।

टमाटर आहार का मुख्य अंग एवं आदर्श पदार्थ है टमाटर के गुणों के बारे में प्रसिद्ध आहारशास्त्री महात्मा गांधी ने प्रकाश डाला और बताया है कि यह स्वास्थ्य के लिए लाभदायक विटामिन और क्षारों को प्राप्त करने का बड़ा अच्छा साधन है। इसमें विटामिन ए, बी और सी पाए जाते हैं। टमाटर मोटापा, पेट के समस्त रोग, कब्ज, दस्त आदि में लाभ पहुंचाता है। अमेरिका के कोलंबिया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. शर्कन का कहना है कि इसमें नींबू और संतरा के बराबर विटामिन होता है। मक्खन में जितना विटामिन ए होता है, उससे अधिक टमाटर में पाया जाता है।

गाजर सस्ती और गुणों की दृष्टि से बहुमूल्य है। इसमें लोहे का अंश अन्य खाद्य पदार्थों की अपेक्षा बहुत अधिक होता है। इस कारण यह रक्त को शुद्ध करती है और हीमोग्लोबिन को बढ़ाती है। हीमोग्लोबिन का संबंध शारीरिक सौंदर्य एवं प्रसन्नता से है। इसलिए गाजर चेहरे की आभा और आंखों की चमक को बढ़ा देती है। एक प्रसिद्ध अन्वेषण से प्राप्त निष्कर्षों से पता चला है कि एक महीने तक कच्ची गाजर खाने और उसका रस पीने से चेहरे की त्वचा कोमल हो जाती है और इसकी चमक बढ़ जाती है। अतः अन्वेषणकर्त्ताओं की मान्यता है कि गाजर चेहरे पर लगाए जाने वाले किसी भी सौंदर्य प्रसाधन एवं कॉस्मेटिक्स से अधिक उपयोगी है।

आलू पोटैशियम और विटामिन 'बी' कॉम्पलेक्स का अच्छा स्रोत है। चिंता एवं तनाव के दौरान विटामिन 'बी' की कमी देखी गई है। ऐसी अवस्था में दवा के साथ आहार में आलू का सेवन लाभदायक हो सकता है। सेब में विटामिन 'बी-1' फास्फोरस एवं पोटैशियम पाए जाते हैं। ये तत्व स्नायविक संस्थानों को सुदृढ़ करते हैं।

इसके अलावा अंकुरित अन्नों का प्रयोग बड़ा ही लाभदायक सिद्ध हो रहा है। आजकल चिकित्सक एवं आहारविद् स्वास्थ्य की गंभीर समस्या का समाधान एवं निदान खोजने में लगे हैं। सुप्रसिद्ध चिकित्साविज्ञानी डॉ. राल्फ वर्चर ने अंकुरित अन्नों की उपादेयता पर अनेक प्रयोग किये हैं। उनके अनुसार इन अन्नों में छह प्रकार के औषधीय तत्व प्राप्त होते हैं, जो रोगकारक विषाणुओं को नष्ट करने के साथ ही जीवनीशक्ति का भी अभिवर्द्धन एवं विकास करते हैं। इनके 92 प्रतिशत तत्वों को आँतें अवशोषित कर उसे रक्त मांस, मज्ञा आदि के निर्माण योग्य बना देती है। यह बड़ा रोचक तथ्य है, क्योंकि पके हुए आहार का मात्र 35 प्रतिशत भाग ही जीवनीशक्ति बढ़ाने वाली प्रक्रिया में प्रयुक्त पाता है। इसमें न केवल मानसिक तनाव दूर होता है, वरन कैल्सियम पोटैशियम, सोडियम, मैग्नेशियम जैसे तत्वों की समुचित उपलब्धता के कारण हृदय की कार्यक्षमता भी बढ़ जाती है और स्नायुतंत्र सक्रिय बने रहते हैं। इस प्रकार प्राकृतिक, सात्विक और शुद्ध आहार शारीरिक स्वास्थ्य और विचार-चिंतन को तुष्ट-पुष्ट करते हैं। ऋषि मान्यता है कि हमें ऐसा आहार ग्रहण करना चाहिये, जिसे देखकर मन प्रसन्न होता है, उसे खाते हुए पाचक अंगों से पर्याप्त परिमाण में पाचक रस निकलें और उसका परिपाक अच्छी तरह हो जाए। भोजन को शांत और प्रसन्न भाव से भगवान का नैवेद्य मानकर ग्रहण करना चाहिए। भोजन के महत्वपूर्ण काल में ये भाव और विचार आहार के पौष्टिक तत्व के समान बल्कि इससे अधिक तृप्ति-तुष्टिदायक होते हैं। अतः हमें आहार की शुद्धता के साथ इसे ग्रहण करते समय विचार और भाव को भी पवित्र-पावन बनाए रखना चाहिए।

उपासना और अध्यात्म के सागर वचन सिध्द पूज्यपाद
आचार्य देवेश श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी महाराजा

जिसने ब्रह्मत्व की उपलब्धि हेतु राग-द्वेष आदि अन्तरंग तथ वस्त्रादि ब्राह्य परिग्रह का त्याग करके विशुद्ध संयम स्वीकार किया, जिसका यश सूर्य की किरणों की भांति पूरे जैन जगत में फैला हुआ है जो अतीत के अध्यात्म प्रधान महान आत्माओं के पदचिन्हों का अनुगमन कर रहे है जो अत्यन्त सहज भाव से अपनी कठोर और क्रमिक साधना के माध्यम से न केवल जनमानस को आंदोलित कर रहे है वरन शिखार पुरुषों के मानसिक सम्वेग और बुद्धिजीवियों के चित्र को स्थिर सतह पर ले जाने में सतत् प्रयत्नशील है ऐसा बहुआयामी व्यक्तित्व, भगवान श्रीमहावीर की भांति चिंतन प्रखर एवं उदार, महान कर्मयोगी सन्त साधना में तल्लीन संत अपने भीतर शोक सन्तप्त मानवता के कष्ट निवारण की खोज करता बेसुध मन की गहराईयों तक पैठ जाता और फिर बिना किसी के झकझोरे दुःख और दरिद्रता के महासगर में डूबी जनता के लिय संदेश लेकर बाहर झांकता। सम्भवतः भारत भविष्य के प्रति, राष्ट्र की आर्थिक, सामाजिक,और नैतिक दिशाओं के प्रति जागरुक यह महान संत कोई और नहीं बल्कि इस शताब्दी के अनूठे अध्यात्मिक भाष्यकार, प्रशांतमूर्ति, वाणीभूषण गुरु भक्ति के अमर पुण्य, वचन सिध्द पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी महाराजा है।

गुजरात के बनासकांठा जिला के वावनगर में विक्रम संवत् 1998 दिनांक 14-4-1942 के एक जैन परिवार में पिता श्री भूदरभाई माताश्री मणी बहन के परिवार में एक तेजस्वी बालक का जन्म हुआ। जन्म नाम सेवंतीभाई रखा गया। बालक सामान्य बच्चों से अलग हटकर जीने वाला था परिवार पर व्रजमय घटना ने बालक को और आध्यात्मिक बना दिया। पिता श्री भूदरभाई जंगली क्षेत्र में एक कुत्ते की जान बचाने के प्रयास स्वयं गोली लगने से घायल हो गये और श्री भूदरभाई का जीवन पूर्ण हो जाने से परिवार में दुःख का पहाड़ टूट पड़ा। सेवंतीभाई में बदले की भावना के स्थान पर गोली मारने वाले को क्षमा करने के साथ आप में संयम के भाव तीव्र रुप से जाग्रत हो गये। 14 वर्ष की वय में आपश्री सागर समुदाय के पूज्यपाद गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री देवेन्द्रसागर सूरीजी महाराजा के सम्पर्क में आये और परिवार में संयम का दीप प्रज्ज्वलित कर दिया। विक्रम संवत् 2012 की वैशाख सुद-3 दिनांक 13-4-1956 में को आपश्री मुनिराज श्री नरदेवसागरजी के रुप में दीक्षित हुए। जैन समाज के प्राण बन चुके वचन सिध्द पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी महाराजा ऐसे प्रसिद्ध मानवतावादी सन्त है जो मानवीय संबंधों के व्यवहारिक विचारक तथा धार्मिक-आध्यात्मिक भावनाओं से परिपूर्ण तो है ही साथ ही उनके विशाल हृदय में राष्ट्रभक्ति, जीव मात्र के प्रति करुणा और कोमल सम्वेदनाओं से ओतप्रोत वात्सल्य और समानता का अथाह सागर उमड़ रहा है। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन से गहरा संबंध रखने वाले काम, क्रोध, मोह, लोभ और अहंकार पांच ऐसे शब्द है जिनसे व्यक्ति मृत्यु के बाद छुटकारा पाता है परन्तु आचार्य श्रेष्ठऐसे कठोर साधक और तपस्वी है जिन्होंने अपने जीवनकाल में ही न केवल इन पर नियंत्रण रखा बल्कि उसके अनुरुप अपना आचरण दिखाने में भी पूर्णतया सफल हैं। वे जैन संस्कृति के गौरव को बढ़ाने के लिए अपना सर्वस्व अर्पण करने वाले ही नहीं बल्कि उनका जीवन ही जैन संस्कृति का पर्याय है।

नैतिक क्रांति के पुरोधा वचन सिध्द पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी महाराजा ने भारतीय परिस्थितियों को ध्यान में रखकर मानवता को ही अपने विचार का प्रमुख बिन्दु बनाया है। उनका यह स्पष्टऔर दृढ़मत है कि विश्व की समस्त प्रगति का केन्द्र बिन्दु मानव ही है, मनुष्य ही असीम और अनन्त क्षमताओं का स्रोत है। मोह-माया के लौह-आवरण के कारण वह अपनी सशक्तता और महानता से परिचित नहीं हो पाता। मनुष्य के सर्वांगीण विकास पर ही किसी राष्ट्रया समाज का विकास निर्भर करता है और मानव के सर्वांगीण विकास पर ही किसी राष्ट्रया समाज का विकास निर्भर करता है और मानव के सर्वांगीण विकास में उसकी भौतिक प्रगति के साथ-साथ उसकी नैतिक और अध्यात्मिक प्रगति अपेक्षित है। इस प्रकार पूज्य गुरुदेव बहुत ही विवेकपूर्ण तरीके से पश्चिमी विचारधारा एवं संस्कृति का भारतीय

संस्कृति से समन्वय स्थापित करने का पूर्णतया प्रयास कर रहे हैं।

पूज्य गुरुदेव का दृढ़ विश्वास है कि मानव के विकास के लिए उसकी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति तो आवश्यक है ही किन्तु यदि उसकी चेतना को जागृत कर दिया जाए तो विकास की गति को और अधिक तीव्र किया जा सकता है। चेतना मानव में पशुवत आचरण का निषेध करती है इसलिए मानवीय चेतना का विकास आवश्यक है। मानव को मानव बनाने के लिये शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का समन्वय तथा उसका विकास आवश्यक है। मानव को मानव बनाने के लिए शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का समन्वय तथा उसका विकास परम आवश्यक है तभी वह परम सत्य के निकट पहुंच सकता है क्योंकि जब व्यक्ति सत्य के रुप में शिखर को देखने लगता है तब उसमें शुचिता, सात्विकता और निर्मलता जैसे देवीय गुण स्वतः प्रादुर्भूत होने लगते है, उसमें अन्याय का विरोध करते हुए न्यायिक प्रतिष्ठा की अपूर्व शक्ति स्वतः उद्भूत होने लगती है। फिर ऐसा व्यक्ति विषमतम परिस्थितियों में भी अपने पथ से कभी विचलित नहीं हो सकता।

मंझला कद, ताबीय वर्ण, तप से प्रदीप्त प्रशस्त ललाट, पारदर्शी नयन, मनोहरी मुद्रा और चुम्बकीय आकर्षण से युक्त बाह्य व्यक्तित्व, आंतरिक शक्ति से सर्व शक्तिमान अलौकिक शिखर पुरुष, अपार मानवीय करुणा और सबके प्रति आत्मीयता अपनत्व, स्नेह वात्सल से भरे पूज्य गुरुदेव अपनी साधना, तप के माध्यम से विश्व बंधुत्व और विश्व कल्याण का संदेश पूरे विश्व को प्रदान कर रहे हैं। अपार मानवीय करुणा के स्रोत वचन सिघ्द पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी महाराजा ने अपें विचारों से धर्म को मानव धर्म के सिंहासन पर प्रतिष्ठित किया और लोक सुधार का साधन माने जाने वाले धर्म को इहलोक और परलोक दोनों को समान स्तरीय स्थान देकर वर्तमान के महत्व को समझाने का महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। उपासना तक सीमित हो जाने वाले धर्म के स्थान पर आचरण की पवित्रता पर बल दे रहे हैं। मात्र उपदेश का माध्यम बन चुके धर्म के स्थान पर सहकारी की महत्ता, उसके उपयोग और उसके प्रायोगिक पक्ष का अमृत जन-जन को पिला रहे हैं। धार्मिक कट्टरता से सांप्रदायों के बीच खुदी खाई को सह अस्तित्व और समन्वय की भावना से पाट दिया है।

एक विशेष धर्म सम्प्रदाय, परम्परा के आचार्य, पक्षधर पक्षपोषक होकर भी अन्य धर्मों के प्रति समन्वय तथा सहिष्णुता की भावना उनके उदार और व्यापक दर्शन, बोध तथा चिंतन की पहचान रही है। पूज्यश्री ने पुरानी अंधविश्वासी मान्यताओं पर बड़े ही सरल भाव से प्रहार किया है। धर्म को जटिलता से निकालकर उसे सम्यक्, आचरणीय, लगन, नैतिकता, उपासना और अध्यात्म के माध्यम से इस प्रकार जोड़ा कि धर्म सरलतम अनुभव होने लगा है क्योंकि पूज्यश्री का दृढ़ विश्वास है कि सामाजिक कुरुढ़ियों से समाज इतना जर्जर और सत्वहीन बन जाता है कि वह युग की किसी भी चुनौती को झेल नहीं सकता। उनका कहना है कि- आज अंधविश्वासों की चौखट में पनपने वाली न जाने ऐसी कितनी कुरुढ़ियां है जो सामाजिक विकास के आगे बाधाएं बनकर खड़ी हो जाती है। यद्यपि परम्परा परम पुरुषार्थ है पर जहां यह विकास में रोढ़ा बन जाती है वहां इसे समाप्त कर दिया जाना चाहिए।

पूज्य गुरुदेव का कहना है कि- हिंसा के कारणों को समझे बिना अहिंसा का पाठ पढ़ाना व्यर्थ है। गांव-गांव, नगर-नगर पदयात्रा के दौरान आम जनता से मिलने के बाद उन्होंने यही निष्कर्ष निकाला है कि- सही ज्ञान के बगैर हिंसा का समाधान नहीं हो सकता, दूसरे पश्चिमी संस्कृति के अंधे अनुकरण से समस्त सामाजिक मर्यादाएं नष्ट हो रही हैं। यही कारण है कि जिस संस्कृति और सभ्यता पर प्रत्येक देशवासी को गर्व होता था आज वह तार-तार हो रही है। बेहयाई का नंगा नाच हो रहा है। पश्चात्य संस्कृति से अशुभ कल्पनाएं पनप रही है और अशुभ कल्पनाएं ही भय की जननी है।

ऐसे मोक्ष पथ के महान पथिक, आचार्य श्रेष्ठ परम पूज्य गुरुवर वचन सिघ्द पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी महाराजा आगामी जन्म दिवस पर मैं उनके स्वस्थ एवं दीर्घ-जीवन की कामना करते हुए उनसे करबद्ध विनंती करता हूं कि वे मुझे भी श्रीचरणों में स्थान देकर ऐसा आर्शीवाद प्रदान करें कि मैं भी सम्यक ज्ञान, चारित्र और दर्शन की आराधना में सतत् प्रयत्नशील रहूं।

22 श्रीसंघ में वर्षीतप की आराधना:-

पूज्यपाद वचनसिद्ध जैनाचार्य श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी म.सा. ने अपने चुस्त संयम जीवन का निर्वाहन करते हुए देशभर के श्री संघों में निग्रंथ निर्मोही संत के रुप में

पहचान बनाई है, उच्च चारित्र धर्म की रक्षा करते हुए देशभर के 22 श्री संघों में आपश्री ने अभी तक वर्षीतप आराधना करवाई है। इस बार उज्जैन में आपश्री की प्रेरणा और अमृत निश्रा में सामुहिक रुप से वर्षीतपाराधना में 108 से अधिक आराधक जुड़े है, आराधना का मंगल शुभारंभ 15 मार्च 2023 को हुआ है। **वर्षीतप आराधना में पूज्यश्री ने असीम कृपाकर डॉ. सुभाष जैन, आगमोद्धारक परिवार को मुख्य लाभार्थी का लाभ देकर पूज्यश्री ने उपकृत किया है।**

आयंबिल तपस्वी मुनिराज श्री पद्म कीर्ति सागरजी म.सा. :-

पूज्यपाद आचार्यश्री की सेवा में आपश्री के सुशिष्य आचार्य चन्द्रकीर्तिसागरसूरीजी म.सा. के सुशिष्य 98 ओली आराधना के आराधक मुनिराज श्री पद्मकीर्तिसागरजी म.सा. सतत् क्रियाशील रहते हुए गुरु आज्ञा का पालनकर अपने संयम जीवन को उज्जवलता प्रदान कर रहे है। 82 वर्षीय गुरुदेव की सेवाभक्ति के साथ हर कार्य गुरु आज्ञा से करने वाले मुनि भगवंत बहुत ही सहज, सरलता से धर्मिष्ठों से व्यवहार करते है। किसी प्रकार आडंबर स्वीकार नहीं करते हुए गुरु आज्ञा को ही सर्वोच्च मान देते हुए संयम जीवन जी रहे है। आपश्री के दीर्घ संयम जीवन और 100 ओली शीघ्र पूर्ण हो इस भावना से आपको सादर शुभ कामना।

वचनसिद्ध जैनाचार्यः-

पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी महाराजा उस पीढ़ी के संयम धारक महंत है जहां सिर्फ आत्म कल्याण और जगत के कल्याण का भव ही मुख्य रहा है। चमक दमक, बाजे गाजे, आबंडर और धन से दूर रहनेवाले आचार्यश्री ज्योतिष्य के ज्ञाता होने के साथ 67 वर्ष के संयम जीवन को उच्च कोटी से पालन करते हुए अपनी जीव्हा का उपयोग सिर्फ सत्य के लिये ही करते है सही कारण है की आपश्री के द्वारा कही गई बात सिद्ध हो जाती है। अनेक श्री संघों, श्रावकों से आपन जो कहा वह उसी रुप में पूर्ण होने से आपको वचन सिद्ध के विरुद् से जाना जाता है।

संदेशः- *प्रसिद्ध आनुवांशिकी विद डॉ. हर गोविन्द खुराना भारतीय मूल के वैज्ञानिक हैं। वैसे, अब वे अमेरिकी नागरिकी हैं। 1974 में जब वे भारत आए थे, तो आकाशवाणी के एक संवाददाता ने उनसे युवा पीढ़ी के लिये संदेश मांगा। डॉ. खुराना ने माइक पर बोलते हुए कहा- **''कड़ी मेहनत करो।''** उनके इस संक्षिपत वक्तव्य से संवाददाता बहुत निराश हुए। जब उसने खुराना से कहा कि यह संदेश प्रसारण के लिहाज से बहुत छोटा है तो वह बोले- **''अच्छा हम कहते हैं कि उनको बड़ी मेहनत करनी चाहिये।''***

उपयोगो लक्षणम्

इस जगत में ''उपयोग'' का वरदान सिर्फ जीव को ही मिला है। उपयोग के कारण ही जीव सबसे भिन्न है। धर्मास्तिकाय और अधर्म। स्तिकाय आत्मा के जितने ही प्रदेशवाले है और पुद्गल से अलिप्त भी है, परन्तु बेचारे जड़ है, उपयोग शून्य है।

उपयोगो लक्षणम्। उपयोग यह जीव को मिला हुआ अनमोल वरदान है। लेकिन सबसे महत्व की बात यह है कि -इस वरदान का हम श्रेष्ठ उपयोग करते है या कनिष्ठ? अच्छी चीज हो लेकिन उसका उपयोग गलत रीति से हो तो? चंदन के वृक्ष से कोई कोयले बनाये तो? चिंतामणि रत्न से कोई कौआ उड़ाये तो? कल्पवृक्ष के पास जाकर कोई गलत इच्छा करें तो? सुना है कि- एक भूखा आदमी कल्पवृक्ष के नीचे पहुंचा, वहां उसने भोजन-पानी की इच्छा की, तो तुरन्त सुन्दर स्वादिष्ट भोजन मिल गया। यह देखकर वह घबरा गया और मन में विचार आया कि यहां राक्षस तो नहीं? और उसी वक्त राक्षस हाजिर हो गया। फिर विचार किया- यह मुझे खायेगा तो नहीं? और राक्षस ने उसे, उसी वक्त खा लिया। कल्पवृक्ष जैसा उत्तम वरदान प्राप्त होने पर भी उसके लिये वह अभिशाप बन गया। आर्शीवाद अभिशाप में परिवर्तित हो जाय यह इसका नाम।

आज हमारे लिये भी ऐसा ही बना है। उपयोग हमको आर्शीवाद के रुप में प्राप्त हुआ है लेकिन हमने उसे अभिशाप बना दिया है। हमारे उपयोग को अगर हम प्रभु में जोड़ दे तो प्रभुमय बन जायेंगे.... लेकिन हमारा उपयोग कहां है? कभी शरीर पर, कभी धन पर, तो कभी परिवार पर हमारा उपयोग होता है। इससे क्या मिला? कर्मबंध के बिना कुछ नहीं मिला। याद रखना अगर हमारे उपयोग को दूसरे स्थान में लगायेंगे तो कर्मबंध होगा, लेकिन अगर प्रभु में जोड़ेंगे तो कर्मनाश होगा।

श्रीमहावीर भगवान- जीवन परिचय

1- च्यवन-	प्राणत देवलोक
2- गर्भ प्रवेश तिथि-	आषाढ़ शुक्ला-6
3- गर्भ साहरण तिथि-	आश्विन कृष्णा-13
4- जन्म तिथि-	चैत्र शुक्ला-13
5- जन्म स्थान-	श्री क्षत्रियकुण्ड (लछवाड़)
6- नाम-	वर्धमान महावीर देवार्य, ज्ञातनंदन, वीर, सन्मति
7- वर्ण-	स्वर्ण (तप्त स्वर्ण के समान)
8- चिन्ह-	सिंह
9- पिता का नाम-	सिद्धार्थ राजा
10-माता का नाम-	त्रिशलादेवी
11-मामा का नाम-	गणतंत्र अध्यक्ष चेटक
12-वंश-	इक्षवाकु
13-गौत्र-	काश्यप
14-पत्नी का नाम-	यशोदा
15-पुत्री का नाम-	प्रियदर्शना
16-भाई का नाम-	नन्दीवर्धन
17-बहन का नाम-	सुदर्शना
18-कुमार काल-	30 वर्ष
19-शरीर प्रमाण-	7 हाथ प्रमाण
20-गृहवास में ज्ञान-	मति, श्रुत, अवधिज्ञान
21-दीक्षा तिथि-	मार्ग शीष कृष्णा 10
22-दीक्षा स्थल-	क्षत्रिय कुण्डपुर
23-दीक्षा के समय तप-	दो दिन की तपस्या
24-दीक्षा पर्याय-	42 वर्ष
25-दीक्षा वृक्ष-	अशोक वृक्ष
26-दीक्षा परिवार-	अकेले दीक्षित
27-साधना काल-	12 वर्ष, 6 मास, 15 दिन
28-प्रथम देशना स्थल-	जिभंक ग्राम (देवों के बीच में)
29-प्रथम देशना तिथि-	वैशाख शुक्ला-10
30-द्वितीय देशना तिथि-	वैशाख शुक्ला एकादशी
31-द्वितीय देशना स्थल-	मध्यम अपापा (पावापुरी)
32-अंतिम देशना तिथि-	पावापुरी हस्तिपाल राजा की शाला
33-प्रथम पारणा स्थल-	कोल्लाग सन्निवेश
34-प्रथम पारणा दाता-	बहुल ब्राह्मण
35-केवलज्ञान तिथि-	वैशाख शुक्ला-10

36-केवलज्ञान स्थल- ऋजुबालिका नदी के किनारे
37-केवलज्ञान के समय तप-दो दिन का उपवास
38-केवलज्ञान का समय- दिन का अंतिम प्रहर
39-तीर्थोत्पति- दूसरे समवसरण में तीर्थ व संघ की उत्पत्ति
40-आयु-72 वर्ष
41-गणधर-इन्द्रभूति आदि 11 गणधर
42-केवलज्ञानी-700
43-अवधिज्ञानी-1300
44-मनःपर्यव ज्ञानी-500
45-साधु संपदा-14000
46-साध्वी संपदा-36000
47-श्रावक संख्या-1,59,000
48-श्राविका संख्या-3,18,000
49-चार्तुमास संख्या-42
50-निर्वाण कल्याण तिथि-कार्तिक कृष्णा अमावस्या
51-निर्वाण भूमि- पावापुरी (बिहार)
52-मोक्ष परिवार-एकाकी सिद्ध
53-अंतर मान-पार्श्वनाथ तीर्थंकर के परिनिर्वाण के बाद 250 वर्ष का भगवान महावीर के परिनिर्वाण का अंतर
54-मोक्षासन-पर्यकासन
55-भव संख्या-(सम्यक्त्व की प्राप्ति के पश्चात्)-27 (नयसार के भव में सम्यक्त्व की प्राप्ति)

विनय नम्रता है, निर्बलता नहीं....

__ऊंट__ की पीठ के समान जो अभिमान की कूबड़ रखता है, उसको सम्प्रदायों के प्राप्ति नहीं हो सकती। पहाड़ों पर कितना जल बरसता है पर वहां ठहर नहीं पाता क्योंकि उनमें पात्रता नहीं है। सीधी और गंभीर ''नतोदर'' अंजलि में पदार्थ रखे जाते हैं। विनम्रता सर्वत्र कुछ न कुछ प्राप्त करते हुए चलती है। जो नीचे देखकर चलते है उनकी महिमा बढ़ती है और ऊपर-ऊपर देखने वालों की गहराई के मोती नहीं मिलते, वे दरिद्र ही रहते हैं। आंधी में बड़े-बड़े वृक्ष जो झुकना नहीं जानते, टूट जाते हैं, गिर जाते है परन्तु बैंत को इससे भय नहीं, वह झुककर आत्मरक्षा कर लेती है। संसार में विनय नम्रता बहुत बड़ी सम्पत्ति है। सद्गुणों का आरम्भ विनय से ही होता है। विनय का अर्थ नम्रता है, निर्बलता नहीं।

अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ, शिवपुर तीर्थ न्यायालय-विवाद
ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में सत्यावलोकन

✻ ललित नाहटा

दिनांक 22-2-2023 के मानवीय सर्वोच्च न्यायालय नें स्पष्ट आदेश के पश्चात वर्ष 1981 से बंद श्रीअंतरिक्ष पार्श्वनाथजी के मंदिर के पट खुलने एवं प्रतिमाजी के संरक्षण हेतु लेप के पश्चात जैन धर्मावलम्बियों श्वेताम्बरों और दिगम्बरों को, श्वेताम्बर व्यवस्थाधीन इस तीर्थ में, वर्ष 1905 के समझौते के अनुसार बारी-बारी से आत्मकल्याण हेतु पूजन आरम्भ करने का मार्ग प्रशस्त हुआ। मगर आज एक पक्ष दिगम्बर समाज के नेतृत्व द्वारा गलत, भ्रामक व झूठा प्रचार कर लोगों को दिग्भ्रमित करने तथा दोनों समाज दिगम्बर एवं श्वेतांबर के सौहार्द्रपूर्ण वातावरण को समाप्त करने का कृत्सित षड्यंत्र रच रहा है, जो विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर किये जा रहे गलत प्रचारों से स्पष्ट हो रहा है। यह वही नेतृत्व है जो वर्ष 1929 में प्रीवी कौंसिल के निर्णय के पश्चात वर्ष 1959 में झूठा मुकादमा कर, वर्ष 1981 से मंदिर में तालाबंदी करवा कर सम्पूर्ण जैन समाज को श्रीअन्तरिक्ष पार्श्वनाथ परमात्मा के पूजन से वंचित रखने का अक्षम्य अपराधी है।

यह वही नेतृत्व है जो श्री सम्मेत शिखरजी तीर्थ में भूगर्भ से प्राप्त 19 प्रतिमाएं, जिनमें 18 पूजनीय थी, का सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में श्वेतांबर और दिगम्बर मंदिर में 9-9 प्रतिमाएं, पूज्य आचार्य श्री सुशीलसूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में प्रतिष्ठित होने के पश्चात और पूजन आरंभ होने के बाद ''भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ कमेटी'' ने आवेदन देकर इन 18 पूजित प्रतिमाओं को उठवा कर गिरिडीह कलेक्टर के मालखाने में, बोरों में बन्द करवा कर रखने का जघन्य अपराध किया।

आज भी तीर्थंकर परमात्मा की प्रतिमाएं गिरीडीह के मालखाने में पड़ी है और घनघोर अशातना हो रही है। इन तथ्यों के आलोक में पूरे जैन समाज को सत्य हकीकत से रुबरु करवाने के लिए इस विवाद के 115 वर्षो से अधिक के इतिहास का संक्षिप्त सत्यावलोकन द्वारा समाज को अवगत करा रहे हैं, ताकि समाज सही निर्णय ले और पूरे जैन समाज में सामाजिक सौहार्द्र, जिस प्रकार दूध में पानी मिलता है, उसी प्रकार श्वेताम्बर-दिगम्बर एकता कायम रहे और विद्वेष फैलाने का प्रयास करने वालों को समूचा समाज मुंहतोड़ उत्तर दे।

सन् 1905 :- शिरपुर में श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथजी के श्वेताम्बर जैन मंदिर से परलोक पुजारियों को हटाने के लिए श्वेतांबर एवं दिगम्बर समाज के मध्य एक समझौता हुआ, जिसमें दिगम्बर मतावलम्बियों को श्वेताम्बरों के साथ बारी से तीन घंटे श्रीअंतरिक्ष पार्श्वनाथ प्रभुजी के पूजन का अधिकार दिया गया।

सन् 1908 :- श्वेताम्बर व्यवस्थापकों ने श्रीअंतरिक्ष पार्श्वनाथजी की प्रतिमा का लेप कराया। जब लेप सुख रहा था तो दिगम्बर मतावलम्बियों ने कटिसूत्र एवं कटोचा (लंगोट) को प्रतिमाजी पर से नष्ट करने या हटाने का प्रयास किया, जिससे दोनों पक्षों में विवाद आरंभ हुआ।

सन् 1910 :- उपरोक्त विवाद के न्यायिक समाधान हेतु श्वेताम्बरों ने एक दावा अकोला के न्यायालय में यह घोषित करने के लिए दायर किया कि श्रीअंतरिक्ष पार्श्वनाथजी की प्रतिमा कटिसूत्र एवं लंगोट के साथ श्वेताम्बर प्रतिमा है। इसमें किसी भी प्रकार का परिवर्तन करने का दिगम्बरों को कोई अधिकार नहीं है। श्रीअन्तरिक्ष पार्श्वनाथ मंदिर श्वेताम्बर व्यवस्थापकों द्वारा संचालित श्वेताम्बर मंदिर है।

सन् 1923 :- अकोला न्यायालय के फैसले के पश्चात अपीलीय न्यायालय जुडीशियल कमिश्नर नागपुर ने निम्नलिखित फैसला दिया।

"Be declare that the Shwetambaris are entitled to the exclusive managment of the temple the image of Shri Antariksha Parshwanath Maharaj at Kasba Shirpur, with katisutra, kardora and lape, and that they have the right to worship that image with chakshu, tika and mugut and to put ornaments over the same in accordance with their vustom. That the Digambaris have a right of worshipping the image in accordance with the orrangement made in 1905 without chakshu, tika and mugut or ornaments, but are not to remove or interfere with the kachota, katisutra and lape; we also declare that Digambari sect are permanemtly restrained from obstructing the Swetambri sect in getting the image restored to its orininal from adorned with the kachotam katisutra and plastaring the same

now and hereafter in supersession of the lower court's decree, a decree as above will now be passed. The cross-obijections are dismissed. as regards costs, we tkink it proper that each party should bear its cost."

सन् 1929 :- माननीय प्रीवी काउंसिल ने जुडीशियल कमिश्नर, नागपुर के उपरोक्त निर्णय को सही ठहराते हुए घोषित किया कि दिगम्बरों को समय-सारिणी के अनुसार पूजन का अधिकार है, प्रबंधन में उनको कोई अधिकार नहीं है। प्रीवी काउंसिल के फैसले का उक्त अंश यहां उद्धृत हैः-

Lastly, the concession of the time-table noe made by respondents does not, as it seems to their Lordships, carry with it any admission of a right on the part of the Digambaries to participate the management."

प्रीवी काउसिंल ने अपने विस्तृत फैसले में दिगम्बरों की अपील को खर्च के साथ खारिज करते हुए जुडीशियल कमिश्नर नागपुर के उपरोक्त निर्णय को सही करार दिया। अर्थात् श्रीअन्तरिक्ष पार्श्वनाथ मंदिर प्रतिमा श्वेताम्बर व प्रबंध श्वेताम्बरों का है एवं श्वेताम्बरों को प्रतिमाजी के लेप का अधिकार है। दिगम्बरों को 1905 के समझौते से प्राप्त बारी-बारी से पूजन का अधिकार है।

सन् 1934 :- दिगम्बरों ने प्रीवी काउंसिल के आदेश को स्वीकार करते हुए आवेदन दायर किया, कटिसूत्र और कचोटा के आकार (डायमेंशन) को निर्धारित करने हेतु। न्यायालय द्वारा डायमेंशन निर्धारित होने के पश्चात उपरोक्त डायमेंशन के आधार पर प्रतिमाजी का लेप का कार्य सम्पन्न हुआ।

सन् 1944 :- जिला न्यायाधीश, आकोला ने दिगम्बरों के आवेदन पर कटिसूत्र (कंदोरा) की माप खड़ी अवस्था में एक इंच, वृत्ताकार रुप में मोटाई 1/3 इंच तथा कचोटा (लंगोटा) का माप ऊपरी भाग में दो इंच एवं निचले भाग में ढाई इंच निर्धारित किया।

सन् 1947 :- हाईकोर्ट ने जिला न्यायाधीश के उपरोक्त आदेश को चुनौती देने वाली दिगम्बरों की याचिका को खर्च के साथ रद्द करते हुए टिप्पणी की कि दिगम्बर सिर्फ लड़ाई के लिए केस फाईल करते हैं। हाईकोर्ट के निर्णय का संदर्भित अंश निम्नानुसार हैः-

".....The Digamberies appear to me to have been generally litigation for sake of litigation, and their is no reason why they should not pay the cost to other side, if the decision goes against them...."

प्रतिमा का लेप का कार्य स्वीकृत रुप से 1947 में पूर्ण हुआ।

सन् 1953 :- हाईकोर्ट ने दिगम्बरों की LPA खारिज करते हुए उन पर कायमी रुप से रोक लगाई कि श्वेताम्बरों की प्रतिमा का लेप कचोटा और कटिसूत्र के साथ करने में किसी प्रकार की बाधा नहीं देंगे।

सन् 1960 :- वर्ष 1905 से 1960 तक दोनों पक्ष 1905 के समझौते के अनुसार बारी-बारी से कचोटा एवं कटिसूत्र से युक्त मूर्ति पर तथा उसके बाद 1981 तक पूजन करते रहे, मगर 1959 में जब लेप आरंभ हुआ तो दिगम्बरों ने एक दीवानी दावा दायर किया, जिसमें उन्होंने आरोप लगाया कि प्रीवी काउंसिल का निर्णय धोखाधड़ी (फ्रॉड) करके प्राप्त किया गया है। अतः वह मान्य नहीं है तथा प्रतिमाजी को दिगम्बर प्रतिमा घोषित किया जावे।

सन् 1981 :- दिगम्बरों के उपरोक्त दावे के लम्बित रहने के दौरान जब 1969 में श्वेताम्बरों ने प्रतिमाजी के संरक्षण हेतु लेप का कार्य आरंभ किया तो दिगम्बरों ने लेप के कार्य पर रोक लगाने की अर्जी दी। इस अर्जी से सभी पक्षों की सहमति से 1981 में न्यायालय ने एक आयुक्त की नियुक्ति करते हुए उनकी देखरेख में लेप के कार्य को पूरा कराने का आदेश दिया।

17-04-1981 को न्यायालय के आयुक्त की देखरेख में लेप का कार्य आरंभ हुआ। आयुक्त द्वारा अनावश्यक दखलंदाजी एवं स्पष्टतः दिगम्बरों से मिलीभगत होने का प्रमाण प्राप्त होने पर श्वेताम्बरों ने आयुक्त के खिलाफ न्यायालय में अर्जी दायर की। इस अर्जी की जानकारी प्राप्त होने पर 22-04-1981 को आयुक्त ने मंदिर में ताला लगाकर प्रतिमाजी की सुरक्षा के नाम पर चाभी पुलिस को सौंप दी और चले गये। तब से मंदिरजी बंद है। मंदिर खोलने हेतु श्वेताम्बरों के प्रत्येक कानूनी प्रयास का दिगम्बरों ने विरोध किया।

30-11-1994 दिवानी न्यायालय ने दिगम्बरों के 1960 के दावे को प्रत्येक बिन्दु पर खारिज कर दिया। दिगम्बरों ने न्यायालय से अपील दायर करने हेतु यथा-स्थिति अर्थात् प्रभुजी को ताले में बंद रखने हेतु आवेदन दिया। इस

पर न्यायालय ने यथास्थिति कायम रहने का आदेश दिया।

17-01-1995 दिगम्बरों ने दिवानी न्यायालय के उपरोक्त आदेश को अपील दायर कर चुनौती दी तथा न्यायालय से यथा स्थिति कायम रखने की प्रार्थना की। अपील सुनवाई हेतु स्वीकार करते हुए न्यायालय ने यथास्थिति कायम रखने का आदेश दिया। अर्थात् दिगम्बरों के आवेदन से प्रभुजी ताले में बन्द है।

15-12-1997 अपीलीय न्यायालय ने दिगम्बरों की अपील पूजा स्थल अधिनियम, 1991 के प्रावधानों के अनुसार रद्द कर दी।

24-12-1997 मुम्बई हाईकोर्ट में नागपुर बेंच में उपरोक्त अपीलीय आदेश के खिलाफ दिगम्बरों ने रीविजन दायर किया।

08-03-2007 मुम्बई हाईकोर्ट के नागपुर बेंच ने दिगम्बरों की रीविजन याचिका रद्द कर दी। दिगम्बरों के प्रार्थना पर सर्वोच्च न्यायालय में अपील हेतु अंतरिम यथास्थिति का आदेश दिया।

05-04-2007 सर्वोच्च न्यायालय ने दिगम्बरों के प्रार्थना पर यथास्थिति कायम रहने का आदेश दिया।

11-08-2008 सर्वोच्च न्यायालय ने दिगम्बरों की अपील सुनवाई हेतु स्वीकार करते हुए उनकी प्रार्थना पर यथास्थिति कायम रहने का आदेश दिया। अर्थात् सन् 1981 से दिगम्बरों के प्रयासों से प्रभुजी ताले में बंद हैं। यहां यह उल्लेखनीय है कि श्रीअन्तरिक्ष पार्श्वनाथ से जुड़े पांवली ग्राम मंदिर एवं बगीचे के केस में मुंबई उच्च न्यायालय के नागपुर बेंच के निर्णय को जिसमें उच्च न्यायालय ने इसे श्वेताम्बर मंदिर एवं श्वेताम्बर सम्पत्ति एवं व्यवस्था में घोषित किया था, माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने सही ठहराते हुए दिगम्बरों की अपील 02-08-2002 को रद्द कर दी।

22-02-2023 माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने दिगम्बरों की प्रार्थना पर उनके द्वारा दायर अपील को लम्बित रखते हुए परमात्मा के मंदिर को खोलने का आदेश देते हुए प्रीवी कौंसिल के निर्णयानुसार निम्नलिखित आदेश अपील के अंतिम निर्णयाधीन दियाः-

1- मंदिर एवं मूर्ति की व्यवस्था श्वेताम्बर सम्प्रदाय की रहेगी।

2- 1905 के समझौते के अनुसार दिगम्बरों को पूजन का अधिकार रहेगा, मगर वे मूर्ति के स्वरुप में किसी प्रकार की छेड़छाड़ नहीं करेंगे।

3- मूर्ति के संरक्षण के लिए श्वेताम्बर समाज को लेप का अधिकार है।

उपरोक्त तथ्यों से एकदम स्पष्ट हो जाता है कि जैसे श्री सम्मेत शिखरजी तीर्थ में भूगर्भ से प्राप्त 18 प्रतिमाओं की पूजा पाठ हो रही थी, उसे दिगम्बर नेतृत्व ने सरकारी मलखाने में बंद करवा दिया। उसी तरह से श्री अंतरिक्षजी तीर्थ में स्थित श्री पार्श्वनाथ परमात्मा की अलौकिक प्रतिमा को ताले में बंद करने का कार्य दिगम्बरी नेतृत्व ने किया था। मुनिश्री तरुणसागरजी को गुमराह कर उनसे भी मिथ्या भाषण करवा दिया। दिगम्बर नेताओं ने दोनों संतों, आचार्यश्री राजयश सूरीश्वरजी एवं मुनि श्री तरुणसागरजी के बीच हुई सहमति को मानने से इन्कार कर दिया व मुनिश्री ने दिगम्बर समाज की असहमति को श्वेताम्बर ट्रस्टियों के ऊपर थोपने का असफल प्रयास किया।

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि वर्ष 1905 से लेकर आज तक प्रत्येक न्यायालय ने श्रीअंतरिक्ष पार्श्वनाथ की प्रतिमा के स्वरुप-श्वेताम्बर स्वरुप की पुष्टि की, प्रबंधन का अधिकार एवं लेप का अधिकार श्वेताम्बर समाज का है, की पुष्टि की। साथ ही साथ दोनों समाज के मध्य इस अलौकिक प्रतिमा के पूजन हेतु वर्ष 1905 में हुए समझौते के अनुसार बारी-बारी से पूजन के अधिकार की पुष्टि की। इस निर्विवाद सत्य के न्यायालयीन पुष्टिकरण के पश्चात दिगम्बर नेतृत्व के द्वारा दोनों समाज के मध्य विवाद पैदा करने एवं समाज को अलौकिक श्रीअंतरिक्ष पार्श्वनाथ की प्रतिमा के पूजन करने के अधिकार से वंचित करने का जो षडयंत्र हो रहा है, हिंसा की धमकियां दी जा रही हैं, वह जैन धर्म सर्वस्वीकृत सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकांत आदि के सिद्धांतों का खुल्लमखुल्ला उल्लंघन कर रहे हैं। मेरी श्रीअंतरिक्ष पार्श्वनाथ परमात्मा से प्रार्थना है कि दिगम्बर नेतृत्व को सद्बुद्धि दें, ताकि निरर्थक विवाद का पटाक्षेप हो और श्वेताम्बर-दिगम्बर भाई-भाई की तरह अपनी बारी के अनुसार श्रीअन्तरिक्ष पार्श्वनाथजी का पूजन कर आत्मकल्याण कर सकें। (अप्रेल, 2009 अंक में प्रकाशित सम्पादकीय का परिमार्जित, परिवर्द्धित अद्यतन स्वरुप)

विचारों में संतुलन बनाए रखने की साधना एक दिन में नहीं हो पाती सतत अभ्यास करना पड़ता है दैहिक स्तर पर साधु बनना एक दिन का काम हो सकता है पर वैचारिक संन्यास के लिए सालों अभ्यास करना पड़ता है।

वर्ग पहेली क्रमांक-335

✻ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

1		2	■	3	4		5	
	■	6		■		■		■
7			■	8		9	■	■
	■	■	10		■	11		12
	■	13			14		■	
15			■	16		■	■	
■	■	17	18		■	19		
■	20	■		■	21		■	
22					■	23		

बाएं से दाएं:-

1- भ. महावीर के दामाद का नाम----(3)

3- रावल जैसल द्वारा स्थापित नगर--- (5)

6- तू मने भगवान इक वर--- आपी दे,
ज्यां वसे छे तू मने, त्यां स्थान आपी दे (2)

7- सामायिक का एक उपकरण ---ना (3)

8- जैसेलमेर के निकट जगवल्लभ पार्श्वनाथ प्रभु का तीर्थ ब्रह्म---र्थ (2,1)

10-किसी भी कार्य को अंजाम देने की चार विधियों (उपाय चतुष्टक) में से एक---(2)

11-बराबरी तुल्यता का पर्याय--- (3)

13-जहां से भ.वासुपूज्यजी मोक्ष सिधारे--- (5)

15-चैत्र शुक्ला प्रतिपदा कहलाती है--- तिथि (3)

16-रिश्ते में केक राजा नाना लगते थे--- प्रभु के (2)

17-मेरे सि--- रख दो दादा, अपने ये दोनों हाथ,
देना हो तो दीजिए, जनम जनक का साथ (1,2)

19-माता त्रिशला रानी द्वारा देखे गए 14 स्वप्नों में से एक--- (3)

21-तेरहवें तीर्थंकर प्रभु का नाम--- लनाश भगवान (2)

22-जिस स्थान पर तीर्थंकर के उपदेश सुनने का सभी को समाज अवसर मिले वह कहलाता है---ण (5)

23-ओसियां के निकट भ.वासुपूज्यजी का तीर्थ--- (3)

वर्ग पहेली क्रमांक-334 का परिणाम

भू	■	लो	■	शि	र	पु	र	■
म	हा	क	वि	■	पु	■	भा	वी
■	ला	■	प्र	ह	र	■	■	रा
क	र	■	■	स्ति	■	गु	णा	य
दं	■	ब	द	ना	व	र	■	त
ब	व्द	र	■	पु	■	वै	म	न
गि	■	■	अ	र	ना	■	हु	■
री	त	■	न	■	म	ल्ल	वा	दी
■	न	व	प	द	■	भी	■	क्षा

ऊपर से नीचे:-

1- चैत्र माह में आता है भ.महावीर का--- (2,4)

2- संस्कृत के एक महान कवि का नाम का--- (3)

4- बारह चक्रवर्ती में से एक--- (3)

5- भ.शांतिनाथ का एक पूर्व भव---रथ (2)

8- भ.महावीर के ससुर का नाम ---(5)

9- भ.महावीर अपने माता-पिता (त्रिशला रानी एवं सिद्धार्थ राजा) की--- संतान थे (3)

10-जब कोई नहीं आता, मेरे--- आते है,
मेरे दुख के दिनों में वो, बड़े काम आते है (2)

12-शत्रुंजय की पंचतीर्थी में शामिल सांचा सुमतिनाथ स्वामी का तीर्थ (6)

13-आचार्य सिद्धसेन दिवाकर रचित एक स्त्रोत कल्याण--- (3)

14-बाइसवें तीर्थंकर प्रभु का निर्वाण स्थल--- नार (2)

18-उत्तरप्रदेश और झारखंड प्रदेश के राजकीय फूल का नाम--- (3)

19-राजा मेघरथ और रानी मंगला के तीर्थंकर पुत्र का नाम भ.--- नाथ (3)

20-जियागंज से भागीरथी नदी पार करके चिंतामणि पारसनाथ प्रभु के इस तीर्थ पर आना पड़ता है अ---गंज (2)

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-335

*** आचार्य प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.**

प्रश्न- उत्तर का अंतिम अक्षर ''र'' आना चाहिये।

1- सर्वश्रेष्ठ हीरा। 2-भारत का स्वर्ग।
3- ढाई द्वीप के बाहर का तीर्थ।
4- भारत की सबसे ऊंची मिनार।
5- तीन घंटे के समय को दी गई संज्ञा।
6- 20 तीर्थंकरों की निर्वाण भूमि।
7- राष्ट्रीय गीत लेखक।
8- 51 गाथावाला एक प्रकरण।
9- सुमतिनाथ भ. का प्रसिद्ध तीर्थ।
10-साधु को शाता पूछने का सूत्र।
11-जैनागमों को लिपिबद्ध किये गये उस स्थली का नाम।

** उन्होंने नारी-मुक्ति को लेकर कहा कि संयम का अधिकार केवल नर को नहीं है, नारी को भी है। श्राविका और साध्वी जैसे शब्दों को पुनरुज्जीवन मिला। नारी के पग में पड़ी वासता की बेड़ियां चरमरा गई। वह पुरुष-तुल्य सामाजिक/धार्मिक धरातल पर आ खड़ी हुई है। ब्रह्मचर्य, इस तरह, सिर्फयौन संयम से संबंधित शब्द नहीं है, बल्कि वह सामाजिक समता की सशक्त आधार भूमि भी है। भगवान श्रीमहावीर ने इसीलिए ब्रह्मचर्य को तपों में सर्वश्रेष्ठकहा है- उन्होंने कहा- तवेसु वा उत्तमं बंभचेरं।*

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डालें।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-4-2023 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमशः51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी। - सम्पादक

वर्ग पहेली क्रमांक-334 के परिणाम

विजेता:-

1- भारती जैन, देवास (म.प्र.) -प्रथम
2- सुधा लोढ़ा, उज्जैन (म.प्र.) - द्वितीय

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-334 के परिणाम

सही उत्तर-

1- आतम नामकर्म, 2- लोकान्तिक देव, 3- त्रसनाड़ी, 4- माकणी मछलीयें, 5- महाविदेह क्षेत्र, 6- मोहनीय कर्म, 7- हवा, 8- संभुर्च्छिय, 9-आहारक शरीर, 10-धर्मास्तिकाय द्रव्य, 11-सुक्ष्म जीव।

नोट- एक भी उत्तरसही नहीं निकले।

ज्ञान की बात:- *नादिर शाह ने एक दफा एक ज्योतिषी से पूछा- ''मैंने एक किताब पढ़ी है- धर्मग्रंथ। उसमें लिखा है- ज्यादा देर सोना अच्छा नहीं है, लेकिन मैं सुबह दस बजे सोकर उठता हूं। आपका क्या ख्याल है ? किताब ठीक या मैं ठीक ? ज्योतिषी ने कहा- ''किताब ठीक नहीं है- आप ही ठीक हैं और मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप चौबीस घंटे सोए रहें, तो बहुत अच्छा है। नादिर शाह ने कहा- तुम्हारा मतलब ? हिम्मत का आदमी रहा होगा वह ज्योतिषी। उसने कहा- मेरा मतलब यह कि किताब अच्छे आदमियों को ध्यान में रख कर लिखी गई है- बुरे आदमियों को ध्यान में रख कर नहीं। अच्छा आदमी जितना जागे, उतना अच्छा, बुरा आदमी जितना सोए उतना अच्छा, क्योंकि वह जितनी देर सोए, उतनी देर दुनिया के लिये वरदान है। जितने देर जागे उतनी देर उपद्रव होगा ही कुछ।*

नादिर शाह जागे और उपद्रव न हो- ऐसा नहीं हो सकता। अज्ञानी के हाथ में अज्ञान ही अच्छा है। अज्ञानी के हाथ में ज्ञान खतरनाक है। ज्ञानी के हाथ में अज्ञान भी खतरनाक नहीं है, ज्ञान की तो बात ही क्या है।

सूचना- अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशः तीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रुपये 31/-, 21/-, 11/- एम.ओ.भेजे जावेंगे। सही उत्तरवाले नाम हम छापेंगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

बंधु त्रिपुटी का मालवा में छः रिपालित संघ और ओली आराधना श्री नागेश्वर महातीर्थ में

✻ अंतराष्ट्रीय जैन विधिकारक श्री मनोजजी हरण मार्गदर्शक प्रेरक।

नागेश्वर- जैनाचार्य अपूर्व मंगल रत्नसागरसूरीजी महाराजा के गुरुकुल के बंधु त्रिपुटीमुनि भगवंत श्री आगम-प्रशम-व्रजरत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा पालीताना में छःरिपालित यात्रा संघ एवं योग क्रिया सम्पन्न कर मालवा में पधारे यहां राजगढ़ में 10 मार्च को आपकी निश्रा में पूज्यपाद मालव भूषण गुरुदेव जैनाचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा का 80 वां जन्म दिन वरघोड़े और भव्य गुणानुवाद सभा के साथ मनाया गया। यहां से धार पधारने पर आपकी निश्रा में चैत्र वद-8 दिनांक 15 मार्च के प्रथम तीर्थाधिपति श्री आदिश्वर दादा का जन्म -दीक्षा कल्याणक विविध आयोजन और भक्ति के साथ मनाया। खाचरौद से सेमलिया श्री शांतिनाथ दादा के तीर्थ का छःरि पालित यात्रा संघ दिनांक 26 से 27 मार्च तक किया गया। इसके पूर्व प्रतापगढ़ में श्री शांतिनाथ जिन मंदिर में श्री शांतिप्रभु आदि जिनबिम्ब का मूल गंभारे में प्रवेश 17 मार्च को करवाया गया। इस अवसर पर श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ मंदिर में प्रभु के 18 अभिषेक आयोजन हुआ। यहां से आपका विहार उन्हेल के लिये हुआ यहां आपकी निश्रा में दो दिवसीय जिनेन्द्र भक्ति कर आयोजन किया गया इसके बाद आप का विहार श्री नागेश्वर महातीर्थ की ओर हुआ जहां दिनांक 29 मार्च से 6 अप्रेल तक चैत्र नवपद ओली आराधना का भव्य आयोजन किया गया। 4 अप्रेल को परमात्मा श्रीमहावीर स्वामीजी का जन्म कल्याणक भव्य वरघोड़े के साथ मनाया गया। तपस्वीयों का सम्मान किया गया। महोत्सव में साध्वी श्री सौम्यवंदना श्रीजी का सानिध्य रहा। उक्त आयोजन अंतराष्ट्रीय जैन विधि कारक शासनरत्न श्री मनोज कुमार बाबुमलजी हरण सिरोहीवाला के मार्गदर्शन और प्रेरणा से हुए। बंधु त्रिपुटी नागेश्वर से विहार इन्दौर होते हुए पिपलोन पधारे। यहां से आगर विहार किया जहां आपकी निश्रा में 16 से 24 अप्रेल तक वर्षीतप पारणा महोत्सव मनाया जायेगा। यहां से प्रतिष्ठा हेतु सुनेल पधारेगे। 29 अप्रेल से 4 मई तक प्रतिष्ठा महोत्सव आयोजित है।

पुण्य स्मृति पंचान्हिका महोत्सव

अहमदाबाद- पूज्यपाद राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्री चन्द्रानन सागरसूरीजी महाराज के सुशिष्य आचार्यदेव श्री गुणचंद्रसागरसूरीजी म.सा. के समाधि पूर्वक कालधर्म निमित्त पंचान्हिका महोत्सव जिनभक्ति एवं विविध अनुष्ठान के साथ मनाया गया। दिनांक 22 से 26 मार्च का आयोजिक महोत्सव में श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक, गुणानुवाद सभा, श्री पार्श्वपद्मावती महापूजन, श्री शक्रस्तव महाभिषेक, श्री 108 पार्श्वनाथ महापूजन का आयोजन किया गया। महोत्सव श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनमंदिर अहमदाबाद में आयोजित किया गया।

99 वीं ओली आरंभ

अहमदाबाद- मालव भूषण प.पू.आ.भ.श्री नवरत्नसागरसूरीश्वरजी महाराजा के शिष्यरत्न प.पू.मुनिश्री मोक्षरत्न सागर जी म.सा. वर्धमान तप की 99 वीं ओलीजी फाल्गुन वदी-13 (गुज. महा वद 13) शनिवार दिनांक 18 फरवरी से आरम्भ हुई है।

श्री नाकोड़ा महातीर्थ में ओली आराधना

नाकोड़ा-श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ महातीर्थ में चैत्र नवपद ओली का आयोजन पूज्य आचार्य श्री जिनोत्तम सूरीजी म.सा., आचार्य श्री विजय रविचंदसूरीजी म.सा.आदि साधु-साध्वीवृंद की अमृत निश्रा में किया गया। दिनांक 28 मार्च को उत्तर पारणा के साथ 29 मार्च से 6 अप्रेल तक आयंबिल आराधना हुई। दिनांक 7 अप्रेल को पारणा तथा आराधकों का बहुमान आयोजक परिवार श्रीमती पानीदेवी मोहनलालजी मुथा सोनवाड़िया, रमेश मुथा परिवार ने किया।

गुरुदेव श्री शांतिसूरीजी गुरुमंदिर की प्रथम वर्षगांठ मनी

बांसवाड़ा- 1008 श्री विजय शांतिसूरीजी गुरु मंदिर की प्रथम वर्षगांठ का आयोजन अंतर्राष्ट्रीय जैन विधिकारक शासन रत्न श्री मनोज कुमार बाबूमलजी हरण सिरोहीवाला के मार्गदर्शन और प्रेरणा से दिनांक 18 मार्च को किया गया। गुरु मूर्ति के पांच अभिषेक, ध्वजा, वरघोड़ा, संघ स्वामी वात्सल्य का आयोजन किया गया।

परमात्मा श्री वीर प्रभु के जन्म कल्याणक के दिन ही युवा जैनाचार्यश्री का जन्मदिन मनाया जायेगा

✻ नीमच में दीक्षा, ✻ उपाश्रय उद्‌घाटन, ✻ गुरु मंदिर प्रतिष्ठा, ✻ गुरु जन्मदिन नलखेड़ा में दीक्षा, ✻ बड़ोद में महामांगलिक के आयोजन से मालवा क्षेत्र धर्ममय बना, ✻ अनेक शासन प्रभावक कार्यों के साथ मई में दीक्षा प्रतिष्ठा के भव्य आयोजन होंगे, ✻ चार्तुमास की अनेक विनंती से भाग्यशाली संघ के नाम की घोषणा शीघ्र ही होगी। ✻ अनेक प्रांतों से चार्तुमास की विनंती मुबई में हो सकता है अगला चार्तुमास।

बड़ोद-गुजरात के बाद मालवा में आने के बाद निरंतर मालवा और राजस्थान के श्री संघों में अंजन-शलाका प्रतिष्ठा, गुरु मंदिर प्रतिष्ठा, गुरु गुणानुवाद, संयमी आत्मत् को श्री वीर प्रभु के शासन से जोड़ने के लिये दीक्षा प्रदान और महा मांगलिक के द्वारा तन-मन की शक्ति प्रदान करने वाले श्लोक मंत्रों से धर्मिष्ठों को आत्मीय शांति प्रदान करने स्व पर आत्म कल्याण के मार्ग की ओर ले जाने के शुद्ध मंगलकारी भाव के साथे परमात्मा प्रभुवीर के शासन में चार चांद लगाकर गुरु श्री नवरत्न का नाम जैन जगत में रोशन करने वाले युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. स्वयं और अपने शिष्य परिवार के साथ श्रमण जीवन का जोरदार निर्वाहन करतेरहे हैं। अब युवा जैनाचार्यश्री की अपने गुरुकुल के युवा मुनि भगवंत प.पू. मुनि श्रीकीर्तिरत्न सागरजी म. सा. ,प.पू. मुनि श्रीतीर्थ रत्नसागरजी म. सा. प.पू. मुनि श्रीउदय रत्नसागरजी म. सा. ,प.पू.मुनि श्री उत्तम रत्नसागरजी म. सा. ,प.पू.मुनि श्री उज्ज्वलरत्न सागर जी म. सा.,प.पू. मुनि श्रीप.पू. मुनि श्रीरम्यरत्न सागरजी म. सा.,प.पू. मुनिश्रीलब्धि रत्नसागरजी म. सा. मुनिश्री शौर्यरत्न सागरजी म.सा. मुनिश्री ऋषभरत्नसागरजी म.सा .मुनिश्री सिध्दरत्न सागरजी म.सा. आदि ठाणा के साथ मालवा पधार गये है। शिवगढ़ में दिनांक 17 से 22 फरवरी तक अंजन प्रतिष्ठा का आयोजन हुआ। यहां जीर्णोद्धार के उपरांत श्री शीतलनाथ प्रभु का जिनालय निर्मित हुआ है। दिनांक 19 फरवरी को शिवगढ़ में प्रभु की यादगार भव्य रथयात्रा का आयोजन हुआ। रात्री में अंजन उपरांत प्रातःकाल शुभबेला में दिनांक 22 फरवरी को प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई थी इसके साथ ही मालवा के अन्य नगरों में भी आपके प्रवास विहार के साथ विभिन्न धार्मिक आयोजन हुवे यहो से आपका आपका विहार नीमच की ओर हुआ था जहां संयमी आत्मा को दीक्षा प्रदान करने के साथ उपाश्रय का उद्‌घाटन आपकी निश्रा में हुआ। इसके बाद प्रतापगढ़ में 10 मार्च को पूज्यपाद मालव भूषण गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरी जी महाराजा के 80 वें जन्मदिन पर गुणानुवाद सभा तथा गुरु प्रतिमा की प्रतिष्ठा हुई।पोरवाल मंदिर में प्रतिष्ठा सम्पन्न करवाने के बाद यहां से उग्र विहार कर आप नलखेड़ा पधारे नलाखेड़ा में युवा जैनाचार्य श्री के प्रवेश के पूर्व युवाशिष्य मंडली के मुनि श्री उदयरत्नसागरजी, मुनि श्री उत्तमरत्न सागरजी, मुनिश्री उज्जवल रत्न सागर जी, मुनिश्री लब्धिरत्न सागरजी आदि ठाणा का प्रवेश 13 मार्च को हुआ। यहां मातृ हृदय साध्वी श्री अमितगुणा श्रीजी के गुरुकुल में साध्वी अमिपूर्णा श्रीजी आदि ठाणा के सानिध्य मुमुक्षु बहन को दीक्षित कर नूतन साध्वी सिद्मपूर्णा श्रीजी नाम दिया गया। यहां आपश्री आगर श्री संघ में धर्म प्रभावना कर बड़ोद की ओर विहार किया जहां वर्षीतप आराधकों का सम्मान महोत्सव

परम पूज्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरी जी म. सा. के आगामी संभावित आयोजनः-

✽ सूर्यनगरी जोधपुर के समीप स्थित 108 पार्श्वचंदन प्रभावती मंदिर में 108 पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमाओं की भव्य अंजनशलाका प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव- दिनांक 3 मई 2023 ।✽ हाड़ौति क्षेत्र में स्थित लोकप्रिय धर्मानुरागी राजस्थान केबिनेट मिनिस्टर श्री प्रमोद जैन भाया के द्वारा बांरा नगर में निर्मित भव्य जिनालय की प्राण प्रतिष्ठा अंजनशलाका महोत्सव में निश्रा उपस्थिति- दिनांक 23 मई 2023 ।

आयोजन के साथ 22 मार्च को महामांगलिक का आयोजन किया गया । यहां से विहार राजस्थान जोधपुर 108 पार्श्वचंदन मंदिर का प्रतिष्ठा महोत्सव 3 मई को है। दिनांक 23 मई को बांरा में अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव में निश्रा रहेगी । विहार यात्रा में अनेक श्रीसंघों ,नगरों में विविध शासन प्रभावक कार्य भी निरतंर हो रहे है। अनेक श्रीसंधों की विभिन्न प्रांतों से आगामी चार्तुमास की विनंति है। चार्तुमास के लिये विभिन्न संघों के द्वारा विनंती की गई है। इसकी घोषणा अप्रेल - मई में हो सकती है ।मुंबई में भी पुनः आगामी चार्तुमास की विनंती है ।अन्य कार्यक्रमों की रुपरेखा बन रही है।

बड़ौद में वर्षीतपाराधकों के सम्मान में पंचान्हिका महोत्सव एवं महामांगलिक का आयोजन

बड़ौद- पूज्यपाद मालव भूषण आचार्य भगवंत के द्वितीय सुशिष्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागरसूरीजी म.सा. आदि ठाणा साध्वी श्री मुक्ति प्रिया श्रीजी आदि ठाणा की अमृत निश्रा में यहां वर्षीतप आराधकों के सम्मान में पंचान्हिका महोत्सव के साथ महा मांगलिक का आयोजन 22 मार्च को किया गया । दिनांक 18 मार्च से 22 मार्च तक हुए महोत्सव में श्री पार्श्व पंच कल्याणक पूजन आदिनाथ पंच कल्याण पूजन, सामूहिक चौविस गान का आयोजन हुआ । दिनांक 20 मार्च को गुरु भगवंत साधु-साध्वी का मंगल प्रवेश हुआ । श्री सिद्धचक्र महापूजन पढ़ाई गई तथा सभी वर्षीतपाराधकों का बहुमान किया गया । दिनांक 21 मार्च को भक्तामर महापूजन पढ़ाई गई । दिनांक 22 मार्च को महामांगलिक का आयोजन किया गया।

बाल साध्वीजी ने चौविहार उपवास में लोच करवाया

उज्जैन- पूज्य साध्वीवर्या श्री कुसुमश्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी वर्या श्री चन्द्ररत्नाश्रीजी की सुशिष्या बाल साध्वी श्री ध्वनिरत्ना श्रीजी म.सा. ने चौविहार उपवास में बढ़े शांत भाव से लोच करवाकर उत्तम चारित्र का परिचय दिया ।आप को वर्तमान में 500 आयंबिल की आराधना चल रही है। साध्वीश्री चन्द्ररत्ना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का विहार राजस्थान जोधपुर की ओर हुआ है। आपका आगामी चार्तुमास जोधपुर के आसपास होने की संभावना है।

✽ बाहर की तिजोरी भले कम भरो पर आराधना करके हृदय की तिजोरी अधिक से अधिक भरो।

प्राचीन महातीर्थ मांडवगढ़ में ओली आराधना जैनाचार्य श्री अशोकसागरसूरी महाराजा की निश्रा में हुई

✽ पूज्यश्री का आगामी चार्तुमास श्रीनागेश्वर तीर्थ में होगा ।

मांडवगढ़-सिद्धचक्र आराधक समाज मार्गदर्शक पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री अशोकसागरसूरीजी महाराजा आदि ठाणा एवं साध्वीवर्या श्री शुद्धिप्रसन्न श्रीजी म.सा.आदि ठाणा की अमृत निश्रा में चैत्रमास की शाश्वत ओली आराधना का जोरदार आयोजन हुआ । मांडवगढ़ में पूज्यश्री का मंगल प्रवेश हुआ था, ओली आराधना 29 मार्च से 6 अप्रेल तक भव्य रुप से हुई। बड़ी संख्या में आराधक देश के विभिन्न प्रांतों से आराधना के लिये आये थे। तपस्या के नौ दिनों में विविध पूजन महापूजन भी पढ़ाई गई। 4 अप्रेल को परमात्मा श्री प्रभुवीर का जन्म कल्याणक पर भव्य रथयात्रा का आयोजन किया गया। सभी तपस्वीयों को आने-जाने का खर्च देने के साथ बहुमान किया गया । **पूज्यश्री का आगामी चार्तुमास श्रीनागेश्वर तीर्थ में होगा ।**

।। श्री परमात्माय नमः ।।

शेठ नगीनचंद कपुरचंद झवेरीना प्रयासथी

जीवदया फंड

श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी

सुभाष चौक, गोपीपुरा, सुरत - 1

मो.: 09825414470 / 9820078772

स्थापना वि. सं. 1962

इ.स. 1906 रजि. नं.- 1744

PAN : AAATS8024L

पैसा भेजने का पता :

प्रफुल अमीचंद झवेरी

26, खटाऊवाडी, गोरेगांवकर लेन,
सेन्ट्रल सिनेमानी पाछळ,
मुंबई - 400 004.
ऑफिस फोन : 2387 8476
मोबाईल : 98200 78772

धर्मप्रेमी सद्गृहस्थश्री, सादर प्रणाम !

जीवदया फंड संस्था सुरत के दानवीर शेठ श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी के प्रयासों के द्वारा स्थापित एक रजीस्टर्ड ट्रस्ट है। यह जीवदया फंड संस्था के द्वारा कतल के लीये जानेवाले ओर बीन उपयोगी जीवो को छुडवाकर के सुरत की पांजरापोल में भेजा जाता है। यह कार्य पीछले ११४ सालो से यह संस्था कर रही है। ओर शेठश्री के उत्तम पुण्यबल की वजह से यह कार्य के अंदर लगातार प्रतिवर्ष प्रगति हो रही है। जैसे की पीछले पांच सालो के दौरान (एप्रील - २०१४ से मार्च - २०१९) १०७९८ जीवो को छुडाया / बचाया गया है।

हमारे आंगन में आनेवाले बेझुबान जीवो को पांजरापोल के अंदर ट्रस्टीओ के द्वारा नीगरानी करके सोंपा जाता है। ओर पशु के संपूर्ण जीवनकाल तक उसको संभालकर रखा जाता है।

अनंत दया के सागर भगवान श्री महावीर प्रभु के शासन के दो स्तंभ है। अहिंसा ओर जीव के उपर मैत्री। सर्वज्ञश्री के यह संदेश को सार्थक करने के लिये दोनो का भी बहुत बडा महत्व है। जैसे की

आपके परिवार के कोई भी सभ्य का जन्मदिन
पशु परिवार के एक सभ्य को जीवनदान देकर मना सकते है।

आपके परिवार मे आये हुए शुभ लग्नोत्सव के दीन
एक पशु युगल को जीवनदान देकर उनका जीवन उत्सवमय बना सकते है।

कर्मसंयोग के कारन आई हुई बीमारी का दुःख ओर अशाता को टालने के लीये
कोई पशु को अभयदान प्रदान करके महाशाता का सुख प्रदान करे।

अपने स्वजन के मृत्यु के दुःखद समय में एक पशु को
मृत्यु के मुखमें से छुडवाने से आपश्री को सांत्वना भी प्राप्त होती है ओर आपके स्वजन की सदगति प्राप्ती की प्रार्थना भी कर सकते है।

पवित्र पर्व के धर्मोत्सव के समय एक जीवको
जीवनदान देकर पर्व उपासना को दया ओर करुणामय बनाये।

आपश्री हंमेशा के लीये तिथि का भी चयन कर सकते है। वह तिथि के दीन दान में दी गई रकम का जो ब्याज मीलता है उसमें से जीव को छुडवाया जायेगा।

यह संस्था के द्वारा एप्रील २०२० से मार्च २०२१ के एक वर्ष के समय जो की लोकडाउन था,
उस समय में कुल २५९३ जीवो को छुडवाया गया है।

आपश्री चेक या ड्राफ्ट जीवदया फंड के नाम का बनाए। रोकड रकम में भी आप योगदान दे सकते है। (आपश्री का अनमोल योगदान सुरत ओर मुंबई में उपर दिये गये पते पर भीजवा सकते है।)

आपश्री आपका योगदान हमारे बेन्क खाते के अंदर भी जमा करवा सकते है। जीसकी जानकारी नीचे दी गई है। हमारी संस्था का 80-G नंबर AAATS 8024 LF 20210 है।

Bank Name	: AXIS BANK LTD.	Bank Name	: BANK OF INDIA
A/c. Name	: JIVDAYA FUND	A/c. Name	: JIVDAYA FUND
IFSC	: UTIB0002274	IFSC	: BKID000001
A/c. No.	: 921010033621820	A/c. No.	: 00120100001219
Branch	: Charni Rd, Mumbai	Branch	: Mumbai Main Branch

जीवदया की शुभ भावना से कीये हुए कार्य से अक्षय सुख ओर मोक्षमार्ग की प्राप्ति होती है ओर नरकगति के कर्म का ओर अनेक भवो के पापो का क्षय भी जीवदया का कार्य करने से होता है। जीवदया का कार्य तीनो लोकमें श्रेष्ठ ओर सर्वोत्तम कार्य है।

दान अेज सफल जीवन

लि. ट्रस्टीगण

प्रफुल अमीचंद झवेरी
पुष्पसेनभाई पानाचंद झवेरी
विरेन्द्र नेमचंद झवेरी

नलीनभाई फकीरचंद
शरदभाई गुलाबचंद चांदावाला
उषाकांत साकेरचंद झवेरी

85 वें संयम वर्ष में 8 हजार 500 आयोजन देशभर के जैन श्री संघ में कर वर्ल्ड रिकार्ड बनेगा संयम मेरु महोत्सव 850 संधो में 85 दिवसीय आयोजन

❋ 1 अप्रेल से 24 जुन 2023 तक आयोजन ❋ पूना में 200 साधु साध्वी भगवंत के साथ भव्य चार्तुमास का आयोजन। ❋ सम्पूर्ण देश से विहार कर साधु-साध्वी पूना पहुंचेंगे। ❋ संघ हितचिंतक जैनाचार्य श्री हर्षसागरसूरीजी के प्रयास की अनुमोदना।

पूना-परम पावन जिनशासन की शान सागर समुदाय के जैन जगत में सर्वोच्च रुप से वरिष्ठतम संघ स्थविर सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति गीतार्थ मूर्घनय जिनागाम सेवी आचार्य भगवंत श्री पूज्यपाद श्री दौलत सागरसूरीजी महाराजा के 85 वर्ष संयम जीवन के पूर्ण होने पर एक वर्ष तक संयम मेरु महोत्सव में 8 हजार 500 जिनशासन प्रभावक कार्यो से वर्ल्ड रिकार्ड बनेगा ऐसा युग प्रभावक महोत्सव मनाने की भव्य तैयारियां चल रही है। आगामी चार्तुमास उपरांत अति भव्य रुप से ऐसा परम शासन प्रभावक पूज्यश्री का 85 वां विराट संयमोत्सव मनाया जायेगा। यह आयोजन आगामी चार्तुमास की पूर्णाहुति के उपरांत लगभग अक्टूबर-नवंबर 2023 मैं होने के संबंध में व्यापक विचारण चल रहा है। इसके पूर्व आपश्री की निश्रा में पूना में सागर समुदाय के लगभग 200 से अधिक गुरु भगवंतों, साधु-साध्वीजी का भव्य चार्तुमास होने के लिये व्यापाक तैयारियां पत्र व्यवहार आदि चल रहा है। चार्तुमास से जुड़ने के लिए भारत के चारों कोने से साधु-साध्वी भगवंतों 100 से 1000 किलोमीटर का विहार कर पूना पहुंचने के लिये तत्पर है। जैनत्व के इतिहास में स्वर्णाक्षरों से अंकित हो ऐसा ऐतिहासिक और भव्य चार्तुमास के साथ पूज्यपादश्री का 85 वां संयमोत्सव मनाने के भव्य संघ हित चिंतक पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री हर्षसागर सूरीजी महाराजा के मन में आया और अब वह क्रियान्वित भी होने जा रहा है। पूना के श्री संघ इस संयमोत्सव के लिये जी-जान से जुड़ रहे है और तन-मन-धन से पूर्ण समर्पित जिन शासन संरक्षण हित की भावना से जाग्रत होकर तैयारी में जुड़ गये हैं।

चार्तुमास....

❋ पूज्य आचार्य श्री राजशेखर सूरीजी म.सा. की आज्ञा से एवं आचार्य श्री रत्नाकरसूरीजी म.सा. की निश्रा में सांचोर में दिनांक 12 फरवरी को पूज्य आचार्य श्री राजरत्न सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास श्री गोठीवाला ओसवाल जैन संघ पूना में होने की घोषणा की गई है।

संघ स्थविर गच्छाधिपति की निश्रा में चैत्र नवपद ओली कोंढवा संघ में हुई

पूना-परम पावन जिनशासन की शान सागर समुदाय के जैन जगत में सर्वोच्च रुप से वरिष्ठतम संघ स्थविर सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति गीतार्थ मूर्घनय जिनागाम सेवी आचार्य भगवंत श्री पूज्यपाद श्री दौलतसागरसूरीजी महाराजा पूज्य नंदिवर्धनसागर सूरीश्वरजी म.सा. पू.आ.श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा एवं साध्वी श्री नमिवर्षाश्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में श्री देवसूर तपागच्छ महासंघ कोंठवा पूना में चैत्र नवपद ओली आराधना का आयोजन चंदालिया परिवार के द्वारा किया गया। दिनांक 29 मार्च से 6 अप्रेल तक हुए आयंबिल महोत्सव में विभिन्न पूजन, महापूजन पढ़ाई गई। सभी तपस्वीयों का बहुमान किया गया। दिनांक 4 अप्रेल श्री चरम तीर्थकर परमात्मा श्री महावीर स्वामीजी का जन्म कल्याणक भव्य रथयात्रा के साथ मनाया गया।

भगवान आये तो....

**बुद्धि में भगवान आये
तो सम्यग्ज्ञान मिले!
ह्रदय में भगवान आये
तो सम्यग्दर्शन मिले!
हाथ में (काया में) भगवान
आये तो सम्यक्चारित्र मिले!**

श्री केशरियाजी महातीर्थ में चैत्र ओली वागड़ भूषण जैनाचार्य श्री मृदुरत्नसागर सूरी जी की निश्रा में

✻ देशभर के ओली आराधकों को भावभरा आमंत्रण। ✻ ओली 29 मार्च से 6 अप्रेल तक। ✻ सभी का बहुमान होगा : प्रभुवीर का जन्म कल्याणक मनाया जायेगा। ✻ आगामी चार्तुमास कांदिवली मुंबई में होगा।

अहमदाबाद- 21 फरवरी कलि कुंड तीर्थ में आपश्री की महा मांगलिक हुई। 24-25 फरवरी अदाणी शांतिग्राम जैन देरासर अहमदाबाद मेंश्रीपरेशभाई तथा अल्केशभाई की स्मृति में श्री सिद्ध चक्र महापूजन हुई। 26 फरवरी रविवार को निर्णयनगर जैन संघ नवा वाडज अहमदाबाद में स्थिरता रही। यहां मुनि श्री ऋषभरत्नसागरजी म.सा. की बड़ी दीक्षा हुई। पूज्यश्री की 10 मार्च तक अहमदाबाद में स्थिरता है इसके बाद चैत्री ओली की आराधना श्री केशरियाजी तीर्थ में करवाने के लिये विहार किया।

श्री पाल मयणा सुन्दरी ने जिन परमात्मा के समक्ष नवपद आराधना की थी, ऐसे श्रीकेशरियाजी प्राचीन महातीर्थ में चैत्र मास की शाश्वती नवपद ओली आराधना का आयोजन केशरियाजी तीर्थ में होने जा रहा है। आराधना 29 मार्च से आरंभ होकर 6 अप्रेल को पूर्ण होगी। दिनांक 4 अप्रेल को वर्तमान शासन अधिपति श्री महावीरस्वामीजी का जन्म कल्याणक भी भव्य रुप से मनाया गया। आराधना पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्न सागरसूरीजी महाराजा के सुशिष्य आचार्य देवेश वागड़ नरेश श्री मृदुरत्न सागरसूरीजी म. सा., उपाध्याय प्रवर श्री वैराग्यरत्न सागरजी म.सा. पू. मुनिश्री मोक्षरत्न सागरजी म.सा. पू. मुनिश्री पदमरत्न सागरजी म.सा. आदि ठाणा के साथ पूज्य साध्वीवर्या श्री शशिप्रभा श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी चारुधर्मा श्रीजी म.सा. साध्वी श्री विपुलप्रज्ञा श्रीजी म.सा.आदि ठाणा की अमृत निश्रा हुई। सभी आराधकों का बहुमान किया गया।

अहमदाबाद - दादावाड़ी में पूज्य जैनाचार्य श्री मृदुरत्नसागरसूरीजी म.सा., उपाध्याय श्री वैराग्यरत्न सागरजी म.सा. एवं आयंबिल तपस्वी श्री मोक्षरत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में कलोल दादावाड़ी में त्रिदिवसीय महोत्सव के अंतर्गत नूतन उपाश्रय के लिये भूमि पूजन का आयोजन 12 से 13 मार्च तक सम्पन्न हुआ इसके साथ ही अर्हत महापूजन भी पढ़ाई गई। गुजरात के टीटोंई में गुड़ी पड़वा पर नूतन वर्ष की महा मांगलिक 22 मार्च को आचार्य श्री मृदुरत्नसागर सूरीजी के द्वारा दी गई।

उज्जैन में चैत्रमास ओली जैनाचार्यश्री वीररत्न सूरिजी और गणिवर्य आदर्शरत्नसागरजी की निश्रा में

✻ गणिवर्य श्री की निश्रा में दीक्षा भी होगी।
✻ 29 मार्च से 6 अप्रेल तक आयोजन में 400 आराधक भाग लेंगे।

उज्जैन- 2023 वर्ष के चैत्र माह में नवकार ओलीजी की आराधना जैनाचार्य श्री वीररत्नविजयजी म.सा. जो 5 फरवरी को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुवे है आप एवं गणिवर्य श्री आदर्शरत्न सागरजी म.सा. की निश्रा में होने जा रही है। ओली आराधना 29 मार्च से 6 अप्रेल तक श्री ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी खाराकुआ में होगी। आराधना में लगभग 450 आराधकों के भाग ले रहे है। आराधना हेतु जैनाचार्य श्री वीर रत्नविजयजी म.सा. एवं गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा का मंगल प्रवेश 27 मार्च को धूमधाम से हुआ।

सुव्रत उदय उपधान महोत्सव

चैन्नई- पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री उदयप्रभ सूरीश्वर जी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में चैन्नई में श्रावक से श्रमण बनने धर्म क्रिया आराधना का आयोजन होने जा रहा है। उपधान तप में प्रवेश का प्रथम मुर्हूत 23 अप्रेल 2023 को है। उपधान तप की माल दिनांक 11 जून 2023 को होगी। उपधान तप के लाभार्थी संघवी सरोज बहन कोठारी परिवार है।

पूरे मालवा प्रांत के साथ देश के अनेक संघों में मालव भूषणश्री का 80 वां जन्मोत्सव बनाया गया

✻ अनुकम्पा दान जैसे अनेक आयोजन हुए। ✻ जीवदया के आयोजन हुए। ✻ निर्धनजनों की सहायता की गई।

उज्जैन- पूज्यपाद मालव देशोद्धारक आचार्य भगवंत श्री चन्द्र सागरसूरीजी महाराजा के सुशिष्य मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्न सागर सूरीजी महाराजा का 80 वां जन्म दिन पूरे भारत वर्ष के विभिन्न श्री संघों के साथ मालवा के अधिकांश श्री संघों में विभिन्न आयोजनों के साथ मनाया गया। पूज्यपाद गुरुदेव के जन्मोत्सव पर भव्य गुणानुवाद सभा में गुरुभक्तों के द्वारा अपने संस्करण सुनाये साथ ही अनुकंपा दान, जीव दया, राशन कीट वितरण, निर्धन गरीब परिवारों की मदद जैसे अनेक आयोजन के साथ गुरुदेव की प्रतिमा के साथ वरघोड़ेके आयोजन भी हुए। गुरुदेव के जन्म स्थान राजगढ़ में बहु त्रिपुरी मुनिश्री आगम प्रशम वज्र रत्नसागरजी की निश्रा में वरघोड़े और गुणानुवाद सभा का आयोजन हुआ इसके साथ ही पूज्य गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागरजी आदि ठाणा की निश्रा में रतलाम गुणानुवाद सभा के साथ जन्मोत्सव का आयोजन किया गया। मालवा के धार, झाबुआ, आलोट, आगर, इन्दौर, चौमहला, मंदसौर, रामगंज मंडी, ताल आदि श्री संघों के साथ अन्य छोटे गांव नगर के श्री संघों ने अपने स्तर पर आयोजन किये। सभी श्री संघों में यादगार आयोजन हुए।

अयोध्यापुरम् से श्री शत्रुंजय महातीर्थ का छ:रिपालित यात्रा संघ

✻ संघ प्रयाण 6 अप्रेल, माल- 12 अप्रेल को होगी।
✻ आगामी चार्तुमास पूना निश्चित हुआ।

पालीताना- पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जितरत्नसागर सूरीजी महाराज 266 ओली आराधक श्री आचार्य श्रीचन्द्ररत्नसागरसूरीजी, मुनिश्री ज्ञानेशरत्नसागरजी मुनि श्री चैत्यरत्नसागरजी, मुनि श्री गोयम सागर जी म.सा. आदि ठाणा सूरत में दिनांक 16 मार्च को पूज्य साध्वीवर्या श्री सम्यरत्ना श्रीजी के 100 ओली पारणा तपोत्सव में निश्रा प्रदान कर पालीताना पधारे यहां साध्वीवर्या श्री कल्पज्योति श्रीजी एवं साध्वीवर्या श्री शासन ज्योतिश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में अयोध्यापुरम् से श्री सिद्धा चलजी महातीर्थ के लिये छःरि पालित यात्रा संघ का आयोजन 6 से 12 अप्रेल तक किया जायेगा। यहां से आपश्री आदि ठाणा का विहार पूना की ओर होगा। यहां आप चार्तुमास करेंगे।

वेसु में सामुहिक वर्षीतपाराधना

सूरत- आगमोद्धारक धानेरा आराधना भवन वेसु में पूज्य आचार्य श्री सागरचंद्रसागरसूरीजी म.सा. की प्रेरणा मार्गदर्शन में सामूहिक वर्षी तपाराधना की जोरदार शुरुवाद 15 मार्च 2023 को चैत्र वदी-8 से हुई, दिनांक 19 मार्च को पूज्य मैत्रीचंद सागरजी म.सा. की पुण्य स्मृति में दिनांक 19 मार्च को वर्षीतप का दूसरा बियासणा गुरुभक्त परिवार के द्वारा करवाया गया।

आचार्यश्री महासेनसूरीजी म. सा. का चार्तुमास बेंगलोर में

प.पू. दादा गुरुदेव आ.श्री लब्धि सूरीजी म. के पूज्य शंखेश्वर प्रेमी आ. महासेन सूरीजी ठाणा-4 का **वि.सं. 2079 का चार्तुमास विनंति अनेक संघों की, इसमें अक्की पेठ बेंगलोर श्री वासुपूज्य संघ की जय बुलाई गई।**

साध्वीश्री सौम्यवंदना श्रीजी का चार्तुमास

उज्जैन- सागर समुदाय की साध्वीवर्या श्री सौम्यवंदना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी पर होने की संभावना है। इस संदर्भ में दिनांक 26 जनवरी 2023 को रिंगनोद में होनेवाले दीक्षा महोत्सव में पूज्य ओली आराधक आचार्य श्री चंद्ररत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में घोषणा हुई

चार्तुमास- पूज्य आचार्य **श्री रत्नसेन सूरीश्वरजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश आषाढ़ सुदी-**10 **दिनांक** 28-6-2023 **को मुनि-सुव्रत स्वामी जैन मंदिर-निगड़ी (पूना) (महा.) में होगा।**

संघ स्थिवरश्री 14 दिसंबर को पंन्याप्रवर विरागसागरजी म.सा. को आचार्य पद कात्रज में प्रदान करेगें

पूना- परम पावन जिन शासन की शान सागर समुदाय के जैन जगत में सर्वोच्च रुप से वरिष्ठतम संघ स्थविर सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति गीतार्थ मूर्धनय जिनागाम सेवी आचार्य भगवंत श्री पूज्यपाद श्री दौलतसागरसूरीजी महाराजा पूज्य नंदिवर्धनसागर सूरीश्वरजी म.सा. पू. आ.श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा की अमृत निश्रा में दिनांक 12 मार्च को वर्धमान आगम मंदिर कात्रज में क्रांतिकारी संत पंन्यास प्रवर श्री विरागसागरजी म.सा. को आचार्य पद प्रदान करने हेतु मुहूर्त प्रदान किया गया। पूज्य पंन्यासजी को दिनांक 14 दिसंबर 2023 मगसर सूद-2 के दिन कात्रज में ही 36 गुण भण्डारी आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया जायेगा। पूज्यश्री के भक्तों ने तैयारी आरंभ कर दी है। श्री आदेश्वर जैन संघ पायधुनी में आपश्री की निश्रा में दिनांक 14 एवं 25 मार्च को श्री भक्तामर महापूजन तथा वर्षीतप आराधकों का बहुमान किया गया। पूज्य पंन्यासश्रीजी आचार्य भगवंत श्री हर्षसागरजी म.सा. के सुशिष्य है।

महाव्रत महिमा महोत्सव में वाचना प्रदान के साथ बाल मुनिश्री की बड़ी दीक्षा सम्पन्न हुई

कात्रज- विश्व विख्यात वर्धमान आगम मंदिर कात्रज में-परम पावन जिनशासन की शान सागर समुदाय के जैन जगत में सर्वोच्च रुप से वरिष्ठतम संघ स्थविर सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति गीतार्थ मूर्धनय जिनागाम सेवी आचार्य भगवंत श्री पूज्यपाद श्री दौलतसागरसूरीजी महाराजा के 85 वर्ष संयम महोत्सव के निमित्त भव्य वाचना का आयोजनपूज्य नंदिवर्धनसागर सूरीश्वरजी म.सा. भक्तियोगाचार्यश्री यशोविजय सूरीजी महाराजा,पू.आ.श्री हर्षसागर सूरीजी म.सा. आचार्य श्री राजपुण्य सूरीश्वरजी म.सा. आदि 100 से अधिक साधु-साध्वी भगवंतों की अमृत निश्रा में दिनांक 9 मार्च से वाचना का मंगल शुभारंभ हुआ । वाचना का आयोजन शताधिक संयमी आत्मन् के सम्मान में हो रहा है । दिनांक 12 मार्च को बाल मुनिराज श्री वीरभद्र सागरजी म.सा. की बड़ी दीक्षा भी सम्पन्न हुई । आप संघ हितचिंतक आचार्य देव श्री हर्षसागर सूरीजी महाराज सुशिष्य बने हैं ।

मुनिश्री विशुद्धरत्न सागरजी का हिमालय की ओर प्रयाण

उज्जैन- पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्यदेवेश श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के गुरुकुल के रत्न मुनिश्री विशुद्ध रत्नसागरजी एवं मुनिश्री समकितरत्नसागरजी म.सा. ने हिमालय की ओर प्रयाण किया है, नाम के अनुरुप शुद्ध सात्विक चारित्र का पालन करने वाले मुनिश्री एकांत में रहते हुए साधना करते रहे है, मोबाईल आदि से सम्पर्क से दूर रहने वाले मुनिश्री हिमालय के दुर्गम पर्वतों पर आराधना कर रहे है।

भीलड़ीया जैन संघ में मुमुक्षु खुशबु का प्रवज्या महोत्सव

भीलड़ीया- पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री विजय अभयदेव सूरीश्वरजी महाराजा (दहेलावाला) आदि ठाणा की अमृत निश्रा में मुमुक्षु खुशबू का प्रवज्या महोत्सव आयोजित किया गया । 10 मार्च से आरंभ हुए महोत्सव के अंतर्गत 11 मार्च को मुमुक्षु का बिदाई समारोह के साथ भव्य वर्षीदान वरघोड़ा आयोजित किया गया। महापूजन भी पढ़ाई गई। दिनांक 12 मार्च को भीलड़ीया श्री पार्श्वनाथ जैन मंदिर प्रांगण में पूज्यश्री के द्वारा शुभ मंगल मुहूर्त में खुशबू की दीक्षा विधि आरंभ हुई। दीक्षा उपकरणों के चढ़ावे अच्छे रहे ।

आचार्यश्री रत्नचंद्र सूरीजी का चार्तुमास नवसारी में

नवसारी- दक्षिण गुजरात की डायमंड नगरी नवसारी नगर की पावन धारा पर श्री महावीर नगर जैन श्री संघ एवं श्री चिंतामणी जैन श्री संघ नवसारी के तत्वावधान में वर्ष 2023 व विक्रम संवत् 2079 का चार्तुमास परम गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री राम सूरीश्वरजी म.सा. (डहेला वाला) के शिष्यरत्न परम पूज्य आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय रत्नचंद्र सूरीश्वरजी म. सा., परम पूज्य आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय उदयरत्नसूरीश्वरजी म. सा. आदि विशाल श्रमण-श्रमणीवृंद का होगा।

चार्तुमास- पूज्य पंन्यास प्रवर श्री लब्धिवल्लभविजयजी म.सा. का वर्ष 2023 का चार्तुमास ईटला जैन संघ मुंबई में होगा।

राजधानी भोपाल में राजराजेश्वरी श्री पार्श्वप्रभु का प्रतिष्ठा महोत्सव इन्द्रविहार में मनाया गया

भोपाल- यहां की इन्द्रविहार कालोनी में श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु आदि जिनबिम्ब का अष्टान्हिका प्रतिष्ठा महोत्सव आयोजित किया गया। दिनांक 5 से 12 मार्च तक आयोजित प्रतिष्ठा महोत्सव में मातृ हृदया साध्वीवर्या श्री अमितगुणा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में रही। 5 मार्च से शत्रुंजय गिरिराज की भाव यात्रा में महोत्सव का शुभारंभ हुआ। कुंभ स्थापना के साथ विविध पूजन, शक्रस्तव अभिषेक हुए। 10 मार्च को परमात्मा के 18 अभिषेक का आयोजन हुआ। 11 मार्च को प्रातःकाल शुभ लग्नांश वेला में परमात्मा प्रतिमा को प्रतिष्ठित किया गया। विजय मुर्हूत में श्री शांतिस्नात्र महापूजन पढ़ाई गई। 12 मार्च को प्रातः द्वारोद्‌घाटन के साथ महोत्सव की पूर्णाहुति हुई। सत्तरभेदी पूजन पढ़ाई गई।

निरव और अंकुर सागर श्रमण समुदाय में सम्मिलित होकर श्री वीरपथगामी बनेंगे

✻ मुंबई में दीक्षा महोत्सव 7 मई को लालबाग में होगा।

मुंबई-परम पावन जिनशासन की शान सागर समुदाय के जैन जगत में सर्वोच्च रुप से वरिष्ठतम संघ स्थविर सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति गीतार्थ मूर्धनय जिनागाम सेवी आचार्य भगवंत श्री पूज्यपाद श्री दौलत सागरसूरीजी महाराजा पूज्य नंदिवर्धन सागर सूरीश्वरजी म.सा. पू.आ.श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा की अमृत निश्रा में **युवा मुमुक्षु निरव और अंकुर** त्याग के मंगल मार्ग दीक्षा का आलंबन लेने को तत्पर बने है।संघ हितचिंतक, प्राचीन तीर्थोद्धारक पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री हर्षसागर सूरीजी महाराज के शिष्य-प्रशिष्य गुरुकुल के मुनिश्री विनीतसागरजी म.सा., मुनि श्री विनम्र सागरजी म.सा. को अपना जीवन समर्पण करेंगे। प्रवज्या 7 मई को मुबंई के लालबाग में होगी, दीक्षा महोत्सव की व्यापक तैयारियां आरंभ हो गई है। प्रवज्या महोत्सव में देशभर के धर्मिष्ठों के साथ बड़ी संख्या में श्रेष्टिवर्य, राजनेता, समाजसेवी सम्मिलित होंगे।

श्री जैन महासंघ ने जन्म कल्याणक मनाया गया

चैन्नई-सभी समुदाय का संगठन श्री जैन महासंघ जैन के नेतृत्व में वर्तमान शासनाधिपति चरम तीर्थकर परमात्मा श्री महावीरस्वामीजी का जन्म कल्याणक चैन्नई में मनाया गया। दिनांक 4 अप्रेल को एक विराट शोभायात्रा में समग्र जैन समाज सम्मिलित हुआ। धर्मसभा, प्रभातफेरी और रात्री भक्ति का आयोजन किया गया। पूज्य गच्छाधिपति श्री विजय उदयप्रभ सूरीजी म.सा. के साथ सभी समुदाय के साधु-साध्वी की निश्रा रही। सकल संघ की नवकारसी हुई।

सांसारिक जीवन छोड़ साध्वी बनेंगी सलोनी

उज्जैन- सलोनी भंडारी (27) जल्द ही सांसारिक जीवन को छोड़ दीक्षा ग्रहण कर संयम जीवन अंगीकार करेंगी। मुमुक्षु भंडारी के अनुमोदनार्थ विगत दिन ढोढ़र में वरघोड़ा निकला इसमें मुमुक्षु ने रथ में बैठकर मुक्त हाथों से वर्षीदान किया। सुबह चंद्रप्रभु जैन मंदिर से बैंडबाजों के साथ वरघोड़ा निकाला, जो विभिन्न मार्गो से होता हुआ जैन स्थानक भवन पहुंचा। यहां नवीन भवन का लोकार्पण हुआ। भंडारी ने एमबीए किया है। उनका एक भाई शुभम और बहन तनषी है। पिता विमल भंडारी सराफा व्यापारी है। भंडारी तीन साल से संतों के सानिध्य में है। 3 मई को उज्जैन में दीक्षा समारोह होगा।

चिन्तन करें:- *धर्म नदी के तट पर अनेक तीर्थ खड़े होते हैं, अनेक पंथों के घाटों का निर्माण होता है। उन घाटों के द्वारा अपनी जीविका चलाने वाले समस्त पण्डे और पुरोहित अपने अपने तीर्थ एवं घाट का महत्व एवं श्रेष्ठता गाकर ही संतुष्ट नहीं हो जाते, परन्तु वे अन्य तीर्थो तथा अन्य पंथ स्वरुप घाटों की त्रुटियां बताने में अधिक रुचि लेते हैं। वे धर्म की प्रतिष्ठा के साथ अनेक अन्य तत्वों को मिला देते हैं- जिनमें से एक तत्व तो यह है कि हमारा धर्म मूलतः शुद्ध है। यदि कोई अशुद्धि है तो वह परपंथ का आगन्तुक प्रभाव है। दूसरा तत्व यह है कि अन्य धर्म की श्रेष्ठबात को अपना प्रभाव बताना। इस प्रकार के विकारी तत्वों से लोगों का धार्मिक जीवन क्षुब्ध हो जाता है। हर पंथ अपनी सनातनता तथा शुद्धि बताने की चेष्टा करता है और अन्य धर्म के उच्च तत्वों के प्रति अपने नेत्र बंद कर लेता है।*

वचनसिद्ध जैनाचार्य श्री नरदेवसागर सूरीजी के सानिध्य में 108 से अधिक वर्षीतप आराधकों ने वर्षीतप का संकल्प लिया

✽ पूज्यश्री की प्रेरणा से डॉ. सुभाष जैन ''आगमोद्धारक'' परिवार ने वर्षीतपाराधना के मुख्य लाभार्थी बनने का सौभाग्य प्राप्त किया।

✽ एक बार फिर गुरुदेव की वचनसिद्धता सिद्ध हुई।

✽ गुरु श्री नवरत्नसागरसूरीजी के 80 वें जन्मदिन पर 80/-रुपये की प्रभावना हुई।

✽ मालवा देशोद्धारक एवं साध्वी मनोहरश्रीजी की पुण्यतिथि पर लड्डू की प्रभावना हुई। ✽ पूज्यश्री का चार्तुमास पूना में होगा।

✽ पूज्यश्री का जन्मदिन 16 अप्रेल को सिरपुर में मनाया जायेगा।

उज्जैन- पूज्यपाद वचनसिद्ध जैनाचार्य श्री नरदेवसागरसूरीजी महाराजा एवं आचार्य श्री मतिचंद्रसागर सूरीजी म.सा., आयंबिल तपाराधक मुनिराज श्री पद्मकीर्तिसागरजी म.सा. साध्वीवर्या श्री सौम्यवंदना श्रीजी म.सा.साध्वीवर्या श्री मुक्तिदर्शना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा की अमृत निश्रा में प्रथम तीर्थाधिपति परमात्मा श्री आदिश्वर दादा के जन्म और दीक्षा कल्याणक पर दादा के युग से चली आ रही तप परम्परा वर्षीतप का मंगल शुभारंभ पूज्यश्री ने करवाया। 108 से अधिक तपस्वीयों को पूज्यश्री ने वर्षीतप उच्चारवाया। पूज्यश्री की इच्छा के अनुसार 108 से अधिक तपाराधकों ने वर्षीतप आरंभ कर पूज्यश्री वचनसिद्ध को सार्थक किया। आचार्यश्री की इच्छा 108 वर्षीतप कराने की थी जो पूर्ण हुई। वर्षीतप आराधना के लिये **पूज्यश्री की प्रेरणा सेडॉ.सुभाष जैन ''आगमोद्धारक'' परिवार ने मुख्य लाभार्थी बनने का सौभाग्य प्राप्त किया।** इसके साथ ही पूज्यश्री की निश्रा में मालव भूषण गुरुदेव श्री नवरत्नसागर सूरीजी के 80 वें जन्म दिन पर 10 मार्च को भव्य गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। डॉ. सुभाष जैन आदि ने पूज्यश्री के संस्मरण सुनाये। 80/- रुपये की प्रभावना हुई इसके साथ ही दिनांक 23 मार्च को मालव देशोद्धारक आचार्य भगवंत श्री चन्द्रसागर सूरीजी महाराजा की एवं मालव देश दीपिका मालवा की प्रथम साध्वीवर्या श्री मनोहरश्रीजी म.सा.की पुण्यतिथि पर गुणानुवाद सभा हुई। पूज्य आचार्य भगवंत ने अपने पुराने स्मरण सभा को बतलाए। लड्डू की प्रभावना हुई। पूज्य जैनाचार्य श्री नरदेवसागरसूरीजी महाराजा का 83 वां जन्मदिन श्री सिरपुर जैन संघ महाराष्ट्र में मनाया जायेगा। **आपश्री का चार्तुमास पूना में निश्चित हुआ है।** आपश्री ने उज्जैन से सिरपुर की ओर पूना के लिये विहार 22 मार्च को किया।पूज्य जैनाचार्य श्री नरदेव सागरसूरीजी महाराजा के शिष्यरत्न पूज्य आचार्य भगवंत श्री चन्द्रकीर्ति सागर सूरीश्वरजी म.सा. के सुशिष्य मुनिराज श्री पद्मकीर्तिसागर जी म.सा. को वर्धमान तप की 98 वीं ओलीजी दिनांक 22 मई को पूर्ण होगी।

कालधर्म....

✽ अयोध्यापुरम् में नूतन आचार्य भगवंत श्री प्रसन्नचंदसागर सूरीजी म.सा. के सुशिष्य मुनिश्री परमचंद सागरजी म.सा. (88) का 2 मार्च को कालधर्म हो गया। आपका दीक्षा प्रयार्य 13 वर्ष रहा। 3 मार्च को पालकी निकली।

✽ राष्ट्र संत पूज्य आचार्य भगवंत श्री चन्द्राननसागर सूरीश्वरजी म.सा. के सुशिष्य आचार्य भगवंत श्री गुणचन्द्र सागर सूरीश्वरजी म.सा. का 9 मार्च को श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनागम नवरंगपुरा-अहमदाबाद में कालधर्म हो गया। 10 मार्च को आपकी पालकी निकली।

श्री वही पार्श्वनाथ तीर्थ में ओली आराधना

मंदसौर- निकटवर्ती तीर्थ श्री वही पार्श्वनाथ में इस बार चैत्र ओली आराधना का आयोजन पूज्य साध्वी वर्या श्री मोक्षज्योतिश्रीजी की निश्रा में होने जा रहा है। धारणा 28 मार्च को तथा ओली आराधना 29 मार्च से 6 अप्रल तक होगी। सभी तपस्वीयों का बहुमान किया गया।

हमारे तीज-त्यौहार

1- चैत्र सुदी-11-12-13 करने के दिन	शनि-रवि-सोम	1+2+3- अप्रेल	23 साधु-साध्वी के अचितरज काउसग्ग
2- चैत्र सुदी-13 (द्वि.)	मंगलवार	4-4-2023	परमात्मा श्री प्रभुवीर का जन्म कल्याणक (2621 वां) श्री सिमंदर स्वामी आदि 20 विहरमान प्रभु का केवलज्ञान कल्याणक
3-चैत्र सुदी-15	गुरुवार	6-4-2023	श्री सिद्धाचल की महायात्रा चैत्री पूनम नवपद ओली की पूर्णाहुति
4- वैशाख वदी-9	शुक्रवार	14-4-2023	मीनार्क कुमुर्हूर्ता समाप्त
5- वैशाख वदी-10	शनिवार	15-4-2023	श्री सीमंधर स्वामी आदि 20 विहरमान प्रभु का जन्म कल्याणक
6- वैशाख वदी-30	गुरुवार	20-4-2023	खग्रास सूर्यग्रहण (भारत में नहीं दिखेगा)
7- वैशाख सुदी-3	रविवार	23-4-2023	वर्षीतप पारणा-अक्षय तृतीया पू.पं.श्री अभ्युदयसागरजी का पंन्यास दिन
8- वैशाख सुदी-6	बुधवार	26-4-2023	पूर्व में गुरु उदय
9- वैशाख सुदी-10	रविवार	30-4-2023	श्री प्रभुवीर का केवल ज्ञान कल्याणक आगमोद्धारकश्री का आचार्यपद (सं. 1975)

पंचक :- **आरम्भः-** वैशाख वदी-10, शनिवार, दिनांक 15-4-2023 समय-18.45 बजे से
समाप्तः- वैशाख वदी-14, बुधवार, दिनांक 19-4-2023 समय-23.54 बजे तक

पुष्य नक्षत्र :- **आरम्भः-** वैशाख सुद-7, गुरुवार, दिनांक 27-4-2023 समय-07.00 बजे से
समाप्तः- वैशाख सुद-8, शुक्रवार, दिनांक 28-4-2023 समय-09.53 बजे तक

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें।

प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें।

सादर आमंत्रण

❊ पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चार्तुमास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें, ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सकें।

❊ आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

❊ पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव, मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

❊ अंक आपके तक नियमित रुप से नवीन स्वरुप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें।

- सम्पादक

वर्ष 28 | चैत्र-वैशाख | अप्रैल-2023 | अंक 4 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2021-2023

प्राप्त न होने पर कृपया लौटायें-

डॉ. सुभाष जैन (संपादक)
46, सखीपुरा, उज्जैन - 456001 (म.प्र.)
मो. 94250-91012, 8770884897
Email : subash_3333@yahoo.co.in, subhashjain@gmail.com

प्रति, बुक पोस्ट
श्रीमान् ....
....
....

स्टाम्प टिकिट

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन उज्जैन के लिये डॉ. सुभाष जैन - संपादक द्वारा प्रकाशित एवं एम.बी. ऑफसेट प्रिंटर्स, 285, एम.जी.रोड़, इन्दौर से मुद्रित। फोन : 0731-2412232, संपादक मो. 94250-91012, 8770884897